गामक आशा टुटि गेल

गामक आशा टुटि गेल

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

GAMAK ASHA TUTI GEL
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-33-0
दाम: 251/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2019)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथा-सत्तैर

गामक आशा टुटि गेल

तीन साल–तीन बैच–बिलमसँ कौलेजक परीक्षा चलैत देखि अप्पन क्लास समाप्त भेला पछाइत दरभंगासँ गाम आबि गेलौं। डेराक हिसाब-बारीक संग दोकानो-दौड़ीक हिसाब-बारी आ संगी-साथीसँ जे किताबो आ नोटोक लेन-देन छल से सभ फरिछा कऽ गाम आबि गेल छेलौं।

गाम एलाक परात भने असगरे दरबज्जाक ओसारक कोठरीमे बैसल अपन जिनगीक विचार करए लगलौं जे आगू की करैक अछि। तीन सालक पछाइत परीक्षा हएत, ताबत अपन नोकरीक आयु सेहो समाप्त भऽ जाएत। एक तँ ओहुना आइ.ए.मे एक बरख, बी.ए.मे दू बरख, नियमित परीक्षा नै भेने तीन बरख समय चलि गेल, तैपर एम.ए. करैत-करैत तीन बरख आरो चलि जाएत। उमेरक संग नोकरी सेहो चलि जाएत, किए तँ नोकरीक जे आयु निर्धारित अछि ओ पार कऽ जाएत। विचित्र स्थितिमे जीवन पड़िये गेल अछि..!

मनमे रंग-बिरंगक विचार चलिये रहल छल कि अपने मनमे उठल- 'केकरा कहबै आ के पुरौत, अपन जिनगी छी तँए अपने ने सोच-विचार करैये पड़त।' एकटा कि हमहींटा छी जे एहेन समस्यामे पड़ल छी आकि हमरा सन-सन हजारो विद्यार्थी अछि। हजारो कि जे पूरा युनिवर्सिटीए-मे सभ अछि।

एक तँ ओहुना पढ़ैमे मन नइ लगैए, किए तँ निसचित समय रहने ने नीक जकाँ–जमि कऽ–परीक्षाक तैयारी करितौं, समयपर परीक्षा होइत,

नीक जकाँ पास करितौं...। से तँ अछि नहि, आइ जे याद करब ओ किछुए दिनक पछाइत बिसैर जाएब, फेर ओहिना-क-ओहिना रहि जाएब..!

आगू दिसक रस्ता देखी तँ सेहो मरियाएले बुझि पड़ए। अखुनका तँ सहजे दू सालसँ एम.ए.क क्लास केलौं , परीक्षाक कोनो ठेकान ने अछि जे कहिया हएत कहिया नहि। तइ बीचमे जकथक भेल बैसलो रहब नीक नहियेँ हएत। कोनो गर किम्हरो देखिये ने पेब रहल छेलौं...।

ओना, पढ़ै-लिखैक नाओंपर माइयो-बाबू अखन धरि मुँह बन्ने रखने छैथ। आन जकाँ भरि दिन कहा-कही नहियेँ होइए, मुदा अपनो तँ आब सियान भेलौं, बिआहो-दुरागमन भइये गेल, जइसँ परिवार सेहो बढ़िये गेल अछि...।

विचारक धक्का जेना मनमे जोरसँ लागल। धक्का लगिते बर्खाक पानि वा खत्ता-खुत्तीक वा पोखैरक पानिमे जहिना कोनो चिड़ै नहा कऽ पाँखिक पानि झाड़िते उड़ैक उपक्रम करैए तहिना मनमे उठल जे जखन मनुखक शक्लमे छी तखन देह-हाथ मारि–निष्क्रिय बनि–जीबो तँ जीवन नहियेँ छी, तँए पहिने जीवनकेँ चिन्ह-जानि कऽ पकड़ैक अछि, नहि तँ जहिना सभ वौआइ-ढहनाइए तहिना वौआएब-ढहनाएब...।

वौआएब-ढहनाएब..! जँ स्कूल-कौलेज नइ देखने रहितौं तखन जँ वौऐतौं तँ थोड़े क्षम्य सेहो छल मुदा आइ बाइसम ब रख छी अखन तक स्कूले-कौलेजमे जीवन बीतल आ तखन जँ अपनो जीबै-जोकर लूरि-बुधि नइ भेल तइमे केकर दोख..?

मन विसाइन-विसाइन हुअ लगल। अनायास ग्लानि सेहो मनमे उपकल। ग्लानि उपैकते मन तुरुछ होइत विचार देलक जे केकरो किछु ने कहबै, खाली माए-बाबूकेँ कहबैन जे तीन साल परीक्षा होइमे देरी अछि, तैबीच एकबेर कोलकातासँ भऽ अबै छी। जँ कोनो जोगार नोकरीक

लागि गेल तँ बड़बढ़ियाँ, नहि तँ तीन बरख कहुना बितबैक अछिए। भेल तँ परीक्षा दइले छह मास कड़कड़ा कऽ मेहनत करब, पार-घाट लगिये जाएत।

मनमे कोलकाता अबिते धीरेन्द्र भायपर नजैर गेल। करीब पनरह बर्खसँ धीरेन्द्र भाय कोलकातामे रहि रहला अछि। गामसँ जहिया गेला तहियासँ आइ धरि एकोबेर गाम नहि एला। सुनै छी जे ओइठाम ओ माने कोलकातेमे धीरेन्द्र भाय, कमा-खटा कऽ जीबै-जोकर ओकाइत परिवारमे सेहो बना लेलैन आ एते विचार मनमे अखनो रखनहि छैथ जे गामक जे कियो हुनका ऐठाम जाइ छैथ तँ जहाँ धरि भऽ पबै छैन तहाँ धरि रहैयो, खाइयो-पीबैक आ नोकरियोक गर लगैबते छैथ। मन मानि गेल जे काल्हि गामसँ कोलकाताक लेल विदा भऽ जाएब। खेतसँ पिताजी आबि दरबज्जापर बैसबे केलाह कि कहलयैन-

"बाबू, परीक्षा होइमे तीन साल अखन बाँकी अछि, तँए मनमे होइए जे कलकत्ता जाइ।"

जहिना कहलयैन तहिना पिताजी चुपचाप सुनि लेलैन, मुदा लगले किछु बजला नहि। मने-मन जेना किछु सोचए-विचारए लगला आकि की से तँ ओ जानैथ मुदा कनियेँकालक पछाइत बजला-

"आब तँ तोहूँ जवान भेलह, पढ़ल-लिखल सेहो छहे, तैबीच जँ पुछलह तँ यएह ने कहबह जे अपना-ले तँ अपने ने सोचबह।"

ओना, अपना जनैत पिताजी बातक उत्तर देबामे कसैर नइ रखलैन मुदा खुलियो कऽ तँ नहियेँ कहलैन जे कोलकाता जाएब जीवनक लेल नीक हएत कि अधला। मुदा संजोग बनल, तैबीच माइयो दरबज्जापर पहुँचली।

माएकेँ देखिते मनमे भेल जखन पिताजीक आगू अपन विचार रखि चुकल छी तखन वएह ने माइयोकेँ कहथिन। मुदा लगले ईहो भेल

जँ कहीं पिताजी नहि कहथिन तखन की करब ? ओना, तैबीच अपन मुँह सोल्हन्नी बन्ने रखलौं।

जहिना अपन मुँह बन्न छल तहिना पिताजी सेहो अपन मुँह बन्ने रखने छला, जइसँ चुपा-चुपी पसरले छल। अपन चुपी तोड़ैत बजलौं-

"माए, परीक्षामे तीन बरख देरी अछि, तैबीच एक बेर कलकत्तासँ भऽ अबितौं।"

ओना, अपने इशारामे बाजल छेलौं माने ई जे 'नोकरी करए कोलकाता जाएब' आकि 'घुमि-फिरि कऽ चलि आएब' से स्पष्ट नहि छल। माए बजली-

"बौआ, समय-साल देखिते छहक जे बेकता-बेकतीक खर्च बढ़ने परिवारक खर्च केतेक बढ़ि गेल अछि, एकरा पुराएब तँ परिवारे-लोकक ने काज भेल। मुदा बेटा-बेटीक प्रति मातो-पिताक दायित्व तँ एतेक अछिए जे जीवनक एक खाड़ी–सीढ़ी–टपा कऽ छोड़ियै, माने ई जे जिनगीक चारि अवस्थामे पहिल अवस्था माने भेल जे पढ़ा-लिखा, बिआह-दान करा दिऐ। जइसँ मनमे एते बिसवास तँ बनियेँ जाइए जे अपन दायित्वक निर्वहन नीक जकाँ पूर्ति भऽ गेल।"

बजलौं-

"माए, कौलेजक पढ़ाइ ने पुरि गेल मुदा परीक्षा होइमे तीन साल समय आरो लागत, तइ बीचक जे खाली समय अछि तइमे कलकत्ता जाए चाहै छी।"

अपन जवाबदेहीक भार हटबैत माए बजली-

"अखन तँ खरिहाँनक मेहक खुट्टा जकाँ बाप जीविते छथुन, हुनकासँ पुछि लहुन।"

दुनू दिसक छिड़ियाएल विचार समटा कऽ एकठाम भऽ गेल। ओना, अपना जनैत अपनो विचार स्पष्ट नहियेँ केने छेलौं जे पढ़ाइ यक की

करब। तैबीच पिताजी बजला-

“एक-एक छन समैयक मोल अछि, तँए हरछनकेँ सही उपयोग करबे बुधिमत्ता भेल। जखने कियो बुधिमत्तासँ जिनगीक गाड़ी खिंचए लगैए तखने ओकर जिनगीक गाड़ी पटरीपर चलए लगै छइ।”

एते तँ अपनो बुझिते छी जे पढ़ाइ-लिखाइक पछाइत लोक परिवारक भरण-पोषण लेल उद्यमी बनिते अछि, तखन तँ भेल जे घरमे रहि–स्वावलम्बी जीवनक रस्ता पकैड़–भरण-पोषण करी आकि घरसँ बाहर जा कऽ...। ओना, घरो आ बाहरोक बीच दोहरी प्रश्न अछिए। पहिल ई जे गामोमे रहि लोक दोसरक नोकरी वा चाकरी करैए आ बाहरमे सेहो करिते अछि। पाँचटा महानगर देशमे मानल जाइए। तइमे कोलकाता सभसँ पुरानो आ सभसँ नम्हरो अछिए। मुदा पाँचो महानगर एक देशक महानगर रहितो पाँचो महानगरक जीवन शैली–माने मनुखकेँ जीबैक दिशा–भिन्न-भिन्न अछिए। एहेन भिन्न-भिन्न जीवन शैली पाँचो महानगरे-टाक अछि सेहो बात नहियेँ अछि, गाम-गाम, घर-घरक बीच सेहो अछिए। मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे पिताजीक स्पष्ट विचार नहि बुझि, बजलौं-

“की कहै छी। अहाँक की विचार अछि?”

‘कहैक’ माने भेल आदेश, आ ‘विचार’क माने भेल सुझाव देब। दुनू दू तरहक अछि। ..जहिना माए अपन भार हटबैत पिताजीपर थोपलैन तहिना पिताजी अपन भार समाजपर थोपैत बजला-

“बौआ, गाममे सृष्टगर लोक आनन्द भाय छैथ, ओ तोहर जेठ पित्तीए भेलखुन तँए हुनकोसँ एकबेर पुछि लहुन। अपना मनमे सभ दिनसँ अछि जे गरीबी कि अमीरी धनसँ अछि, समाजमे जेते विद्याक आगमन हएत तेते अविद्या-विद्याक बीच रग्गड़-झग्गड़ होइत बदलाव हएत, माने परिवर्त्तन हएत।”

बजलौं-

“बड़बढ़ियाँ।”

सभ दिन साँझूपहरमे आनन्द काका अपन भरि दिनक जिनगी उसारि निचेनसँ गप-सप्प करैत आबि रहला अछि। यएह सोचि गहबरिया कहाली जहिना अपन नीक होइ दुआरे दिनगरे-साँझमे डाली लगबैए तहिना अपनो मनमे भेल जे पहिलुके साँझमे गेलासँ एते तँ हेबे करत किने जे जँ गप-सप्प करैक नम्बर-सिस्टम रखने हेता तँ अगुआएल नम्बर रहत।

आनन्द कक्काक ऐठाम पहुँचलौं। आनन्द काका चाह पीब पान खाइ छला। हमरा देखिते आनन्द काका बजला-

“बौआ, पान तोँहूँ खेबह किने?”

आनन्द कक्काक बात सुनि मन सकुचा गेल। सकुचाइते विचार उठल जे चाहक जोड़ी पान छीहे, मुदा आनन्द काका जखन चाह पीब लेलैन तेकर पछाइत पहुँचलौं, तँए चाह छोड़ि पानक आग्रह केलैन तँ उचिते केलैन...।

मन पाछू दिस उनैट गेल। मनकेँ उनैटते नजैर पानपर गेल। अदौसँ पानक प्रशस्ति[1] रहल अछि, मुदा समाजक केतेक लोक पान खाइ छैथ? अखन धरि यएह ने होइत आबि रहल अछि जे समाजक किछु गनल-गुथल लोक खाइ छला, आब हुनको ऐगला पीढ़ी दाँत टुटै दुआरे आकि रंगाइ दुआरे कि की से तँ ओ बुझता, मुदा पान खाएब छोड़िये रहला अछि। ओना, अखनो मिथिलाक गाममे एहेन आचार-विचार बनले अछि जे कोनो अमल–चाह-पान, खैनी-बीड़ी, सिगरेट इत्यादि–अपनासँ श्रेष्ठजन लग शिष्टजन खाइ-पीबैसँ परहेज करिते छैथ। बजलौं-

“काका, पान नइ खाइ छी।”

ठीके, पान खाइतो नइ छी जे बजैक क्रममे सेहो बजाइये गेल,

मुदा लगले मन पलैट कहलक- फूल-फल-पानसँ अपना ऐठाम पूजा होइत आबि रहल अछि, अपनो होइए, तैठाम पान...।

पानपर सँ आनन्द काका धियान हटबैत बजला-

“बौआ! की परिवारक हाल-चाल अछि?”

निधोख बजलौं-

“काका, एम.ए.क पढ़ाइ[2] तँ सम्पन्न भऽ गेल, मुदा परीक्षा तीन साल पछुआएल अछि। तैबीच कलकत्ता जेबाक विचार भऽ रहल अछि।”

विचारक अन्तिम कड़ीकेँ कनी कपैच बजलौं। किए तँ अपनो बुझल अछिए जे बुधिमान-ले इशारा काफी। भलेँ विचारक धारमे किए ने अपन मन भँसियाइत होइन...। मुदा आनन्द काकाकेँ से नइ भेलैन। बजला-

“बौआ, गामक विकसित रूप शहर छी। अपना सभ गाममे छी जे अविकसित अवस्थामे अछि। सभ आगू बढ़ए चाहैए, वएह इच्छा भेल जीवनक विकासक लीलसा। गाम-समाजक लोकक संग शहरो-बजारक लोककेँ सदैत आगू बढ़ैक इच्छा सभकेँ रहिते अछि। तँए गामसँ शहर दिस बढ़ैक हजारो बाट अछि, तैठाम हम केना कहि सकै छिअ जे तोरा-ले कोन बाट नीक हएत। तोंहू अपना मनमे ऐ बातकेँ रखि विचार करिहह आ हमहूँ करब। परसू साँझमे दुनू गोरे विचारैत निर्णय कऽ लेब। ”

ओना, आनन्द काका अपना जनैत किछु बाँकी नहियेँ रखलैन मुदा अपना बुझि पड़ल जे जीवनक नमहर जाल काका आगूमे पसारि देलैन। परसुका समय देलैन, अपन जाइक विचार कौल्हुके बना नेने छी, तँए नीक की हएत..?

दुविधामे पहिल मनकेँ धकियबैत दोसर मन बाजल- ‘आनन्द काका मुखौटी ने किछु कहता, मुदा काल्हि जँ कलकत्ता विदा भऽ जाएब

तँ परसू साँझमे पहुँचल रहब, जेकरा ऑखियोसँ देखब आ मनोसँ विचारब।'

मनक उद्वेग–कोलकाता जेबाक इच्छा–एते उग्र भऽ गेल जे भोरके गाड़ी पकैड़ विदा भऽ गेलौं। घर सँ बाहर नोकरी करए जेबाकाल एक नोर प्राय: सभ कनै छैथ, कानबक पाछू सबहक अपन-अपन मनकमना रहै छैन, मुदा हमरा से नइ भेल। मनक उग्रतासँ विचारे भ्रमित भऽ गेल कि की, नोर बहबैक गरे ने भेटल।

दोसर दिन करीब अढ़ाइ बजे गाड़ी हाबड़ा स्टेशन पहुँचा देलक। स्टेशनसँ बाहर होइते कोलकाताक चैत मासक रौदसँ भेँट भऽ गेल। मुदा रौद-बसातक अनेरे परवाह की करब। भाड़ा-भुड़ी जोकर पाइ-कौड़ी अछिए, तँए जैठामक लक्ष्य बना विदा भेल छी, पहिने तैठाम पहुँचबाक अछि। टेम्पू पकैड़ विदा भेलौं।

तीन बच्चा–माने एक लड़की, दू लड़का–आ दू परानी मिला पाँच गोरेक परिवार धीरेन्द्र भायकेँ छैन। टेम्पूसँ हमहूँ पहुँचलौं आ धीरेन्द्र भाय सेहो ऑफिससँ पहुँचला। घामे-पसीने तर-बत्तर भेल। चीन-पहचीनक दोहरी बाट अछि, जँ चेहरा-मोहरासँ चिन्ह गेला तैयो बड़बढ़ियाँ आ जँ से नइ चिन्हलैन तँ अपन गाम-घरक परिचय देबैन। मुदा से सभ, किछु ने भेल। बगए-वाणिसँ आकि चेहरा-मोहरासँ धीरेन्द्र भाय चिन्हलैन कि की से ओ जानैथ मुदा नजैर पड़िते बजला-

"चलू भीतर चलू।"

आगू गेट खोलैत बाजल छला, तैबीच अपनो गोड़ लागब पछुआएले छल, किए तँ टेम्पूबलाक भाड़ा दइमे ओझरा गेल छेलौं। तहूमे तेहेन विसाइन बात टेम्पूबला बाजल जे कहैसँ...। 'भिखमंगा देशक' कहि देने छल टेम्पूबला, तइसँ मनक विसविसी उठले छल।

टेम्पूबलाकेँ विदा करैत बजलौं - "भाय गोड़ लगै छी।"

तइ बीचमे अनुमानसँ, माने गामक हालक दौड़ान जे मनमे एकटा गाम पैदा होइए, तइसँ धीरेन्द्र भाय चिन्ह नेने छला।

बैठकखानामे पहुँचते धीरेन्द्र भाय पहिने पंखा सबहक बटन दबा कऽ हवा केलैन आ नलपर जाइसँ पहिनहि पुछलैन-

“बौआ! गामक अखन की स्थिति अछि?”

अखन तक अपनो स्थिति बुझैक अवगैत अपने नइ भेल अछि, तैठाम गामक स्थिति बुझब धिया-पुताक खेल थोड़े छी। मुदा संजोग बनल, भौजी पहिने पानि दऽ गेली पछाइत चाह-बिस्कुट सेहो दऽ गेली। आन दिनसँ कनी बेसीए भूख अपनो लगिये गेल छल। मन शान्त भेल। बजलौं-

“धीरेन्द्र भाय, अहाँ ऐठाम गृह बना गृहबासू भऽ गेलिऐ..!”

अपने जखन अपन विचार दिस तकै छी तँ सोझ बात बुझि पड़ैए। कोलकाता वा बाहर केतौ- गृह बनला पछाइत गृहबासू लोक बनियेँ जाइए। रहब नइ रहब ओ अलग अछि। ..‘गृहबासू’ सुनि धीरेन्द्र भाइक मन पानि जकाँ द्रवित भऽ गेलैन। बजला-

“बौआ, गाममे जखन गृहविहीन भऽ गेलौं तखन केतौ -ने-केतौ गृह बना जीवन-जापन करबेक अछि किने।”

धीरेन्द्र भाइक हृदयक बात जेना अपनो हृदयमे पैस गेल। जहिना नीक विचार मनमे पैसने नीक जीवन दइए तहिना ने अधलो विचार पैसने अधला जीवन दइते अछि। अपने मन मानि गेल, धीरेन्द्र भाइक विचारकेँ सोल्होअने टा किए कहबैन। मुदा अपने ई नइ बुझल छल जे धीरेन्द्र भाय गाममे गृहविहीन भेला केना..! मनक वेगमे बजा गेल-

“भाय, गाममे केना गृहविहीन भेलिऐ?”

संजोग एहेन बनि गेल छल जे पाँचो परानी धीरेन्द्र भाय छला। दुनू परानी–माने धीरेन्द्रो भाय आ भौजियो–क आँखिमे नोर ढबढबा गेलैन।

दुनू परानीक आँखिमे ढबढ़बाएल नोर देखि अपनो मन अपने धिकारए लगल जे एहेन बात किए बजलौं। मुदा लगले मन शान्त भऽ गेल आ विचार उठल जे जाधैर किनको दुखक कारण नइ बुझब ताधैर बुझब की भेल। रेडियो-अखबारमे सदैतकाल देखिते-सुनिते रहै छी, फल्लाँठाम एते लोक मुइल आ चिल्लाँठाम एते लोक ठनका तरमे पड़ल आकि धारमे डुमल। तइसँ कोनो विचारक बीज नइ ने उगत..!

उस्सर खेतक बीआ जकाँ अंकुरक अंकुरे किए ने सुखि जाए मुदा अंकुरण शक्ति तँ अपन चालि पकैड़ चलबे करैए।

हमर बात सुनि धीरेन्द्र भाय धड़फड़ेला नहि, पत्नीकेँ कहलखिन-

“गामक अभ्यागतक अभ्यागती आब अहाँ सबहक भेल। अखन दूठाम काज करब बाँकी अछि , पछाइत निचेनसँ भरि राति गामक गप-सप्प करैत रहब।”

अनका जकाँ अपना नइ भेल, माने ई जे धीरेन्द्र भाय अपने अभ्यागतीक सीमाक उल्लंघन केलैन अछि, तँए अपन अपमान भेल। जिज्ञासा जगल जे चारि-चारि घन्टा ड्यूटी पूरा कऽ एला अछि आ दूठाम आरो बाँकी छैन! मन ठमकल तँए चुपे रहलौं।

चाह पीब धीरेन्द्र भाय चलि गेला। भौजीकेँ पुछलयैन- “भाय साहैबक आमदनी केहेन छैन?”

जेना सोचल-विचारल उत्तर भौजीक मनमे छेलैन तहिना बजली-

“खटनीक हिसाबसँ आमदनी कम छैन मुदा परिवार तँ तेहीपर ने ठाढ़ अछि। अपन चारि कोठरीक मकानो बना लेलौं। रोजी -रोजगार-ले तँ कलकत्ता सन शहर छीहे।”

विचारक आवेगमे बजलौं- “नीक लगैए?”

हमर बातकेँ मजाकमे उड़बैत भौजी बजली- “तरुआ-तरकारीटा खाएब बिसैर गेलौं बाँकी सबकिछु नीके अछि। ताबे अहाँ बच्चा सबहक

संग खेलाउ। हम भानस करए जाइ छी।"

आठ बजे साँझ, दुनू भैयारी एकठाम बैस गामक गप शुरू केलौं। धीरेन्द्र भाइक मनमे जेना पहिलुके नम्बरमे पहिलुका बात मनमे गड़ल छेलैन तहिना बजला-

"बौआ, तूँ तँ अखन धरि कौलेज तकक शिक्षा लेल जिनगी बितौलह अछि।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"हँ।"

धीरेन्द्र भाय बजला-

"अपन पंचायतिक चौहद्दी बुझल छह?"

झुठे केना कहितिऐन जे बुझल अछि , कहलयैन-

"नइ!"

धीरेन्द्र भाय बजला-

"हमरो आ तोरो- दुनू गोरेक घर एक्के पंचायतमे अछि। हमर कोसी धारसँ लग पड़ैए, तोहर बेसी हटल छह माने उपरारि दिस छह। सत-सत बेर कोसी धारमे बाढ़ि अबितो छल आ अखनो अबैए जइसँ समुच्चा गाम आठ-दस मास धरि पानिमे जलोदीप रहए लगल, तखन की करितौं?"

कोनो उत्तर नहि सुझि, मन मारि बजलौं-

"भाय साहैब, चिड़ैयो जखन गाछपर चारिटा ठौहरीक घर बना जीवन गुदस कइये लइए, तखन तँ..!"

❑ *शब्द संख्या : 2338, तिथि : 24 जुलाई 2019*

आब इज्जत नइ बँचत

भुमकमक घर जहिना जापान छी तहिना बाढ़िक घर मिथिलांचल सेहो छीहे। मिथिलांचलक पुबरिया छोर माने पूबक सीमासँ पछबरिया छोरक पच्छिमक सीमाक बीच उत्तरे-दछिने बीस-पचीसटा धार अछि।

धारक तीन रूप अछि। पहिल जे बारहो मास बहैए, दोसर जे अखाढ़-सौनसँ बहब शुरू करैए आ अगहन-पूस धरि बन्न होइए आ किछु धार सोल्होअना मरने भेने पानिक आमदनीपर बहबो करैए आ नइ भेने नहियोँ बहैए। खाएर जे अछि से अछिए, सभ दिनसँ अबैत रहल अछि आ आगुओ रहबे करत।

जहिना ऋृषि-मुनीक जीवन रहलैन अछि तहिना धारो सबहक अछिए। विश्वकर्मा, विश्वामित्र सन जहिना रिसियाह ऋृषि भेला तहिना कमला-कोसी सन रिसियाह धार सेहो अछिए। तँए कहब जे सभ धारे आकि ऋृषिये-मुनी सभ एक्के रंग भेला सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। वाल्मीकि, गौतम जहिना शान्त सोभावक शान्तचित्त ऋृषि भेला तहिना वागमती आ बिहुल सेहो अछिए। वागमती तँ गौतम जकाँ शान्तचित्त जीवन-यापन अखनो धरि कइये रहल अछि, जँ से नइ कऽ रहल अछि तँ सी.एम. कौलेजक विद्यार्थी रहै छैथ धारक पछबरिया महारक छात्रावासमे आ सभ दिन पढ़ए अबै छैथ पुबरिया महारक कौलेजमे...। मुदा बलान तँ से नइ छी, करवनो कमलाक संग मिलि गामक-गामकेँ उजाड़ि लगबैए तँ करवनो भुतहीक संग भूत बनि गामक-गामककेँ

बलुआह सेहो बनैबते अछि...।

ऐ सालक पहिल बाढ़िक आइ एकैसम दिन छी। गाम अखनो पानिसँ झलैक रहल अछि आ आमक गाछीक आमक गाछ सभ अपन बगवारकैं सोर पाड़ि-पाड़ि बाजिये रहल अछि जे भाय, अनरनेबा, दारीम, नेबोक संग कटहर, मुनगा, शीशो तँ अपन प्राण तियाग करबे केलक, ऐगला नम्बरमे हमहीं सभ छी, तँए...।

मुदा के सुनत ओइ गाछ-वृक्षक बात। आ जँ सुनबो करत तँ कइये की सकैए..?

गामक रूप अखनो ओहने अछि जहिना मरुभूमि इलाकामे कोसक-कोस चमकैत दोखरा बाउलपर गोटि-पङ्गरा झाड़-झुड़क गाछ जकाँ गोटि-पङ्गरा घरो-ऑगन देखि पड़ैत तहिना अपनो गामक दशा बनल अछि। पाँच कोस सुखल माटिक बाटपर चलैमे जेते थकान होइए ओत्ते कोस भरि पानिक बीच चललासँ हुऐए लगल अछि। गामक सभ बान्ह-सड़कपर ठेहुनसँ ऊपर पानि चढ़ि गेल अछि।

भिनसुरका समय, करीब सात बजैत रहइ। चाह पीब अढ़ाइहत्थी हाथमे लेलौं आ गाम दिस विदा भेलौं। दरबज्जापर सँ निच्चाँ उतैरते रही कि मनमे उठल जे दिनमे एकबेर जरूर सौंसे गाम–सौंसे गामक माने भेल जेमहर-जेमहर लोक बसल अछि तेमहर-तेमहर–टहलै छी, मुदा अखन तक दुखबा काका ऐठाम नइ गेलौं अछि।

ओना, दुखबो कक्काक घर गामक लागियेमे छैन मुदा बीचमे टोल आ दुखबा कक्काक घरक बीच एकटा पतरकी धार बहने गामसँ दुखबा काका कटल छैथ। ओना, धार पतरकिये छी मुदा ऐ बेरक बाढ़ि ओइ धारकैं तेहेन मुँह-कान बना देलक जे गामक सम्बन्धे तोड़ि देलक।

रस्तापर अबिते मने-मन हियबए लगलौं। एकटा डेंगी नाह सिंगहार आ भैंट-मलकोका तोड़ैले रूपलाल रखने अछि। अगम पानिक धारमे

अखनो अगम पानि अछिए। बिनु नाहे ओइ पार माने दुखबा काका ऐठाम नहियेँ जा सकै छी...।

जहिना जगरनथिया यात्री गामे-गाम चलैत, गीत गबैत, भीख मंगैत जगरनाथ पहुँचिये जाइए तहिना रूपलाल ऐठाम विदा भेलौं।

ओना, नाहक प्रति रूपलाल झनकाह लोक अछि, केकरो अपन नाहपर चढ़ैक कोन बात जे छुबौ ने दइए, मुदा बाढ़िमे जखन विषधर गहुमनो[3] मरै डरे अपन बीखो बिसैर विषहर बनि जाइए.., तहिना बाढ़ि ऐला पछाइत ऐबेर रूपलालोक भेल।

देखिते रूपलाल बाजल-

"भाय साहैब! एते बाढ़ि आएल मुदा अहाँ कहियो डेंगी नाहपर झिलहोरि नइ खेलेलौं!"

ओना, बाढ़िमे झिलहोरि खेलब सुनि देह भुटुक गेल माने डरे, मुदा मनमे कमो-कम आशा तँ बनले छल जे रूपलाल झिलहोरि खेलेनिहार छी, जे संगी भेल। बजलौं-

"आइ तेही भाँजमे आएल छी। चलह कने दुखबा कक्काक भेँट करयैन।"

डेंगी नाहपर पतरकी धार पार करैत दुखबा काका ऐठाम पहुँचलौं। दुखबा कक्काक चिन्ता देखि समोह लगि गेल..!

एक दिस देखिऐन घर-अँगनामे पानि भरल छैन आ दोसर दिस खुट्टापर चारिटा गाए-महींस सेहो छैन। गहुमक भुसी पानिमे सड़ि गेलैन, नारक टाल भँसिया गेलैन, घासक खेतमे भरि छाती पानि लगि गेने ऊहो सभटा गलिये गेलैन। मुदा तैयो दुखबा काका अपन जिनगीकेँ समेट एक विचारक बाट पकैड़ बटोही बनि जीवन यात्रा कइये रहल छैथ।

डेंगी नाहसँ उतैर हम दुखबा कक्काक दरबज्जापर गेलौं आ रूपलाल नाहकेँ सम्हारि एकटा खुट्टामे बान्हलक। घरो-अँगनामे पानिक वेग चलिये

रहल छेलइ। ओना, दरबज्जाक ऊपरमे पानि नहि छेलैन, मुदा गठुला आ भुसकाँर[4] देने पानि बहिते छेलैन। अँगनाक मुँह बान्हि, अँगनो आ अँगनाक चारू घरो बँचौने छला...।

मुहसँ किछु ने बजलौं, किए तँ एहेन समयमे केहेन प्रणाम-पाती हेबा चाही से नइ बुझल छल तँए दुनू हाथ जोड़ि चुपे-चाप प्रणाम केलिऐन। मुदा बाह रे दुखबा काका ! अपन मुँहक हँसीसँ हमरो हँसबैक कोशिश भरपूर कइये रहल छला। अधखिल्लू फूल जकाँ अधखिलल हँसी हँसैत बजला-

"बौआ! घर-अँगना, बाल-बच्चा बँचल छह किने?"

दुखबा कक्काक गतिसँ अपन गति कनी नीक अछि , तैपर सँ दुखबे काका आरो नीकक कामना करैत बाजल छला, तँए मनक तसल्ली आरो सक्कत भेल। कहलयैन-

"काका, परिवारक की कहब जे गामक कोन बात परोपट्टे एकबट भेल अछि। केते लोकक जान गेबो कएल अछि आ जाइयो-जाइयोपर अछिए। तैठाम जेहेन गतिक जीवन हेबा चाही तइमे नीक छी।"

हमरा मुँहक 'नीक' सुनि आकि अपन विचारधाराक प्रवाहक नीक बुझि दुखबा काका बजै छला से नहि बुझि पेब रहल छेलौं। किए तँ एते अपनो बुझले अछि जे दुखबा कक्काक जेहने खेती -बाड़ी सघन छैन तेहने परिवारो सघन छैन्हे, तैठाम जँ एहेन समयमे अपनाकेँ सुरक्षित रखने छैथ ई बलिहारी तँ छैन्हे। बीस-बाइस गोरेक ओहन परिवार दुखबा कक्काक छैन जइमे छह मासक बच्चासँ अस्सी बर्खक बुढ़ माए तक छैन्हे।

दुखबा काका बजला-

"बौआ, चाह नइ पीयेबह! घरमे ने चाह पत्ती अछि आ ने चीनी।"

दुखबा कक्काक बात सुनि अधेपर सँ विचारकेँ रोकैत बजलौं -

"काका, चाह पीबिये कऽ विदा भेल छेलौं, तँए चाह-ताहक

लटारम छोड़ि दियौ। किछु बुझै-सीखैले एलौं हेन।”

हमर बात सुनिते दुखबा कक्काक नजैर जेना परिवार दिस बढ़ि गेलैन। बजला-

“जहिना रंग-रंगक परिवारो अछि–जनसंख्याक हिसाबे–तहिना रंग-रंगक समस्यो तँ अछिए। कहैले बाढ़ि आएल जे सभ बुझैए, मुदा सभकेँ एक्केरंग तबाहियो आ बेरबादियो थोड़े भेल अछि।”

ओना, अपने अखन तक यएह बुझै छेलौं जे बाढ़ि आएल, खेतक जजात दहाएल, केते लोकक घरो खसल आ अन-पानि सेहो दहेबो कएल आ सड़बो कएल अछि। मुदा, दुखबा कक्काक बिटियाएल बात सुनि मन चौंकल। चौंकल ई जे खुदरा[5] समस्या तँ छी नहि जे कियो केकरो मददगारो हएत, ऐठाम तँ सामूहिक समस्या अछि, तहूमे सबहक एकरंग सेहो नहियेँ अछि...।

अपनाकेँ निरुत्तर बुझि बजलौं -

“काका, अपने तँ चारिमपन देखि रहल छी, तँए जेते..?”

ओना, बजलौं लाभरे-जीभर माने जी दाबिये कऽ, मुदा दुखबा काका बुझि गेला। जहिना राजा हुअ कि रंक सभकेँ ‘अ-आ’सँ अक्षरार्जन होइए, तहिना ओ बिटिया कऽ बिटगरहा सुनबैत बजला-

“देश स्वतंत्र भेला पछाइत कोसीक पहिल उनाड़ी[6] 1954 ई.मे भेल। जइबेर रस्ताकातमे माने जैठाम-जैठाम पानिक खसान भेल तैठाम-तैठाम मोइन फुटि गेल। खाली रस्ते कातटा मे नहि, जै-जैठाम ऊँचगरपर सँ पाइनिक वेगक खसान भेल, तै-तैठाम मोइन फुटल। इलाकामे हजारो मोइन फुटि गेल।”

दुखबा कक्काक बात सुनि देह भुटभुटाएल, मुहसँ अनायास निकलल-

“बाप रे..!”

जहिना आश्चर्यजनक सभ किछु लोककेँ आश्चर्जित करैए तहिना भेल, जे दुखबा काका बुझि गेला।

जहिना एक विचारक पछाइत दोहरा कऽ कियो दोसर विचार सोझामे रखैए तहिना दुखबा काका बजला-

“देशक आजादीक दौड़ शुरू भऽ गेल छल। अंग्रेजी शासन द्वारा केतेको गाम जरौलो जा चुकल छल आ जरौलो जाइ छल, केतेको देशभक्त गोलीक शिकार भऽ चुकल छला आ शिकारी बनि शिकार बनैले तैयार सेहो छला, केतेको दशभक्त जहलोमे छला आ जहल जाइयो-ले तैयार छला, केतेको देशभक्त कालापानीक सजा भोगैले गेलो छला आ जाइयो-ले तैयार छला। केते मातृभूमि सिनेही देशभक्त फाँसियोपर चढ़ि चुकल छला आ चढ़ैले (फाँसीपर) कफन बान्हि तैयारो छला... ।”

दुखबा कक्काक बात सुनि मनमे जेना कोनो शक्तिक आगमन भेल तहिना बुझि पड़ल। सम-विषमक बीच मन जेना थकथका गेल। बजलौं-

“कठिन परिस्थिति रहल हएत..!”

ओना, जेते बात दुखबा कक्काक मुहेँ सुनने छलौं तइ आधारपर बाजल छेलौं, मुदा दुखबा कक्काक नजैरमे आरो -आरो समस्या नाचि रहल छेलैन। बजला-

“बौआ, अपना मिथिलांचलमे दू साल, तीन सालपर साल-दूसालक रौदी तँ सब दिनसँ होइते आबि रहल अछि, तँए ऐठामक वासी रौदी झेलैक अभ्यस्त तँ भइये गेल छैथ। 1942 इस्वीमे बंगालक जे अकाल भेल ओ तँ देशे नहि, बुझहक जे दुनियाँकेँ हिला देने छल। लाखो लोक अन्न-पानि बेतरे मरल छला।”

तैबीच श्यामा काकी–दुखबा कक्काक पत्नी–आँगनसँ निकैल दरबज्जापर पहुँचली। काकीकेँ देखिते बजलौं- “काकी! सतासी इस्वीमे

जेहेन बाढ़ि आएल छल तेहने बाढ़ि अहूबेर आएल अछि..!"

अपना जनैत श्यामा काकीसँ बुझए चाहै छेलौं जे हुनकर अनुभव की छैन। मुदा काकी किछु नहि बाजि सोझे मुड़ी डोला मानि लेलैन।

1987 इस्वीक बाढ़िक नाओं सुनिते दुखबा काका बाजए लगला-

"बौआ, एक बाढ़िक प्रभाव केते पड़ैए?"

दुखबा कक्काक बात सुनि मन ठर्रा गेल जे जैठाम गाम -गामक खेती मरा जाइए, घर-दुआर खसि पड़ैए, माल-जाल दहेबो-भँसिएबो करैए आ मरबो करैए, गाछ-बिरीछ सुखबो करैए आ भँसबो करैए तैठाम किछु बाजब कठिन तँ अछिए। मुदा जँ किछु बाजब नहि तखन अपनो मनक हिसाब केना बुझि सकब। आ जखन अपनो मनक हिसाब नहि बुझि पएब तखन अनकर केना बुझबै? ओना, बाजबो भरिगर अछिए, किएक तँ अन्दाजसँ बाजब आ हिसाब जोड़ि कऽ बाजब, दू रंग हेबे करत। तैयो बजलौं-

"बहुत प्रभाव पड़ल, काका..!"

दुखबा काका बजला- ""बहुत' कहने आकि 'कम' कहने कोनो प्रश्नक उत्तर नइ भेल। भेल एतबे जे कम-बेसीक खाली अन्दाज भेल। ओना, सोल्होअना ठीक-ठीक उत्तर ताकब कठिन अछिए मुदा... ।"

'मुदा' कहि दुखबा काकाकेँ रूकिते बजलौं -

"काका, अपने प्रौढ अनुभवी लोक भेलिऐ, अपने लोकनिक अन्दाजो बहुत हद तक सही हेबे करत। कम अनुभवी वा अनाड़ी-धुनाड़ीक अन्दाजमे ने अन्तर हएत।"

मुड़ी डोलबैत दुखबा काका बजला -

"हँ! से तँ हेबे करत। मुदा एक-एक डारि-पातक विचार जँ अनाड़ियो-धुनाड़ी करत तँ ओ अनुभविये जकाँ बहुत हद तक सही हेबे

करत किने।"

दुखबा कक्काक विचार मनमे जँचल, बजलौं- "डारि-पातकेँ केना बुझब जे आमक गाछक डारिक बीचमे जामुनक गाछक डारि अछि वा जामुनक गाछक डारि-पातक बीच आमक डारि-पात अछि?"

मुस्की दैत विचारकेँ स्वीकारैत दुखबा काका बजला -

"बौआ, जेहेन बाढ़ि अपना सभकेँ अछि एहेन बाढ़िक प्रभाव कमसँ कम पाँच बरख पड़त, तैबीच जँ दोहरा गेल माने दोहरा कऽ एहने बाढ़ि आबि गेल, तेकर हिसाब छोड़ि कऽ, साल भरिक पछाइत ओइ परिवारक भोजन पैछला स्थितिक बराबरीमे औत, किए तँ अन्नक उपजक अपन सीमो आ समैयो अछिए।"

दुखबा कक्काक विचार मनमे तेना गरल जे विसविसा उठल। विसविसाइक कारण भेल जे अखन तक अपने ई बात किए ने बुझै छेलौं..! बजलौं-

"काका, हमरा सन लोककेँ पुरैमे तहूसँ बेसी समय लागत। किएक तँ पोखरिक सभ माछ भँसि गेल। महारे ठीक करैमे छह माससँ बेसी समय लागत। तैपर अण्डासँ जीरा[7] आ जीरासँ खेबा-जोकर बढ़ैमे साल टपिये जाएत।"

दुखबा काका बजला -

"अपना ऐठामक लोक घर बनबैक अभ्यस्त भऽ गेल छैथ, साले-साल जँ नहियोँ बनौता तँ छारबो जरूरे करता। तँए दू सालमे घरक ओरियान भऽ सकैए।"

दुखबा कक्काक विचार खाली जँचबे नइ कएल, मनमे चुभि सेहो गेल। तैबीच दुखबा कक्काक दुनू बेटी दरबज्जापर पहुँचली। दुनू तरा-ऊपरी। तरा-ऊपरी भेल जे उमेरसँ पैघ आ शरीरक काँतिक हिसाबसँ छोट, आ उमेरसँ छोट जँ काँतिक हिसाबसँ पैघ भेल। दुनू बेटी दिस

इशारा करैत दुखबा काका बजला- "तोंही कहह जे एहेन स्थितिमे की करबै? तीन सालसँ बिआह करैले औना रहल छी, तैबीच एहेन समस्या भेल अछि..!"

बेटी-बिआहक चर्च सुनि श्यामा काकी बजली-

"हमरा सन-सन लोकक इज्जत आब नइ बँचत।"

बजैत-बजैत श्यामा काकीक आँखि नोरसँ ढबढबा गेलैन, आँचरसँ आँखिक नोर पोछि हमरापर सँ नजैर उठा दुखबा काकापर देलखि न।

पत्नीक नजैर मिलिते दुखबा काका जेना हुनक मातृ सिनेह पढ़ि लेलैन तहिना बजला-

"पुरुख-नारीक बीच जे सृजनशक्ति[8] अछि ओइ शक्तिक संजोग स्वरुप विवाहक बन्धन समाजमे कल्याणकारी नियमक रूपमे प्रचलित भेल जेकरा..!"

ओना, दुखबा कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं मुदा जेतबे बुझलौं तइमे इज्जतक प्रश्न केतौ ने बुझि पड़ल। प्रा कृतिक सामान्य नियम बुझि पड़ल, जे मनुखक सृष्टिक एक प्रक्रिया भेल। जे अखन तक बुझि नहि पेने छेलौं।

नव विचार मनमे जगिते नव-नव विचारक अनेको पोनगी मनमे उठए लगल। वैवाहिक सम्बन्धमे गाम-समाजक नजैर आ प्राकृतिक नियमक नजैरमे अन्तर बुझि पड़ए लगल। बजलौं -

"काका, अपने जे कहलिऐ से आ समाजक चलैनमे जे अछि तइ दुनूमे तँ..?"

हमर विचार सोल्होअना जेना दुखबा काका मानि लेलैन तहिना विचारकेँ आगू बढ़बैत बजला- "बौआ, हमर-तोहर माने मनुखक जे क्रमिक विकास अछि ओ कहैक ढंग बेढंग अछि, किए तँ जखन परिवार आ वंशक हिसाबसँ तकबहक तखन जे सिरा भेटतह ओ मनुखक क्रमिक

विकाससँ अन्तर रखैए।”

दुखबा कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं, मुदा मनमे बुझैक जिज्ञासा तेतेक उग्र भऽ गेल जे अपने मुहेँ बजा गेल-

“से केना काका?”

दुखबा काका बजला-

“परिवार आ वंशक हिसाब आगू दिस बढ़ैक, माने जेतेपर पहुँचल अछि, तइसँ आगूक अछि आ बेकतीक हिसाब जन्मसँ मृत्यु धरिक अछि। माने अपने आपमे पूर्ण अछि।”

दुखबा कक्काक बात कनी-मनी बुझबो केलौं आ कनी-मनी नहियोँ बुझलौं मुदा तइ बिच्चेमे रूपलाल बाजल-

“सुशील भाय, एकटा माछबलाकेँ माछ पहुँचेबाक समय भऽ गेल।”

अपन विचारकेँ विसर्जन करैत दुखबा काका बजला -

“बौआ, बेटी-बिआहक जे समस्या अपना ऐठाम अछि, जेकरा इज्जत मानल जाइए, ओइ इज्जतकेँ बनबैक रस्तामे अनेको विघ्न-बाधा समाज स्वयं ठाढ़ केने अछि, ओना परिस्थिति सेहो सहयोगी बनल अछिए। अखन तोहूँ जाह। रूपलालकेँ दोसरठाम जेबाक छइ। समय भेटत ते दोसर दिन आगूक विचार करब।”

❑ *शब्द संख्या : 2046, तिथि : 28 जुलाई 2019*

अँगनाक बीरार

नीन टुटि गेल छल मुदा ओछाइनपर पड़ले रही। ओछाइनपर पड़ल रहैक कारण छेलए काजक अभाव। ओना, किसानी जिनगी अछि तँए काजक अभाव कहियो ने होइए, मुदा बाढ़ि एने से भऽ गेल।

ओछाइनपर पड़ले-पड़ल मने-मन विचारए लगलौं जे बाढ़िक आइ पचीसम दिन छी, दस दिनसँ पानि घटि रहल अछि मुदा जइ रफ्तारमे आन सालक बाढ़िक पानि घटै छल तइ रफ्तारमे ऐबेर नहियेँ घटि रहल अछि। आन साल जेना हूहूआ कऽ बाढ़ि अबै छल आ गामकेँ धोइ-पोछि तेसर दिनसँ पानि घटए लगै छल आ आठ-दस दिन बीतैत-बीतैत पानि अपन ठौर पकैड़ लइ छल, से ऐबेर नहि भऽ रहल अछि।

पानि घटैक रफ्तार बहुत धीमी अछि। माने कोनो दिन एक-दू इंच घटैए आ कोनो दिन नहियोँ घटैए। कम रफ्तारमे बाढ़िक पानि घटैक कारण भेल अछि गाम-गाममे बान्ह-सड़क हएब। ओना, बान्ह-सड़क भेनौं जँ पानिक बहाव[9] समुचित बनल रहैत तैयो पानि गतिमान रहैत मुदा से नइ भेने एहेन समस्या उपस्थित भेल अछि।

पड़ले-पड़ल माने ओछाइनेपर विचारलौं जे बाढ़िक बीच जगरनाथ भायसँ भेँट एकोदिन ने भेल, तँए आइ हुनकेसँ भेँट करब।

जगरनाथ भायपर नजैर पड़िते केतेको विचार मनमे उठए लगल। मनमे रंग-रंगक विचार उठैक कारण भेल जे जगरनाथ भाय गाममे सभसँ सचरगर लोक छैथ, तँए हुनकासँ विचार-विमर्श करब जिनगीक लेल

हितकर हेबे करत। अहुना अखन बाढ़िये आएल अछि जे सभ बुझिते छी एहेन परिस्थितिमे गहुमनो सन-सन विषधर साँप, मरैक डरसँ सज्जन भइये गेल अछि। मुदा से नहि, जगरनाथ भायकेँ अपन धारणानुकूल जीवन छैन, से बाढ़ि सन बिपैत रहौ वा नइ रहौ, सभ दिन किछु-ने-किछु नव चीज बुझै-करैक जिज्ञासा रहिते छैन जइसँ विचारमे एते परिपक्वता आबिये गेल छैन जे अपनो परिवार आ समाजोक जीवनकेँ हँसैत चलबक दिशा-बोधे नहि, चलितो बेवहारमे सएह छैन। जइसँ अनहितोकेँ हिते जकाँ बुझै छैथ।

जगरनाथ भायसँ भेँट करैक जिज्ञासा मनमे जेना तेजी आनि देलक जइसँ देहोमे तेजी आबि गेल। लगले पर-पैखानासँ निवृत्त होइत मुँह-हाथ धोइ कऽ चाह बनेलौं। चाह पीबिते-पीबिते जगरनाथ भाइक प्रति चाह बहुत बेसी बढ़ि गेल। हाँइ-हाँइ कऽ चाह पीलौं आ ज गरनाथ भायसँ भेँट करए विदा भेलौं।

जगरनाथ भाय घरेपर रहैथ। पहुँचते देखलयैन जे धड़फड़-धड़फड़ कऽ रहला अछि। जेना केते काज एक संग आबि गेल होनि तहिना धड़फड़ी देखलयैन।

अपना दिस हिया कऽ देखी तँ बुझि पड़ए जे कोनो काजे ने अछि, निठल्ला जकाँ खाइ बेरमे खाइ छी, सुतै बेरमे सुतै छी आ भरि दिन गप लड़बै छी। मुदा तइमे अपन कोन दोख। सभ देखै छी जे पचीस दिनसँ बाढ़ि गामक कोन बात जे परोपट्टेकेँ घेरने अछि, जइसँ खेतो-पथार घेरा गेल अछि, एकटा गाए अछि, दू परानी सेवा केनिहार छी। भेल तँ एकबेर भरि नादि गहुमक भूसी आ चोकर मिला कऽ खाइले दऽ दइ छिऐ दुपहर तक निचेन रहै छी। बाढ़ि एने घास दहा गेल तँए नइ खुआबै छी, सएह ने..!

जगरनाथ भाइक धड़फड़ी देखि बजलौं- “भाय, केतौ उजैहिया चढ़ल अछि जे टौहकी-पहटा भँजियबैक भाँजमे धड़फड़ करै छी?”

जगरनाथ भायकेँ जेना ठोरेपर उत्तर तैयार रहैन तहिना बजला-

"हँ।"

की जानि अपने बाजल छेलौं आ की जानि जगरनाथ भाय उत्तर देलैन से उत्तर-दच्छिनक भाँजे ने बुझि पेलौं। मुदा संजोग बनल। जगरनाथे भाय दोहरा कऽ बजला-

"मनोहर, परिवारक की स्थिति छह?"

बजलौं-

"भाय, की कहब! जखन गामेक दशा एहने अछि तखन की अपने ओइसँ कात छी जे दोसर तरहक स्थिति रहत। जेहने सबहक तेहने ने अपनो परिवारक अछि।"

अपना जनैत सोझ-साझ बात बाजल छेलौं, मुदा जगरनाथ भाय तइ बीचमे घुच्ची खुनि बजला-

"मनोहर! ओना, गाममे धनरोपनी दससँ बारह प्रतिशत जमीनमे भेल छल, मुदा बीरार तँ सोल्होअना तैयार भइये गेल रहए। तइ बिच्चेमे बाढ़ि आएल आ धोइ-पोछि कऽ लऽ गेल। सहए ने?"

बजलौं-

"हँ।"

जगरनाथ भाय बजला- "जखन बाढ़ि आबि गेल, देखबे करै छहक जे केते घर-दुआर खसल, बान्ह-सड़क टुटल, माल-जालक कोन बात जे लोको डुमि-डुमि मरल, मुदा अपना सभ तँ जीवित मनुखक रूपमे ठाढ़ छेबे करहक किने, तखन..?"

जगरनाथ भाइक विचारमे बहि गेलौं। ब जा गेल-

"तखन की?"

जगरनाथ भाय बजला- "जे दुनियाँ पानिमे बहल आ कि हवामे

उड़ियाएल ओ तँ चलि गेल, आब जे बँचल अछि तहीमे ने अपनो सभ छिऐ?"

बजलौं- "हँ, से तँ छेबे करिऐ!"

ओना, जखने जगरनाथ भाइक दरबज्जापर पहुँचलौं तखने खरिहाँन[10] बीच बीत भरि-भरिक धानक बीआ देखलयैन। मुदा से देखि कऽ मनेमे रखलौं। केना नइ रखितौं, अपनो दुआर-दरबज्जाक आगू खेत-खरिहाँन अछिए, कहाँ अछि..! बाढ़ि आएल मुदा पाँचे दिनक पछाइत ने अँगना-घरक पानि आ बाड़ी-झाड़ीक पानि निच्चाँ उतैर गेल...।

हमर जोशाएल बात सुनि आकि ओ अपन जोशाएल विचार विचारि बजला से ओ जनता मुदा बजला-

"जखन मनुखक रूपमे धरतीपर जन्म लेलौं तखन धरतियोकेँ किए ने अपन जग-मगाइत रूप–चेहरा–देखा दिऐ.!"

जगरनाथ भाइक विचार सोल्होअना नइ बुझि पेलौं मुदा अन्तिम बात 'धरतीकेँ जग-मगाइत रूप देखा दिऐ' तइमे मन घुरिया गेल। जहिना कोनो लत्तीकेँ ओकर अपने सूँघ मुड़ीकेँ पकैड़ मुड़िया दइ छै जे पछाइत पहिलुका मुड़ीक बढ़ैक दिशाकेँ घुरमौड़ करैत दिशो बदैल दइ छै तहिना अपनो मनमे भेल। जइसँ चित्त असथिर जकाँ बनियेँ रहल छल कि जगरनाथ भाय उठा-पटकक भाषामे बजला- "मनोहर, अखन बातकेँ बतंगर बनबैक समय अपना सबहक नहि अछि।"

आगूक बात जगरनाथ भाइक पेटेमे छेलैन आकि रसे-रसे ऊपर अबैत कण्ठे लग छेलैन, तैबीच अपने बजा गेल-

"से समय तँ नहियेँ अछि।"

अपन विचारक ऐगला कड़ीकेँ जोड़ैत जगरनाथ भाय बजला-

"मनोहर! समयक गति तीन रंगक अछि, सुसमय, समय आ कुसमय। जहिना समय तीन रंगक अछि तहिना अपनो सबहक माने

मनुखक दिन तीन रंगक अछि सुदिन, दिन आ कुदिन।"

ओना, जगरनाथ भाइक विचार कनी-कनी बुझबो करै छेलौं आ कनी-मनी नहियौं बुझै छेलौं, मुदा महराइ गबैयाक पलगाँइ जकाँ हूँहकारी भरैत बजलौं- "हँ से तँ अछिए..!"

जेना अखड़ाहापर खलीफा एक पेतरासँ दोसर पेतरा आँखिक सोझेमे पकैड़ लैत तहिना पेतरा बदलैत जगरनाथ भाय बजला- "मनोहर, यएह छी जीवन आ जीवनक बाटमे बाधा।"

जेना माथमे पाथरक चोट लगने मन झनैक उठैए तहिना जगरनाथ भाइक विचारसँ मन झनैकते चौंक गेल। मुदा किछु बजैत किछु बनि नहि पेब देखि रहल छेलौं। जँ जीवनक बाटक बाधा बुझैत रहितौं तँ बाधाकेँ अबै किए दैतिऐ जे राक्षस जकाँ विकराल रूप बना छातीपर बैसल अछि..! मन जेना हरहरा कऽ निच्चाँ उतरए लगल। बजलौं- "तखन की करबै भाय?"

जगरनाथ भायकेँ जेना कोनो रसाएल फल भेट गेल होनि तहिना बजला- "मनोहर! गाममे बाढ़ि आएल अछि, बाढ़िमे लोक दहेबो-भँसियोबे करिते अछि, मुदा जे जिवनी मछबार सभ अछि ओ तँ ओही भँसियाएल माछकेँ ने छानि-छानि टौहकी भरैए।"

जगरनाथ भाइक सोझ-साझ बात सुनि कऽ सुहकारि बजलौं-

"हँ, से तँ भरिते अछि।"

विचारक सह पेब जगरनाथ भाय अपन जीवनमे कुदैत बजला-

"मनोहर, आगू–खरिहाँन–मे देखै छहक जे धानक रोपाउ बीआ अछि। आब आँगन चलह, आँगनोमे देखि लहक जे अहूसँ नीक बीआ अछि..!"

जगरनाथ भाइक अद्भुत काज देखि अपनो मनमे भेल जे जगरनाथ भाइक मनमे जीबैक जेते आशा छैन तेते की अपनो अछि? मुदा से अपने

बुझि किए ने पेलौं? हारल जीवनक निआशामे आस भरैत बजलौं-

“भाय साहैब, अगुरवारे[11] अपने बुझि केना गेलिऐ?”

जगरनाथ भाय बजला-

“देखिते छहक जे गाममे सभ किसान चौरी छोड़ि बाँकी खेतमे गरमा धान करैए। ओना, गरमा धान करब हाल-सालमे शुरू भेल अछि, तइसँ पहिने सोल्होअना अगहनीए धान होइ छल।”

जगरनाथ भाइक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं जे अगहनी धान आ गरमा धानमे अन्तर की सभ अछि। देखै छी जे चौरी खेतमे किसान बन्धु खेरहीक संग धानो बाउग करै छैथ, जे अगहनमे होइए...।

कनी-मनी भक खुजल। बजलौं-

“माघक इजोरियाक पंचमी दिन सरस्वती पूजा होइए, जइ दिन किसान-बन्धु हरक जोत शुरू करै छैथ, जेकरा हर ठाढ़ करब सेहो कहल जाइए, तहियेसँ अगहनी धानक खेती शुरू होइए, जे आठ मास दस मासक खेती भेल। जखन कि पैंतालीस दिनक तीन पखिया धान सेहो कहल जाइए।”

जगरनाथ भाय विचारक पाशा फेर बदललैन। बजला-

“जखन बाढ़िक पानिमे पाँच दिन बीआकेँ डुमना भऽ गेल, तखन मन झमाड़ि कऽ कहलक जे आब गरमा धानक बीआ नइ बँचत। जँ बँचबो करत आ नव सिरासँ सेवो कएल जाएत, तैयो ओकर रोपैक समय पाछू पड़ि जाएत, माने रोपैमे देरी भऽ जाएत, जइसँ उपजमे कमी औत।”

मन अकैछ गेल, बजलौं-

“भाय साहैब, दुनियाँदारीक बात छोड़ू, जानए जअ आ जानए जत्ता। अपन जीबैक उपाय ने करब।”

जगरनाथ भायकेँ जेना अपन बात बजैले मन लुसफुसाइत रहल

होनि जे समय पेबिते बजला-

“मनोहर! बाढ़िक पाँचम दिन, माने खेत डुमल छल, तखन अपने मन कहलक जे ऐबेर एक मास पहिनहि बाढ़ि आबि गेल अछि, गरमा धानक बीआ पाड़ैक समय अखनो बँचल अछि। अपना जँ एक्को डाँटक आशा बना लेब माने किछुओ धान रोपि लेब तँ ओ अपन बाँहि-बलक आशा भेबे कएल किने।”

जगरनाथ भाइक विचारमे भँसि गेलौं, तँए बजा गेल-

“हँ, से तँ अछिए, मुदा..!”

‘मुदा’ मुहसँ निकलला पछाइत अपना विचारकेँ चेतैत बजलौं-

“अपना गाम सभमे ने दहार भेल, उत्तरभर–माने सिरा दिस गामसँ उत्तर–तँ बीरार[12] बँचले अछि। किए तँ ओमहर बाढ़िसँ नोकसान नहि भेल। एते जे कुटुम-कुटमारे जोड़ने छी से कहिया-ले..!”

अपना जनैत बेवहारिक बात बाजल छेलौं, किए तँ एहेन साले-साल होइए जे एक गामसँ दोसर गाम बीआ-बाइल जाइते अछि, मुदा जगरनाथ भायकेँ से नीक नहि बुझि पड़लैन। नीक नइ बुझैक कारण भेलैन जे चाहे ओ, माने धानक गाछ रूप बीआ, कुटुमे ऐठामसँ किए ने आनी, मुदा हुनकर तँ खेतेक उपज भेलैन, जइ उपजबैमे खेतक संग-संग समयो लगलैन आ खरचो तँ भेबे कएल छैन, तखन मदैत स्वरुप–मंगनीमे–लेब केते उचित हएत? तइ संग आरो-आरो विचार मनमे फुटि-फुटि ऊपर आबए लगलैन। एक तँ धानक बीआ जे अपने बीत भरिसँ हाथ भरि-भरिक अछि, तइमे जानसँ ऊपर सिर सेहो अछि, जे माटिमे रहने माटिसँ दोस्ती करैत अपन देहमे साटने रहैए, तेते भारी बीआकेँ एक गामसँ दोसर गाम लऽ जाएब भरिगर अछिए। एक्के काज जँ हलुको बनि चलै आ भारियो बनि चलै तइमे कैबिलती यएह ने भेल जे हलुक बाट पकैड़ चली। मुदा तहूसँ भारी आफत ई अछि जे तीनसँ पाँच हजार रूपये

बीरार सँ पाँच कट्ठासँ दस कट्ठा खेतक रोपनी होइए।

एक कट्ठा खेत रोपैमे कम-सँ-कम तीन सइयक बीआ, तैसंग बीआ उखाड़ैसँ लऽ कऽ गाम तक अनैमे खर्च, तैसंग खेतक तैयारी, तैयारीक पछाइत रोपैन-खाद इत्यादिक खर्च जोड़ि उपजसँ बेसी लगता भेल की नहि?

एक कट्ठामे धान केते हएत। किसान फार्म सबहक उपज बेसी अछि, गाम-घरक उपज कम अछि। मुदा तैबीचमे एकटा आरो बात तँ अछिए जे एक कट्ठा खेती करैमे माने खेत जोतैसँ लऽ कऽ उपज तैयार करै धरिक बीच समय केते लागल अछि?

जगरनाथ भाय बजला-

"मनोहर, बहुत बात तँ बजैक अखन समय नहि अछि मुदा बेर एलासँ बाजै पड़ैए।"

थोड़ेकाल अँटैक जगरनाथ भाय फेर बजला-

"जहिना दुनियाँ अथाह अछि तहिना अपन जीवनो आ जीबैक ढंगो अथाह अछि, तैबीच अपने केहेन बनि जीब रहल छी, यएह भेल जीवन!"

जगरनाथ भाय धाराप्रवाह बाजि रहल छला मुदा अपने किछु बुझि नहि पेब रहल छेलौं, जइसँ चेहरासँ हवाइ उड़ए लगल। जे जगरनाथ भाय बुझि गेला। अखड़ाहापर दाॅवगीर खलीफा जहिना अपन जोड़ीकेँ हाथ मिलैबते तौल लइए जे एहेन जोड़ी-ले केहेन दाॅवक प्रयोग करी, ओहने दाॅवकेँ भँजियबैत जगरनाथ भाय बजला-

"मनोहर, आइ बीस दिन बीआ पाड़ना भेल अछि, अखुनका धानक बीआ जेठुआ बीआ नइ ने छी जे हालक[13] अभावमे तिलौर भऽ जाएत, माने अधा-छिधा जनमबो करत आ जनमला पछाइत सुखबो करत। आ तैपर रौदक दुआरे बढ़बारि सेहो कम होइ इ। अखन तँ

आँगुरपर गनि लाए जे एक कट्ठा खेतमे केते गब लागत, एकटा गबमे कैकटा गाछ देब। एक किलो धानक दाना केते होइए, तइ हिसाबसँ जएह जमीन ओइ-जोकर अछि तइमे बीआ पाड़ि अपना बले जीबैक आशा हेबा चाही।"

जगरनाथ भाइक विचार सुनि अपनो मनमे जागए लगल जे जगरनाथ भाय जीवनोपयोगी बात कहि रहला अछि। हमरो तँ आँगनो आ खरिहाँनो अछि, जखन जीवनक आशा बाढ़िमे टुटि रहल अछि, तखन जँ ओकरा जोड़ैक परियास अपने नइ करब तँ के केकर करत। देनिहार एक लेनिहार हजार हाथ अछिए...।

हार-जीतक बीच अपनाकेँ देखि जगरनाथ भायकेँ छींटा-कशी करैत कहलयैन-

"भाय, गोटी लाल देखै छी तँए मखड़ै छी..!"

❑ *शब्द संख्या : 1856, तिथि : 31 जुलाई 2019*

भेँट-घाँट

बीस दिनसँ मुँगालाल भेँट नहि भेल छल तँए मन उबियाए लगल। मुँगालालो आ अपनो एक्के चटसार परहक लोक छी। माने ई जे जहिना अपने तहिना मुँगालालोकेँ घर-परिवारक कोनो चिन्ता-फिकिर नहियेँ जकाँ अछि। बेर खसिते दुनू गोरे नककट्टा स्थानपर पहुँच भाँग -गाजाँ करैत रहै छी।

आइ भोरेसँ मन जेना मुँगालालेपर लटैक गेल जे सभ दिन एकठाम रहनिहार मुँगालाल अछि, बाढ़िक समय छी जइसँ गामक कोन बात जे परोपट्टे अस्त-व्यस्त भऽ गेल अछि। अस्तो-व्यस्त केना ने रहत, बाढ़िक बीस दिनक पछातियो पानि ओहिना गामकेँ घेरनौं अछि आ डुबौनौं अछिए।

आन सालक बाढ़िसँ ऐ बेरक बाढ़िमे एते अन्तर तँ अछिए जे आन साल जे बाढ़ि अबै छल तँ एक दिन-राति–चौबीस घन्टा–पानि सिरचढ़ रहै छल, माने बारह घन्टा धरि पानि चढ़ै छल आ बारह घन्टाक पछाइत उतरए–माने घटए–लगै छल से ऐबेर नहि भेल अछि। तेकर कारण पानिक बहाव रूकि गेल अछि सेहो बात नहियेँ अछि। पानिक बहाव सेहो अछिए।

ओना, पानिक[14] आमदनी सेहो आन सालसँ बेसीए अछि आ दोसर ऊँचगर-ऊँचगर पक्की सड़क बनने पानि घेरेबो कएल अछि जइसँ गाम जहिना पानिसँ भरल तहिना अखनो भरले अछि। केते सम्पैत नष्ट

भेल तेकर ठेकान नहि। तहिना केते माल-जाल भँसियोकऽ मरल आ खाइयो बेतरे मरिये रहल अछि। पानियोंकेँ जेना जिद्द लगि गेल छै, जहिना धार-धुर होइत बाढ़ि अछि, तहिना दिन-राति बरखा सेहो झहैरते अछि! नाको-दम भेल छी..!

कोनो आफद-असमानी एने जहिना सभ अपन-अपन लागि-भागिक लोको आ वस्तुओ-जातक तकतियान करैए तहिना अपनो मन मुँगालालपर पहुँच गेल। दिन-रातिक चौबीस घन्टामे सात-आठ घन्टा दुनू गोरे एकठाम बैस भाँगो-गाँजा पीबैत रहलौं आ घर-परिवारसँ लऽ कऽ देशो-दुनियाँक गपो-सप्प सभ दिन करिते छेलौं। मन नइ मानलक , मुँगालालसँ भेँट करए विदा भेलौं।

रस्तापर अबिते मनमे आगू-पाछू दुनू बाट सुझए लगल। सूझल ई जे जखन मुँगालालसँ भेँट करए विदा भेलौं तखन तँ वएह भेँट ने नीक जइमे जिज्ञासा-बात हुअए... । तँए, अखनेसँ जिज्ञासा करैत रस्तामे बढ़ी। जे कियो भेटता तिनकासँ मुँगालालक विषयमे भाँज लगबैत आगू बढ़ब नीक।

विचारक एकटा मन तैयार भऽ गेल जे यएह नीक हएत, माने अखनेसँ मुँगालालक भाँज बुझैत-बुझैत बढ़ी जइसँ घरपर वा केतौ आनेठाम जँ मुँगालाल हएत तँ भाँज लगि गेल रहत तँ पहुँचलापर भेँट हेबे करत।

मुदा लगले मनक विचार ओइ विचारकेँ रोकि कहलक जे 'रे बुड़िवान! मुँगालालकेँ गामक कोन बात जे परोपट्टाक लोक जनैए जे नेपाली गाँजो बेचैए आ पीबो करिते अछि। जइसँ समाजक नजैरमे मुँगालाल खसल लोक अछि!' मुदा अपने तँ से नहि छी, गामक सभ नीक लोक बुझिते अछि, तैठाम अनकर बदनामी अपन सिर अजस लेब, नीक काज नहियेँ भेल। भलेँ मुँगालालेक संग प्रतिदिन सात-आठ घन्टा समय किए ने बितैत हुअए, मुदा संग रहनौं ओहन बदनामी तँ अपन नहियेँ

अछि।

सभ बुझिते अछि जे गामक एकटा रामायणी अपनो छीहे। रामायणी- माने रामायणक ओ जानकार लोक जे रामायणपर प्रवचन करै छैथ। प्रवचन करै छैथ कि सुवचन करै छैथ आकि दुर्वचन करै छैथ , ई दीगर भेल।

एक घाटक घटवारकेँ जहिना ओइ घाट परहक एक्के रंगक विचार मनमे उठै छै तहिना अपने जकाँ मुँगालालोक मनमे उठि गेल छल जे बीस दिनसँ माने जहियासँ बाढ़ि आएल तहियासँ अपना सन लोककेँ लक्ष्मी दहिन भऽ गेल छैथ, तँए दिन-राति झोड़ाएल माछसँ लऽ कऽ तराएल माछ धरिक मुँह-फेर केनहि छी...।

बीस दिनसँ भेँट नहि भेने जहिना अपन तहिना मुँगालालोक मन कच्छर कटै छेलै, तँए ओहो अढ़ाइ-तीन किलोक एकटा माछ नेने घरपर पहुँच गेल। माने हमरा ऐठाम। दुनू गोरेक घर दू टोलमे अछि , दुनू टोलक बीच नककट्टा स्थान अछि, जैठाम दुनू गोरे बैसार बनौने छी।

जहिना गामक रस्तासँ मुँगालाल ऐठाम हम जाइत रही तहिना बाधक रस्तासँ खेते-खेत, पानियेँ-पानि मुँगालालो हमरा ऐठाम आबि रहल छल।

मुँगालालक ऐठाम पहुँचते बुझि पड़ल जे बमैया करखन्ना जकाँ ओ करखन्ना बैसा लेलक अछि। एक दिस जाल सुखैत, तँ दोसर दिस कियो टोहकी-पहटा बनबैत तँ कियो बाँसक कैमची-बत्ती सेहो बना रहल छल। मुँगालालक पत्नी ऑगनसँ दरबज्जा धरिक काजक पाछू नाको -दम..!

मुँगालालक परिवारक रूप-रंग देखि किछु फुरिये ने रहल छल। जँ बाढ़िक खिचड़ीक केम्प रहैत आकि नगद-नारायणियेक रहैत तँ ओकर रूप-रंग दोसर रहैत। जँ कहीं आनो देशक वा आन राज्यक कोनो सहयोगी रहैत तँ अपन रंगक लोको सभ रहैत, सेहो ने देखि पेब रहल छेलौं। किछु फुरिये ने रहल छल। तहूमे जँ मुँगालाल अपने रहैत तखन तँ

रस-पानि सेहो हेबे करैत, मुदा सेहो ने अछि...।

केकरो जे किछु पुछबो करबै से तँ सभ अपने ताले बेताल अछि, माने सभ अपना काजमे लागल अछि, कियो गप करबो करत की नहि..!

मनमे ईहो हुअए जे जखन मुँगालालसँ भेँट करए एलौं आ भेँटक कोन बात जे जीबैए कि मरैए सेहो भाँज जँ नहि बुझि लेब से केहेन हएत..? एकटा टौहकी बनौनिहारसँ पुछलिऐ-

"मुँगालालसँ भेँट केना हएत?"

टौहकी बनौनिहार बाजल-

"मुँगालालक कोनो ठेकान नहि अछि जे अखन केतए भेटत।"

बजलौं-

"जखन मुँगालाल आबए तँ कहि देबै जे अहाँकेँ तकैले एक गोरे आएल छला। ओ अपन नाम सिंहेश्वर कहलैन। "

'बड़बढ़िया' कहि टौहकी बीननिहार अपन काजमे माने टौहकी बीनैमे लगि गेल। हमहूँ अचताइत-पचताइत विदा भेलौं।

मुँगालाल सेहो हमर खोज करैत हमरा पत्नीकेँ माछ दैत कहलकैन-

"सिंहेश्वर भायकेँ कहि देबैन जे मुँगालाल आएल छल।"

मुँगालालो अपना घर दिस बढ़ल आ अपनो घुमि कऽ घर दिस विदा भेलौं। एक्के रस्ता रहने, पच्छिमसँ हम अबैत रही आ पूबसँ मुँगालाल, नककट्टा स्थान लग अबिते दुनू गोरेक भेँट भेल।

हारलो-थकला बाद जहिना कोनो काज भऽ गेने हरल-थकलक सभ बेथा हेरा जाइए तहिना मनमे भेल। तँए, किए कहितिऐ जे मुँगालाल तोरे ऐठाम गेल छेलौं।

आगूमे मुँगालालकेँ देखिते बजलौं-

"मुँगालाल, एहेन दुर्काल समयमे भेँटो -घाँट बिसैर गेलह..!"

गप-सप्प करैमे मुँगालाल रसगरो आ पीच्छरो लोक अछिए। जहिना हम कहलिऐ जे ‘भेँटो-घाँट करब बिसैर गेलह’ तहिना ओहो बाजल-

“मनसँ केतौ बिसैर जाइ! मुदा तनसँ तँ लोक एहेन गरुगर समयमे अछि जे ठनका जकाँ अपना माथपर हाथ राखत आकि अनका ताकि-ताकि राखत।”

मुँगालालक विचार अपनो मनमे जँचल जे मुँगालाल ठीके कहलक। जखन एकटा रोगी घरमे रहत वा गामेमे एक गोरेपर कोनो आपैत-बिपैत औत तखन ने परिवारेक आन-आन वा गामेक आन-आन मदैत–सेवा–करत मुदा जखन परिवारेक सभ समांग बीमार भऽ जाएत आकि गामेमे सभ कियोक-ऊपर सामूहिक बिपैत आबि जाएत तखन तँ अपने-अपने रक्षा करब ने उचित..! बजलौं-

“हँ, से तँ सभ अपने माथपर हाथ राखत, मुदा बिपैत टरि गेलापर तँ एक-दोसरक खोज-भाँज करबे करत किने?”

मुँगालालक आमदनियोँ आ कारोबारो बाढ़िक बीच एते बढ़ि गेल छेलै जे मन खुशीसँ खुशीलाल बनि गेल छेलै आ अपन एहेन स्थिति दुखसँ भऽ गेल अछि जे दुखीलाल भऽ गेल छी।

जैठाम रस्तापर ठाढ़ भऽ दुनू गोरे गप -सप्प करैत रही ओ सभ दिनक चिन्हल रस्ता अछिए, किए तँ नककट्टा स्थानक आगूएक छी। कृष्ण-सुदामाक बीच जहिना गप-सप्प भेलैन तहिना मुँगालाल बाजल-

“सिंहेश्वर भाय! बड़ीकालसँ अपनो ने चीलम पीलौं हेन आ दुनू गोरेक बीच बहुत दिनक पछुआएल सेहो अछिए, तँए स्थानेपर चलू। गपो-सप्प–माने कुशलो-छेम–होइत रहतै आ चीलमो चलत।”

कहलिऐ-

“बड़बढ़ियाँ, चलह।”

दुनू गोरे स्थानक मण्डपमे पहुँचलौं। स्थानक नाओं सोझहे 'नककट्टा स्थान' छी। एकटा महंथ- 'नकेसर दास'टा रहै छैथ। दरबज्जा जकाँ एकटा घर अछि, जेकरा सभ मण्डप कहै छैथ। सालमे एकबेर ओइमे मण्डप[15] रखि चौबीस घन्टाक रामधुन कीर्तन होइए।

नकेसर दास सम्मिलित रूपेँ दुनू गोरेकेँ देखिते कहलैन- "बाढ़िमे बढ़वारि आएल आकि घटवारि आएल?"

भाय! खग जानए खगक भाषा। एक चटसारपर बैस तीनू गोरे सत-सत-अठ-अठ घन्टा चीलमो पीबै छी, खेबो-पीबो करिते छी आ गपो-सप्प तँ अपनासँ लऽ कऽ देश-दुनियाँ धरिक करिते छी।

मुँगालालक जिनगीमे केतेको गुणा बढ़वारि आबि गेल, मुदा अपन तँ ओहन स्थिति भऽ गेल जे ऐगला काज सेहो बाधित हएत माने बाल-बच्चाकेँ पढ़ाएब-लिखाएब आ बर-बेमारीक इलाज कराएब आदि पाथरक पहाड़ जकाँ ढेरी आजुक जिनगीक आगूमे ठाढ़ भइये गेल अछि। तँए मनकेँ नइ खसबक कोनो विकल्पो तँ नहियेँ अछि..! मुदा भरिसक मुँगालालक जिनगी दोसर बाट पकैड़ सुदामा जकाँ साहस बान्हि कृष्णसँ भेँट करैत अपन व्रह्मचर्य आश्रमकेँ–माने संग-संग विद्याध्ययनकेँ–मोन पाड़ि रहल छेलइ। अगुआ कऽ मुँगालाल बाजल-

"नकेसर भाय! जेहेन बाढ़ि ऐबेरक आएल तेना जँ साले-साल अबैत रहत तँ सुदामा जकाँ कि हमरो कृष्णक महल पबैमे देरी थोड़े लगत।"

तइ बीच एक तोर चीलम चलि गेल छल। दोसर तोर सेहो तैयार भऽ गेल छल। एक तँ भिनसुरका उखड़ाहाक उठैत उखमज, दोसर पानिसँ डुमल गाम आ तेसर पुरबाक लहकी सेहो चलिये रहल छल, तँए वातावरण मनोरम भइये गेल छल..! बजलौं- "की सुदामा जकाँ कृष्णक महल कहलहक?"

जखन लोकक मन विचारमे रसाइ छै तखन अपनो विचार दोसरकेँ कहैले लुसफुसाइये लगै छै आ अनको विचार सुनैले लुसफुसाइते छइ। ओना, दुनूकेँ एक्को बुझि सकै छी, किए तँ किछु-ने-किछु मधुरस अनकोमे रहिते अछि...।

दोसर खेपक चीलमक सोंट मुँगालाल दोहरा कऽ मारि चुकल छल। मुँहक धुआँक (चीलमक) संग अपनो विचारकेँ घोंटैत मन ऐ सीमापर पहुँचिये गेल छेलै जे अनेरे फुसि-फटकमे समय गमाएब बेकुफिक सिबा आरो किछु ने छी, अनेरे खिस्सा-पिहानी जोतब नीक नहि, तँए अपन जड़िमूल बात किए ने दुनू गोरेकेँ सुना दिऐन ...। मुँगालाल बाजल- "भाय साहैब, ऐठाम तीनू गोरेक बीच हम बच्चा छी। तँए कच्चा छीहे। एकर माने ई नइ जे सच्चा नइ छी। ओना, झुट्ठो छीहे, मुदा से अपन गेल पाइनमे।"

मुँगालालक बात सुनि, मन मानि गेल जे ठीके मुँगालाल कहलक जे बाढ़िमे बढ़बारि आबि गेल। मुदा अपन तँ घटवारिये आएल अछि, जहिना अपन घटवारि कोनो रस्तासँ आएल अछि तहिना मुँगालालक बढ़वारि सेहो कोनो रस्ते आएल हएत..! सभ विचारकेँ, माने मनमे उठल सभ विचारकेँ थतमारि मनेमे बैसा बजलौं - "मुँगालाल, देखिते छहक जे बिपैतिक दुर्दिनमे पड़ल छी तँए घोड़ीक छोड़ी जकाँ ढील-ढाल बात छोड़ि सत्-सत् बाजह जे केना भेलह तोहर बढ़बारि?"

मुस्की भरैत मुँगालाल बाजल-

"जहिना बोनमे बास केनिहार वनबासी कहबैए तहिना हमहूँ ने जलमे बास करैबला जलवासी छीहे। ओही जलवासी समाजक बीच ने हमरो जनम भेल अछि। तँए कि जिनगी अकारथ भेल, सेहो बात नहियेँ अछि। अपन जीवनक सभ लूरि सीखनहि छी।"

बिच्चेमे नकेसर दास बजला- "तब ते तूँ जिनगीकेँ जमीनपरसँ चीन्ह नेने छह मुँगा..!"

मुँगालाल बाजल- “अपना किछु ने रहने, अपन लूरिक संग अपन देहोक मेहनत, बोइन तरे दोसरकेँ दिअ लगलिऐ। बुझले अछि जे गाम-गामक जे पोखैर-झाँखैड़ अछि ओ केतौ बालुसँ बाढ़िमे भथाएल अछि तँ केतौ धारक नासीमे मिलि छहमसिया बनि गेल अछि। बाँकी जैठाम जे अछि ओ मछुआ सोसाइटीमे एक गोरेक हाथमे पड़ि गेल अछि।”

अखन तक जे बात नहि बुझल छल से बात मुँगालाल बाजल छल। मुदा एते तँ आँखिक सोझमे छेलए-हे जे आन-आन गामक पोखैरक उपज आन-आन गामबला पबैए। बजलौं-

“हँ, से तँ अछिए..!”

हमरा विचारसँ जेना मुँगालालकेँ सह भेटल होइ तहिना मुँगालाल समतल जमीन जकाँ सहीट होइत बाजल-

“भरि-भरि दिन पानिमे काज करै छेलौं माछ-मखानक, मुदा परिवारो चलै-जोकर बोइन नइ होइ छल। पोखैरबलाकेँ कहै छेलिऐ तँ ओ अगधाएल जकाँ बाजै छल। हमहूँ काज छोड़ि देलिऐ।”

मुँगालालक बात सुनि मनमे उठल, हाइ रे वा! मुँगालालकेँ मात्र काज करैक लूरिटा छै, मुदा काज केतए करत से कहाँ छै। तखन जँ काज छोड़ि देलक तँ जहुना जीबैए सेहो केना जीबैत रहत। जखन जीबैक साधने ने छै तखन करत की? बजलौं-

“पाइनिक माछ माटिपर केते काल अँटैक सकैए, माने जीब सकैए।”

मुँगालालक मन अपन काजक खुशीमे प्रफुलित छल तँए मनमे धैनसन छेलइ। मुँगालाल बाजल-

“जाठिबला पोखैर ने सोसाइटीक हाथमे गेल आ बिनु जाठिबला। चारिटा डबरा हमहूँ अधिया उपजपर नेने छी। छोट कारोबार अछि तँए पाँच साएसँ गोटे हजारक कारोबार तँ अपनो भइये गेल अछि। चारू

डबरामे जीरा हमहूँ देने छेलिऐ।”

मुँगालालक बात सुनि एते तँ मन मानियेँ गेल जे भिखमंगासँ नीक तँ मुँगालाल अछिए। बजा गेल-

“से तँ नीक केने छह..!”

जहिना कोनो बच्चाक पीठपर हाथ पड़िते कुदए लगैए तहिना मुँगालाल सेहो कुदैत बाजल-

“सिंहेसर भाय! गाममे बाढ़ि आएल, गामक चारूकातक सड़क केहेन बनि गेल अछि से तँ देखबे करै छिऐ जइसँ गामक पानि घेराएल अछि। बीस दिनसँ बाधक संग घर-अँगनामे सेहो पानि जमकल अछिए।”

बजलौं-

“हँ, से तँ अछिए।”

मुँगालाल बाजल-

“छोटका-बड़का सभ पोखैरो आ डबरोक पानि एकरंग भऽ गेल। छोटो कारोबारी किए ने होइ मुदा माछक हिस्सेदार तँ हमहूँ ने भेलिऐ।”

बजलौं-

“हँ, से तँ भेबे केलह किने।”

मुँगालाल बाजल-

“ओही बढ़वारिक पाछू बेहाल रहै छी, तँए भेँट-घाँट नइ होइ छल।”

❑ *शब्द संख्या : 1884, तिथि : 03 अगस्त 2019*

कोसा

मासे-मास मासक दसम दिन बाजार जाइ छी आ मासो दिनक परिवारक जे खर्च अछि ओ कीनि-बेसाहि अनै छी। बीचमे जँ कोनो पैघे आकि कोनो नवे काजे उपस्थित भेल तँ तइले सेहो बाजार जाइते छी मुदा से कोनो मास दोहराइयो-तेहराइयो कऽ जाइ छी आ कोनो मास नहियोँ जाइ छी।

कहब जे परिवारमे खरचे[16] की होइए जे मासे-मास बाजार जाए पड़ैए? ..भेल तँ नोन-तेल, मिरचाइ-मसल्लाक संग चाहपत्ती-चिन्नी इत्यादि खाइ-पीबैक सामान, से तँ गामोक दोकानमे भेटते अछि तखन बाजार जाइक कोन प्रयोजन?

हँ! सेहो अछि मुदा हमरा गाममे–माने राधोपुरमे–कोनो तेहेन दोकाने ने अछि जे गाम भरिक खगताकेँ पुरौत।

ओना, गामक लोकमे कारोबार करैक एहेन जिज्ञासा नइ अछि सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए, मुदा गामक कारोबारीक जे पैछला इतिहास रहल ओ ओहन रहल जे बिनु उधार-पुधार देने कारोबार चलत नहि आ तेना कऽ गौंआँ-घरूआ उधार लऽ बैस जाइए जे कारोबारकेँ बैसा दइए जइसँ कारोबार करैक इच्छित लोककेँ मने घुमा दइ छै जइसँ कारोबार दिस लोकक नजैर भुताएल गाछी जकाँ रस्तापर चढ़िते ठमैक जाइए।

बाजारक एकटा लटखेना दोकानपर बैस चीज-वौस लैत रही कि

रमानन्द सेहो पहुँचल। धुआँ-धुआँ भेल चेहराक रंग रमानन्दक देखलिऐ। देखिते बुझि पड़ल जे कोनो भारी-बिपैतमे वेचारे पड़ि गेल अछि जइसँ चेहराक रूप बदलल छइ।

दोकानपर आरो-आरो लेबाल सभ छल, जइसँ मन कहलक जे जखने रमानन्दकेँ टोकब तखने अपनो बात आ बाढ़ियोक खिस्सा सभ सुनेबे करत। तैसंग गामक नीक-बेजाए सभ तरहक गप-सप्प चलबे करत...। मुदा तुरन्ते मन रोकलक- अनगौंआँ लग नीक बात तँ बजलो जा सकैए मुदा अधला बात केना बाजब। ऐसँ गामक हीनताइये ने हएत। गामो-गामोक तँ अपन-अपन इज्जतो-आवरू आ मानो-अपमान तँ अछिए।

गामक इज्जत-आवरू आ मान-अपमान नजैरपर अबिते मान-प्रतिष्ठाक विचार सेहो मनमे उठि गेल। जहिना घरे-घर लोक पसरल अछि तहिना ने क्षेत्रे-क्षेत्र गाम सेहो पसरल अछि। तैबीच मानो-प्रतिष्ठा तँ सबहक अपन-अपन अछिए। गामक मान-प्रतिष्ठा गाम-गामक बीच अछि आ बेकतीक मान-प्रतिष्ठा सेहो परिवार-परिवारक बीच अछिए। परिवारोमे अहिना होइत रहल आ अखनो होइए जे परिवार बीच कोन आदमीक विचार सर्वमान्य होइत काजक रूप लइए आ कोन आदमीक विचार विचारक बीच विचरणे करैत रहि जाइए। तहिना गाम-गामक बीच सेहो अछिए। कोन गामक केहेन देखौंस पास -पड़ोसक चौबगली गामक लोक करैए...। तही रस्तासँ ने कोनो गामक मान-प्रतिष्ठा बढ़बो करैए आ घटबो करिते अछि। खाएर जे जेतए अछि से तेतए रहउ। राघोपुर पंचायतिक अपन भूगोलो अछि, इतिहासो अछि आ तैसंग आनो-आन अपन कला अछिए। लोको तँ लोक छी, अपन गौंआँ-घरूआक मान-सम्मानकेँ धुरा-गरदा जकाँ कियो लतियबैत चलैए आ कियो मान-सम्मान बुझि प्रतिष्ठित सेहो करिते अछि।

ओना, अपनो आँखि उठा रमानन्दक आँखिपर देलिऐ आ रमानन्दो

अपन आँखि उठा तकलक तँ दुनू गोरेक आँखि -पर-आँखि पड़ल। मुदा ने अपने किछु बजलौं आ ने रमानन्दे किछु बाजल, जइसँ अपना मनमे तँ किछु विचार जगि गेल मुदा आन-आन सभ गहिंकी जे रहए ओ सभ किछु ने बुझि सकल।

चीज-वौस कीनि झोरामे समेट ऐ ताकमे बैसल रहलौं जे रमानन्दो जखन अपन चीज-वौस कीनि दोकानसँ निकलत तखन संगे निकैल बाहरमे असथिरसँ गप-सप्प करब। सएह भेल। दोकानपर सँ उठि अपनो बाहर निकललौं आ रमानन्दो निकलल तखन फुस-फुसा कऽ, कनियेँ जोरसँ रमानन्दकेँ कहलिऐ-

“रमानन्द भाय, मन बड़ खसल देखै छी?”

गामक अधिकांश लोक रमानन्दकेँ ‘मास्टर साहैब’ सेहो कहै छैन, मुदा अपने एकतुरिया सेहो छी आ संगे-संग हाइ सकूल तक पढ़बो केने छी। एकतुरिया रहने जहिना रमानन्दकेँ हम ‘रौ’ कहै छिऐ तहिना ओहो ‘रउए’ कहैए, मुदा से जखन दुइये गोरे रहै छी तखन। किए तँ जहिया दुनू गोरेकेँ घरक भार नइ पड़ल छल, बिआह-दुरागमन नइ भेल छल, माता-पिताक देख-रेखमे छेलौं, तहियेक सम्बन्ध अछि माने ‘रौ-रौ’ कहैक। मुदा आब तँ जहिना अपने स्वयं पाँच बच्चाक पिता छी तहिना रमानन्दो चारि बच्चाक पिता अछिए। तइ संग ईहो भेल अछि जे अपन पिताक मुइने जहिना घरक भारो पड़ल आ बाल-बच्चाक संग परिवारोक अभिभावक भेलौं तहिना रमानन्दो अछिए। ओना, रमानन्दक पिता जीविते छथिन मुदा रमानन्दक अख्यिास देखि पिता सोल्होअना घरक भार रमानन्देपर छोड़ि देने छथिन। स्वतंत्र रूपेँ बुझू आकि जीवन रूपेँ बुझू रमानन्दक पिता–गुणेश्वर–दूटा गाए अपना सिरे[17] रखने छैथ। तँए समय आ जगह देखि जहिना अपने रमानन्दकेँ कखनो ‘भाय’, कखनो ‘मास्टर साहैब’, कखनो ‘गौंआँ’ आ कखनो ‘संगी’ कहै छिऐ तहिना ओहो हमरा कहैए। तइले अपना मनमे मिसियो भरि तेहेन माख नइ उठैए जइसँ मान-

प्रतिष्ठामे कनियोँ खोंच-खरोंच हएत। रमानन्दोकेँ भरिसक तहिना बुझि पड़ैत हेतइ मुदा से तँ भेल रमानन्दक मनक बात, जे सोल्हन्नी ओ अपने बुझैत हएत।

..रमानन्द बाजल- "गरदैनमे छुरी लगि गेल..!"

'गरदैनमे छुरी लगि गेल' सुनि मन चौंक गेल। ओना, महिना दिनसँ गाम बाढ़िक पानि तर दाबल अछि से देखबो करै छी आ बुझितो छीहे। मुदा बाढ़ियोक असैर सभकेँ एक्केरंग होइ छै सेहो बात तँ नहियेँ अछि। किए तँ जेकर घराड़ी ऊँचगर छै, मजगूत घर छै तेकर आ जेकर घराड़ी गहींरमे छै आ घरो टाट कि भीतक छै तेकर असैर तँ दू रंग होइते अछि। तहिना खेतो-पथार आ मालो-जालोक बीच होइते अछि। जइसँ केकरो खेत-पथार उजैर जाइ छै आ केकरो किछु ने होइ छै, तहिना घरो-दुआरोक अछिए। तैसंग जिनगीक बीच सेहो बाढ़िक असर एकरंग अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। देखिते छी जे कियो नोकरी करै छैथ–घरसँ बाहर धरि–आ कियो किसानी जिनगीसँ जुड़ल कारोबार करै छैथ, दुनूक बीच अन्तर अछिए। बाढ़िसँ चास-बासक नोकसान होइए, नोकरीबलाकेँ नइ होइए।

रमानन्दक बात सुनि मनमे उठल जे अनेरे जे अलंकार शैलीमे गप करै छी से जगह अखन नइ अछि। ओ जगह बनैए शान्त वातावरणमे, अखन तँ बाढ़ि आबि वातावरणकेँ तेहेन अशान्त बना देने अछि जे लोकक मने तेना विचलित भऽ गेल छै जे अनेरे मुँहक तुतलीए ढील भऽ गेल जइ कारणे बजैओमे लटपटा रहल अछि। तैपर जँ अपनो संगी-साथीक बीच सएह भेल तखन संगी की आ संगपना केहेन..? बजलौं-

"रमानन्द भाय, बाढ़ि तेना मनकेँ झमारि देने अछि जे सोझो रस्ता टेँढ़ जकाँ देखाए पड़ैए आ तैठाम जँ लंगोटिया संगी रहितो अहाँक बात हम नइ बुझी आकि हमरे बात अहाँ नइ बुझी से केहेन हएत।"

दर्दक पीड़ासँ पीड़ित अपन बेथा-कथा दोसरकेँ कहैले वा सुनबैले

जहिना कियो उताहुल रहैत तहिना रमानन्दो बाजल- “जिनगीमे एहेन धक्का ई बाढ़ि मारलक जे मोचैड़ कऽ खसा देलक।”

रमानन्दक किछु बात बुझबो केलौं आ किछु नहियोँ बुझलौं।

‘जिनगी मोचैड़ कऽ खसा देलक’ सुनि अपनो मन मोचड़ाए लगल मुदा तैयो असथिर होइत मनकेँ असथिर केने रहलौं। ठाढ़े-ठाढ़ जे रस्तापर गप-सप्प करैत रही तइमे बुझि पड़ए लगल जे देहक हूबा जेना शिथिल भेल जा रहल अछि। बजलौं-

“रमानन्द भाय, ऐठामसँ नीक हएत जे केतौ बैस कऽ दुनू भाँइ अपन बीतैत जिनगीक विचार करितौं तँ ओ बेसी नीक होइत..!”

रमानन्दोकेँ भरिसक सएह–माने देहक हूबा–घटि रहल छेलैन। एकरंग होइत बजला-

“बड़बढ़ियाँ।”

दुनू गोरे आगू बढ़ि एकटा बन्द दोकानक ओसारपर बैस गप-सप्प करए लगलौं। पुछलयैन- “रमानन्द भाय, जिनगी केना मोचड़ा गेल?”

हमर बात सुनिते रमानन्द विस्मित जकाँ हुअ लगला। पाछू उनैट जेना अपन जिनगीकेँ पढ़ैत रमानन्द भाय बजला-

“किसुन भाय, अहाँसँ लाथ की! अहीं कि केकरोसँ लाथ किए करब, सभ अपन-अपन जिनगीक मालिक छीहे तँए अपन-अपन सुख-दुख भोगैक अधिकारियो तँ अपन-अपन हेबे करता।”

रमानन्दक विचार अपनो जँचल, तँए विचारमे सोंगर भरि जोर लगबैत बजलौं-

“भाय, केकरो बीतल समैयक सुख-दुख तँ कियो बाँटि नहियेँ सकैए मुदा अबैबला समैयक तँ थोड़ो-थाड़ बाँटिये सकैए।”

हृदय खोलि रमानन्द बजला- “किसुन भाय, जाबे तक संगे-संग पढ़लौं ताबे तक जहिना अहूँकेँ परिवारक जानकारी कम छल तहिना

अपनो कम्मे जानकारी रहए, मुदा स्कूलमे संगे-संग बैस समय बितौने ओत्ते समैयक जानकारियो तँ रहबे करए।"

बजलौं- "हँ, से तँ रहबे करए।"

रमानन्दक मनक बात जेना बजा गेल हुअए तहिना चन्द्रमुख मुस्की दैत बजला-

"जहिया तक संग-संग समय बितेलौं आ पढ़ाइ छोड़ला पछाइत जहियासँ अलग-अलग भेलौं सएह भेल दुनू गोरेक जिनगीक चिन्ह-अनचिन्हक सीमा, तँए ओहीठामसँ गप-सप्प करू।"

रमानन्दक चोटाएल मन देखि अपनो मन चोटाइये लगल छल तँए विचार उठि गेल जे कोनो धरानी रमानन्दक चोटाएल मनक चोट जँ थोड़बो-थोड़ हमरासँ कमि जाइ तँ वएह ने भेल बेरक बेगरता सम्हारब...। बजलौं- "बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ सीमांकन केलौं भाय..!"

रमानन्द धाँइ-दे उनैट अपन बीस साल पहिलुका सीमानपर ठाढ़ होइत बजला-

"मैट्रिक तक तँ दुनू गोरे संगे -संग पढ़लौं, पछाइत हम शिक्षामित्रमे बहाली भेलौं।"

शिक्षामित्रमे बहाली होइक कोशिश अपनो केने रही मुदा जइ-जइठाम–माने तीनठाम अपन गाम, मात्रिक आ सासुरमे–आवेदन केने छेलौं तइ-तइठाम झंझटे भऽ गेल। जे पछाइत कोट-कचहरीसँ फरियाएल, तँए अपना नोकरी नइ भेल...। रमानन्दकेँ पुछलयैन-

"शिक्षामित्रमे बहाली केना भेल?"

रमानन्द बजला- "तीनठाम आवेदन केने छेलौं। पनरहे साएक नोकरी छल, सेहो चरवाहा विद्यालय कहिकऽ, अखन तक मनकेँ पहिलुका धारणा नीक जकाँ पकैड़ नेने छल जे सरकारी नोकरी करब।

गाम-घरमे लोक कहितो अछि जे नोकरी सरकारी आ खेती तरकारी, ई दुनू लाभप्रद अछिए। नोकरी जाबे जीवित रहत ताबे वेतन भेटत, पछाइत पेंशन। गाममे तँ शिक्षामित्र नहियेँ बनलौं मुदा मात्रिकमे सुतरल। हाजीपुरमे मात्रिक अछि।"

अनेरे बजा गेल-

"तरखन तँ अहाँक गोटी सुतरल..!"

'गोटी सुतरल' सुनि रमानन्द भाय बजला-

"गोटी सुतरल कि आरो फँसि गेल!"

'गोटी फँसि गेल' सुनि चौंकलौं। मनमे उठल जा! ई की भेल!! बजलौं-

"की फँसि गेल?"

रमानन्द भाय बजला-

"अपन मात्रिकक गामसँ पाँच कोस हटि कऽ दोसर गामक स्कूलमे नोकरी भेल। शिक्षकक नोकरी, तँए मान प्रतिष्ठा बढ़बे कएल।"

बिच्चेमे बजलौं-

"वाह..!"

जहिना हम 'वाह' कहलयैन तहिना रमानन्द भाय अबाह होइत बजला-

"एकटा परिवारक तीनटा बच्चा पढ़बैक एवजमे रहैक घरो भेटल आ खेनाइ-पीनाइक जोगार सेहो लागल।"

बजलौं-

"तरखन तँ सोल्होअना वेतन बँचिये जाइत हएत।"

रमानन्द भाय मुँह खोलि कऽ तँ नइ बजला मुदा मने-मन भनभनेला जे मोबाइलियोक खर्च ने पुरै छल आ सोल्होअना बँचिये

जाइत हएत...।

रमानन्द भायकेँ जइ गाममे नोकरी भेलैन तइ गामक प्रति मनमे एकटा विचार जगिये गेल छेलैन जे ऐ गाममे पढ़ल-लिखल लोकक संख्या कम अछि तँए ने बहरबैया रहितो हमरा नोकरी भेल।

जइ गाममे शिक्षामित्रमे रमानन्द बहाल भेला, अखन तक ओइ गामक केकरोसँ ई नहि पुछि पेलैन जे ऐ गाममे पढ़ल-लिखल लोकक संख्या केहेन अछि। संजोग बनल, जिनका ऐठाम रमानन्द रहै छला ओ घड़ी पाबैन-दुआरे भरि दिन घरेपर रहला। हुनक नाओं देवनन्दन छिऐन। रमानन्दो स्कूलसँ आबि चाह-जलखै केलाक पछाइत दरबज्जापर बैसला आ देवनन्दन सेहो बैसल रहैथ। दुनू गोरेक बीच गप-सप्प शुरू भेल ओही क्रममे रमानन्द बजला-

"ऐ गाममे पढ़ल-लिखल लोकक संख्या केहेन अछि?"

देवनन्दन बजला-

"एहेन प्रश्न किए पुछलौं?"

रमानन्द खुलि कऽ बजला-

"एते दूरक हम छी, ऐठामक स्कूलमे हमरा शिक्षामित्रमे नोकरी भेल आ गौंआँ-घरूआकेँ किए ने भेलैन?"

जहिना रमानन्द हृदय खोलि बाजल छला तहिना देवनन्दनो हृदय खोलि बजला-

"पढ़ल-लिखल लोकक बीच दू तरहक विचार चलैए, एक अपन उकितसँ अपन जीवन गढ़ी आ दोसर- नोकरीक जीवन बना जीबी...। ऐठामक पढ़ल-लिखल लोकक धारणा अपना प्रति समर्पित अछि तँए नोकरी दिस कम लोक तकै छैथ। हमहीं बी.ए. पास छी, अपना दस बीघा चास अछि। घरसँ चास[18] हटल रहने ओही बीचमे माने खेतक बीचमे, घर बनौने छी, दिन-राति ओतइ रहि ओकर ओगरवाहियो करै छी

आ समयानुसार काजो करै छी, जइसँ परिवार हँसैत चलैए।”

ओना, रमानन्दोक अपन चिन्तन क्रिया ओहने छेलैन मुदा विचारक प्रवाहमे भँसैत नोकरीक धारणा अंगेजा गेलैन जैपर सँ थोड़-थाड़ परदा हटने अपन पहिलुका चेतना मनमे जगि गेलैन। बजला-

“दस बीघा जमीनो अपना अछि आ भैयारीमे सेहो असगरे छी।”

चेतन भरल शब्दमे देवनन्दन बजला- “पनरह साए रुपैआक नोकरी करैले अहाँ एते दूरसँ आएल छी आ हम प्रतिदिन साए रुपैआक मजूरीपर पाँच आदमीकेँ काज सेहो देने छिऐ। अन्नक खेती ओतबे करै छी जेते परिवारमे खर्च होइए। बाँकीमे दस कट्ठा केराक खेती केने छी, तैसंग तरकारियो आ फलोक खेती केने छी। चलब तँ काल्हि देखब।”

जहिना केकरो मन ओछाइनपर जाइसँ पहिने कोनो आदमिये वा वौसेपर मन लटकल रहल आ बिच्चेमे नीन आबि जाइए। मुदा जखन नीन पूर भेने आकि काँचेमे टुटि गेने पुन: ओ आदमी वा वौसकेँ खोजए लगैए तहिना रमानन्दोकेँ भेलैन। नोकरी छोड़ि रमानन्द गाम आबि अपन जीवन ठाढ़ करैक पाछाँ लागि गेला...।

सोल्होअना वेतन सुनि रमानन्द भाय बजला-

“नोकरीकेँ छबे मासक पछाइत छोड़ि कऽ गाम आबि गेलौं। अपन गिरहस्तीकेँ सुधारैत, परिवर्त करैत ठाढ़ करए लगलौं। पाँच कट्ठा केराक खेती अछि, जइमे एक साए बीट लगौने छी।”

बजैत-बजैत रमानन्दक मन चहकए लगलैन जइसँ बोलती बन्न हुअ लगलैन। बजलौं-

“से की भेल?”

रमानन्द भाय बजला- “आइ तीसम दिन बाढ़िकेँ एना भेल अछि। गामक पानि चौबगली केहेन ऊँचगर बान्हसँ घेराएल अछि से तँ देखबे करै छी..!”

बिच्चेमे बजलौं-

“हँ, से तँ घेराएले अछि। हमर-अहाँक घर एक पंचायतमे रहितो जेतेक प्रभाव बाढ़िक अहाँ गाममे पड़ैए, तेतेक हमरा गाममे नहियेँ पड़ैए।”

रमानन्द भाय बजला-

“बाढ़िसँ एक दिन पहिने पचासटा कोसा केरामे निकलल देखलौं, तीस-पैंतीसटा-मे चौफ्ती सेहो निकैल गेल छल। बाढ़िमे तेना डुमल जे बीसम दिन अबैत-अबैत सभ गलि कऽ नष्ट भऽ गेल।”

पीड़ासँ पीड़ित रमानन्द भायकेँ प्रेममे परताइर बजलौं-

“भाय साहैब, मड़बाक आगूमे जे वेदी लग लोक बाँसक खुट्टामे कोसाकेँ अकासमे लटका दइए, से तँ दुइर भऽ जाइ छै आ अहाँकेँ तँ खेतक भेल।”

❑ *शब्द संख्या : 1999, तिथि : 07 अगस्त 2019*

दहेजक गाए

बाढ़िसँ गाम डुमनाक आइ सताइसम दिन छी...। आशा-आशीपर दुनियाँ आइये नहि सभ दिनसँ जहिना चलैत आबि रहल अछि तहिना अखनो चलिते अछि। शासनक आशापर जहिना सत्ता चलैए तहिना सत्ताक आशापर शासनो चलिते अछि। ..गाममे पानि प्रवेश केनौं ने छल, तीन गाम पाछुए बाढ़ि छल कि शासन बाजि उठल-

"अखन अपन-अपन जानो आ मालो-जालक जान बँचाउ, पीठेपर हम मालोक चारा आ मनुखो-ले आर्थिक मदद पहुँचा रहल छी।"

रेडियो-टी.वी. इत्यादि साधनसँ अकास गुंजि उठल। अपन मन तेना अकबका गेल जे ने सम्हारैक[19] कोनो होशे रहल आ ने हवासे रहल। एक्के-दुइये लोकोक मुँहक आवाज कानमे आबिये रहल छल जे ऐबेर सनक बाढ़ि ने दू हजार दू इस्वीक छल आ ने उन्नैस साए सतासियेक...। पनरह बर्खक दूरीपर सतासी आ दू इस्वीक बाढ़ि छल ऐबेरक सोलह बर्खक दूरीपर अछि। एक रंगाहे समय भेल।

गुन-धुनमे विचार उठै छल जे पहिने मालो-जाल आ मनुखोक ठौर लगाबी, पछाइत बुझल जेतइ। फेर लगले भेल जे सतासीक बाढ़िमे तँ केते गोरेक घरक चारपर पानि चढ़ि गेल छल, ऐबेर तँ ओइसँ नमहर बाढ़ि अछि, ऐबेर की हएत की नहि। अपनो घरक चार जँ छुबि लेत तखन केना बँचब..! भगवानो गामक लोकक तेहेन बेपाट छैथ जे सभ गामकेँ[20] ऊँचगर[21] बनौलखिन आ हमरा गामकेँ कटिक कंचन काटि आन गामक

छातीपर रखि देने छथिन। मुदा हुनका दोखे की देबैन, ने बजैक मुँह छैन जे किछु बजता आ ने सुनैक कान छैन जे किछु सुनता आकि विचारे-बुधिये छैन जे किछु विचारता..! जेम्हरे ताकी तेम्हरे बाढ़िक पानि जकाँ विचारो झलझल करै छल जइसँ अन्हार बुझि पड़ै छल। तैबीच उत्तरसँ दच्छिन मुहेँ बारह बर्खक एकटा छौड़ाकेँ चिचिआइत बजैत दौड़ल जाइत देखलौं। बजै छल-

"गाममे पानि ढुकि गेल..!"

'गाममे पानि ढुकि गेल' सुनिते मन आरो चौंकल। जखने लोकक मनमे अपन शक्तिक आशा टुटै छै वा कमजोर हुअ लगै छै तखने ने भगवानक आशा मनमे जगबो करैए आ जगितो तँ अछिए। ई दीगर भेल जे भगवानक आशाक बाट आ अपन शक्तिक बाटमे सामंजस हुअए वा नइ हुअए, जे बात भगवान बुझौथ वा नहि बुझौथ मुदा लोक तँ बुझबे करैए जे आब मरब अछिए।

आर्थिक मदैतिक जे सरकारी घोषणा छल ओ किछु गोरे दू रुपैये गहुम आ तीन रुपैये चाउरक हिसाबक हिसाबे खेतीक उपजाक क्षतिक हिसाब जोड़ि संतोख केलैन। मुदा पशुक चाराक जे घोषणा भेल अछि तइ पाछू गामक लोक लागि पड़ल। पच्चीस दिन तक घौचाइल चलैत रहल। कखनो पशुक चाराक खगतापर सबाल उठल जे टेकटर दुआरे बरद उपटल आ गाएकेँ लोक पोसनहि नइ अछि, तखन चारा केकरा-ले लेब..? प्रश्न-पर-प्रश्न गाममे उठि-उठि झड़ए लगल।

अन्तो-अन्त गौआँक सहमत बनल जे सरकार जखन गामकेँ दानक दहेजमे सभकुछ पठाइये रहल अछि तखन बीचमे ओ आन लूटि लेत तइसँ नीक ने जे गामेक लोककेँ किए ने हाथ लगौ। बुझबै जे चारियो परिवारकेँ तँ शासन जान बँचौलक।

चाराक सबालपर सौंसे गामक लोक जुलूस सजि गामसँ पएरे मधुबनी–जिला कार्यालय–जेबाक विचार पक्का केलक...।

सौंसे गामक समूह बनि गेल तखन हमहूँ नइ जइतौं से केहेन होइत। भेल तँ एक्के दिनक ने बरदाहैट हएत, तइले समूहमे दोखी बनब नीक नहियेँ हएत। समूहक संग चलब तखने ने अपनो समूहक अंग बनब, नइ तँ समूहक सभ कहबे करता ने जे फल्लाँ एकरबा बानर जकाँ समूहमे रहैबला नइ अछि तँए ओकरा छाँटिये कऽ समूह बुझह..!

मनमे ईहो हुअए जे आन-आन काज तँ परिवारक सम्हारिये सकै छी मुदा भोज-भात हरण-मरण आ जात-बरियात केना सम्हारब..? मन मानि गेल जे जुलूसमे सबहक संग जिला कार्यालय जेबे करब।

जखन जुलूसमे जेबाक मन बनि गेल तखन विचार उठल जे जखन जेबाके अछि तखन पछुआ बनि किए जाएब। किए ने अगुआक संग अगुआ कऽ चलब। भेल तँ एतबे ने जे पाछूमे रहने नहियोँ किछु आवाज देबै तैयो आवाजीमे गिनती हेबे करत आ आगूमे रहने से नइ हएत। आगूमे रहैले जोर लगा जोर-जोरसँ आवाज दैत सम्हारि[22] कऽ रखए पड़त आ पाछूमे रहने अपनो अपन तागतमे जँ कनी ढीलो दए देबै तैयो काज चलि सकैए...।

मनमे अग-दिग चलिये रहल छल कि एकाएक विचार जगल जे जखन रणभूमिक लेल तैयार भइये गेलौं तखन आगूमे अनेरे जाएब से नीक नहि, किए तँ सभ कहत जे जखन सभ मिलि जुलूस सजने छी तखन फल्लाँ अगुआ केना भेल..? मन असथिर भऽ गेल।

नीक जुलूस सजल। जे समय निर्धारित छल तइसँ पहिनहि गामक घरही लोक जुलूसमे शामिल भेला। पच्छिम मुहेँ जुलूस विदा भेल। आगूक ऐगला नारा दइले नवजुबक सभ तैयार भेल। नारा निर्धारित सेहो भेल। मुदा किछु नारा ऐगला नारा लगौनिहारक मनसँ उतरबो कएल आ किछु अपन उत्साहित नारा जनमबो कएल।

के केकर नारा सुनत..? सभ अपन-अपन नारा लगबए लगल..!

गामक लोक तँ सभ जनिते जे जुलूसमे सभ जा रहल छैथ तँए ओते लोकक काज[23] बाधित हेबे करत। तँए धरबैयाक[24] काजमे बढ़ोतरी भइये जाएत जेकरा सम्हरबो तँ अछिए, तँए गामसँ निकलल जुलूसकेँ मात्र गामक धिया-पुताटा अरिआतलक।

ऐगला गाममे आवाज पहुँचते गामक लोक सड़कक कातमे आबि दुनू दिस ठाढ़ भऽ भऽ देखए लगल। जहिना रंग-रंगक नारा जुलूससँ निकैल रहल छल तहिना गाम-गामक पतियानी लगल लोकक मुहसँ टीका-टिप्पणी सेहो निकैल रहल छल। पुरुखक दिससँ सेहो आ महिला दिससँ सेहो।

जुलूस तँ अपन नारा लगबैत आगू बढ़ि रहल छल तँए किए केकरो टिका-टिप्पणी सुनैत, मुदा एक्को रोगक रोगी अनेक गाम सभमे अछिए, तैसंग एहनो तँ भइये सकैए जे किछु नवको समस्या सभ गाममे होइ। जखन जुलूस सजने छी तखन ओहू नाराकेँ किए ने उठबैत चली। सोल्होअना अपन देहक भार जुलूसपर अँटका पाछू-पाछू चलैत रही।

देहक भार–माने अपन देहक सभ रोग-पीड़ा–जुलूसक डेगमे बान्हि निभर भऽ चलए लगलौं। जइसँ बुझिये ने पेब रहल छेलौं जे केते किलो मीटर गामसँ आगू बढ़लौं आ केते किलो मीटर आगू जाएब अछि। दोसर गामक मध्य जखन पहुँचलौं तखन पुरुखक मुहसँ निकैल रहल छल - "बोल बमक नारा छी। कनी पुछब अछि जे बाबाधामक घुरन्ती छी आकि चढ़ंती।"

तहिना महिला दिससँ सेहो कनफुसकी होइत-

"सबटा मरदे-मरदी छी, स्त्रीगण एकोटा ने अछि..!"

तँ कियो बजैत-

"तेहेन बाढ़ि आएल जे सभकेँ अपने भफौरी ढील अछि तँए महिला सभ नहि अछि..!"

पाछूमे अपने रही, अपन जुलूसक नारापर मन सेहो छल आ गामक लोकक टिका-टिप्पणीपर सेहो, तँए मन बँटाएल छल, जइ बीच किछु बाजबो तँ उचित नहियेँ होइत, मुदा तैयो एते तँ भइये गेल जे जुलूससँ पछुआइत-पछुआइत दस लग्गा पछुआ गेबे केलौं, मुदा रहलौं जुलूसेक संग।

एगारह बजे भगवतीपुर बाजारक पछबरिया मोड़पर जुलूस पहुँच चुकल छल। बाढ़िक पछाइत रौदो आ रौदियोक सम्भावना सेहो भइये जाइए। सएह भेल। टहटहौआ जनमारा रौद भइये गेल छल। मुदा रनवैयोक[25] तँ अपन उत्साह होइ छै किने जे रौद-बसातक परवाह नहि करैए। पच्छिम दिससँ मनमोहन भाय, टेकटरपर गहुमक भूसी नेने अबै छला। भाड़ाक टेकटर छेलैन आ कुटुमारेमे चारि क्वीन्टल भूसी कीनने छला।

गामक लोकक जुलूस देखिते मनमोहन भाय बुझि गेला जे अपने गामक जुलूस छी मुदा रणभूमिक रणिकक समैयक ओते महत् तँ होइते अछि जे छनोमे छनाक भइये सकैए, तँए मनमोहन भाय ड्राइवरकेँ कहि गाड़ी सड़कक पजरवाहिमे लगा देखए लगला। मुदा बाजि किछु ने रहल छला।

अपने जुलूससँ दस लग्गा पछुआ गेले रही, अपनो नजैर मनमोहन भायपर पड़ल आ मनमोहनो भाइक नजैर हमरापर पड़लैन। ओना, हुनका चिन्हैमे देरी नइ भेलैन मुदा अपना चिन्हैमे देरी लगबे कएल। देरी लगैक कारण भेल जे ट्रालीमे चारू भांगा[26] एक्के पतियानीमे सैंतकऽ राखल छल, जे चौरस बनि गेल छेलइ। ओहीपर मनमोहन भाय बैसल छला। टेकटरक चालिक झोलामे भूसीक गरदा उड़ि-उड़ि तेना मनमोहन भाइक देहपर पड़ल छेलैन जे सौंसे देह भूसीक गरदासँ नहा गेल छला , तँए चिन्हैमे कनी बाधा भऽ गेल। असगर देखिते मनमोहन भाय बजला-

"केतए जाइ छह रमण?"

कहैत टेकटरबला ड्राइवरकेँ बीस टकही नोट हाथमे दैत टेकटरपर सँ उतरैत कहलखिन-

"टेकटरकेँ द्वारक मोड़पर लगा दहक आ ताबे तोंहू खा -पीबह हमहूँ गाम-घरक हाल-चाल बुझि लइ छी।"

टेकटरपर सँ उतैर हमर हाथ पकैड़ दछिनवारी कातमे जे दुआर बनल अछि तइसँ आगू जे बरक गाछ छै तैठाम पहुँच बैसैत बजलौं -

"मनमोहन भाय, केतएसँ भूसी अनलौं?"

हमर बात सुनि मनमोहन भाय अगदिगमे पड़ि गेला। किए तँ दुनू दिससँ सबाले[27] निकलल..!

मनमोहनो भाइक मन कहिते छेलैन जे जहिना टेकटरपर बैसल झोला खेने सौंसे देह दुखा रहल अछि तहिना रमणक देह सेहो चारि कोस पएरे चलने डाँरसँ निच्चाँ जाँघसँ ठेहुन लगा घुट्ठी धरि सेहो दुखाइते हेतइ, तँए दुनू गोरेक मन विचलित हेबे करत। जखने मन विचलित रहत तखने गप-सप्पमे मीठपन नइ औत।

मने-मन विचारि कऽ मनहोहन भाय सामंजस करैत बजला-

"रमण! मन ठेहिया गेल अछि तँए नीक हएत जे पहिने दुनू गोरे कोनो चाहक दोकानपर चलि चाह पीब लएह आ अहीठाम आबि गप-सप्प करब।"

मनमोहन भाइक विचार नीक नहि लगल। नीको केना लगैत? हम जखन जुलूसमे जा रहल छी तखन सीना तानि कऽ ने जुलूसक संग चलब आकि कुटुमैतीमे छी जे चाहे-पान आ गपे-सप्पमे दिन बीता लेब..! मुदा लगले मन कहलक दस मिनटमे जाबे जुलूस भगवतीपुरसँ रामपट्टी पहुँचत, तैबीच गप-सप्प करैत टैम्पू पकैड़ जहल लग तक जाइत-जाइत जुलूसकेँ पकैड़ लेब। दुनू काज भऽ जाएत... ।

आगू-आगू मनमोहन भाय आ पाछू-पाछू अपने विदा होइत

बजलौं-

“भाय, पाइनिक तृष्णा अपनो भऽ गेल अछि।”

हमर बात सुनि मनमोहन भाइक मनक कोनो गोटी जेना लाल भऽ गेल होनि तहिना बजला-

“भगवतीपुरक चाहक दोकानमे चाहे-टाक पाइ लगै छै, पानि फ्रीमे भेटै छइ।”

ओना, मनमे भेल जे मनमोहन भायकेँ कहिऐन जे चाहक दोकानपर पानि फ्री आ पाइनिक पछाइत पानक..? मुदा अपने मन कहलक जे अमती झाड़मे अनेरे अमतहे फड़-ले ओझरा जाइ सेहो नीक नहि। मनकेँ मारि मनमोहन भाइक पाछू-पाछू चाहक दोकानपर पहुँच दुनू गोरे पानियोँ आ चाहो पीलौं।

चाह पीब पान खा दुनू गोरे बरक गाछक निच्चाँमे आबि बैसलौं। तैबीच जेना अपन मनक विचार बदैल गेल। बदैल ई गेल जे भूस्सा-भुस्सीक गप-सप्प तँ घुमि कऽ गाम गेला पछाइत काल्हियो-परसू कऽ सकै छी मुदा जुलूस तँ से नहि अछि..! बजलौं-

“भाय! सौंसे गामक सबहक विचार भेल अछि जे बाढ़िसँ तेना माल-जालक चारा–माने नारो आ भूसियो दहा-भँसिया सड़ि-पचि गेल आ खेतक घास तँ सहजे पानिमे डुमि कऽ–सड़ि-गलि गेल जइसँ माल-जालकेँ जीअब कठिन भइये गेल अछि। ओइ चाराक पूर्ति हेतु सरकार सेहो तैयार अछि, मुदा से अखन धरि भेटल नहि अछि, तही कारणे जुलूस मधुबनी जा रहल अछि।”

ओना, मनमोहन भायकेँ सेहो बुझल छेलैन जे गाम-गामक लोक राशन-पानीक प्रदर्शन जिला-कार्यालयमे कइये रहल अछि तँए बेसी टोक-टाक नहि केलैन। बजला-

“चारि दिनसँ वौआइत-वौआइत काल्हि हजार रुपैये क्वीन्टल

भूसीक भॉज लगल, सहए कीनिकऽ नेने जाइ छी।"

बजैत-बजैत मनमोहन भाइक मन जेना केतौ हेरा लगल होनि तहिना विस्मित हुअ लगला। मुदा अपन मनमे तँ ठहकबे कएल जे जँ मनमोहन भाय सन जीबठगर लोक गाम-समाजमे भऽ जाए तँ गाए-महींसक कोन बात जे दूध-ले ऊँटो आ सवारी-ले हाथियो तँ पोसिये सकैए। मुदा एकटा मनमोहने भायटा एहेन भऽ जेता तइसँ गनगुआरि सन हजार टाँगबला समाज थोड़े चलि सकैए। फेर मनमे भेल जे अंकमे, गणनामे एकक महत जहिना इकाई-दहाइसँ अरब-खरब धरिक गणनाक आधार बनैए, अक्षरक 'अ' पर ठाढ़ भेल वर्णमालापर पोथी-पुराण ठाढ़ अछि तहिना ने एक मनुखक आचरणक अनुकरण करैत एक्के-दुइये किसान समाज तँ सेहो कइये सकै छैथ। बजलौं -

"अहाँ तँ अपन गोटी लाल केलौं भाय, मुदा हमरा ते कोनो ससे-बस ने चलैए। परोपट्टाक सभ गामक यएह हाल अछि तखन पशुपालन..?"

हमर बात जेना वाण जकाँ मनमोहन भाइक छातीमे लगल होनि तहिना छाती चहैक गेलैन। अपन जिनगीक परदाकेँ फाड़ैत बजला-

"रमण! तोरा मन हेतह कि नहि हेतह, मुदा जँ बिसरियो गेल हेबह तँ मोन पाड़ि दइ छिअ।"

ओना, गप चिड़चिड़ी जकाँ टीकमे नइ लगल मुदा तँए कबछुओ जकाँ नइ लगल सेहो बात तँ नहियेँ अछि से तँ लगबे कएल। ओही विसविसीमे मुहसँ निकैल गेल-

"एहनो केतौ बिसरल होइ। खाली अहाँ विषयकेँ चालियौ ने, लगले सिनेमाक रील जकाँ आगुए-आगू कहए लगब।"

हमर बातसँ जेना मनमोहन भायकेँ किछु सह भेटलैन तहिना बजला- "बीस बरख पहिलुका बात छी, ताबे तूँ खूब चेष्टगर नइ भेल

रहअ।"

गर भेटल। बजलौं- "ओ तहियेक काज छी, भऽ सकैए बिसरियो गेल हएब।"

मनमोहन भाय बजला-

"जखन बी.ए.मे पढ़ैत रही तहियेक काज छी। गाम-गाममे हमरा सन-सन लोक माने बी.ए. तक पढ़ल-लिखल बेकती गोटि-पंगरा छल। बाबू बिआहक चर्च चला देलैन। कुमारि कन्याक सभ उपास-पूजा दहेजक बाढ़िमे दहा गेले अछि। दू लाख रुपैआपर बाबू हमरो बिआहक गप-सप्प पक्का केलैन।"

अनेरे मुहसँ निकैल गेल-

"बीस बर्ख पहिने दू लाखक कारोबार भारी छल!"

मनमोहन भाय बजला-

"पिताजीक विचारसँ दहेजक नामपर मनमे थोड़े कचोट भेल। मुदा संकट तँ भारी छेलए-हे।"

तामसपर जहिना सभ बकैए, तहूमे पाइयक तामस तँ गहुमनो साँपक बीखसँ तेज होइ ते अछि, तैठाम की करितौं। बजा गेल-

"भइ गति साँप छुछुन्दर केरी।"

मुस्की दैत मनमोहन भाय बजला-

"डाकैनियेसँ बीख उतैर गेल!"

जिज्ञासा भेल, पुछलयैन-

"से केना यौ भाय साहैब?"

मनमोहन भाय बजला-

"पिताजीकेँ फुटमे–माने असगरेमे–कहलयैन, हम असगरे भायमे छी, हमरो जे बेच लेब ते मुँहमे आगि के देत?"

हमर बात सुनि पिताजीकेँ जेना देवलोक तक सुझलैन तहिना बजला-

“बिआह हेतह तोहर, नइ हेतह तोहर..! अनेरे हम किए बीचमे बेपाइन हएब। जे मन फुरह से करिहह। बाप छिअ अपना ऑंखिये खाली घरमे पुतोहुटा कैँ अबैत देखी।”

पिताजीकेँ सुढ़िआइते कहलयैन-

“बाबू, ऐ पाइसँ हम गाए कीनि पालन करब, जैपर जिनगीकेँ ठाढ़ करब। वएह दहेजक गाए छी। जे बीस बर्खक जिनगी नीक जकाँ निमाहि चुकल अछि। मुदा ऐबेरक समयमे केतेकेँ जिनगी टुटि कऽ पताल पहुँच मटियामेट भइये जाएत।”

❑ *शब्द संख्या : 2076, तिथि : 15 अगस्त 2019*

चलती

कालमे दुरकाल एने जहिना कालक विचारमे चिड़चिड़ी घोंसिया जाइए तहिना कुसमय भेने लोकक विचारमे सेहो चिड़चिड़ापन आबिये जाइए। मुदा गाम-समाजमे जँ चिड़चिड़ाएल बोली औत तखन तँ ओइ चिड़चिड़ीक विसविसीसँ बोलीमे सेहो विसविसी जगबे करत। जखने बोलीमे विसविसी आएल तखने एक-दोसरक बीच सम्बन्धमे खटास एबे करत, जखने समाजक मीठगर बोलीक सम्बन्धमे खटगर बोली चलत तखने सम्बन्धमे खट्टापन एबे करत। जँ खटगर बोली-वाणी एहेन दुरकाल समयमे चलत तखन तँ अनेरे ने कटपर सँ कटए लगत जे समाज[28]क लेल शुभ संकेत नहियेँ भेल, तँए मनक दुरकलकेँ दूर हटबैत उनटाक ऽ मुसहरूकेँ कहलिऐ-

"मुसहरू, चलती ठीक छह किने?"

ओना, मनमे सुनटा विचारकेँ रखि उनटा कऽ बाजल छेलौं, मुदा ओहनो शिकारी तँ अछिए जे गाछो परहक वा अकासोक शिकार करैए आ माइटियो वा माइटिक तरक पतालोक शिकार करिते अछि। मुसहरू तेहने शिकारी लोक किसुनपुर गाममे अछि।

पान खाएल मुँहक दाँत छेलैहिये, ललका कमल कहियौ आकि कुमुदनी जकाँ खिलखिलाइत हँसैत मुसहरू बाजल-

"भाय साहैब, की कही..! चलती तँ तेहेन अछि जे ने दिनकेँ दिन बुझै छी आ ने रातिकेँ राति। राति-दिन एकबट्ट केने रहै छी।"

अपना काजे मुसहरू ऐठाम गेल रही। काज ई छल जे बाढ़िक आइ तीसम दिन छी आ धानक बीआक पचीसम दिन छी, खेतक पानि सेहो रोपाउपर आबि गेल अछि, तँए ओही-ले टेकटरक भाँजमे मुसहरू ऐठाम गेल छेलौं।

मुसहरू चालिस बर्खक परिपक्क जुबक। समाजक केते गोरे मुसहरूकेँ काजक भुतलग्गु सेहो कहै छथिन मुदा कथनी (कहबी) सँ बेसी भारी मुसहरूक अपन करनी वसूली छै जइ नापसँ नपैत अपन जिनगी सम्हारिये कऽ चलि रहल अछि। बजलौं-

“मुसहरू, तोंहू देखिते छहक जे भगवान–कोसी-कमला महरानी गामक-गामकेँ उजाड़ि लगा देलैन अछि..! तखन तँ मनुख रहैत जँ अपनो सभ अपन जानकेँ हाथमे लैत जीवन नइ बँचाएब तब तँ हाथी-घोड़ा जकाँ बनवासी भइये जाएब किने?”

मुसहरू हमर बात केते बुझलक, कोन रूपमे बुझलक से तँ ओ जानए मुदा ललका भैंटक फूल जकाँ मुस्की दैत बाजल-

“भाय साहैब, समाजक लिए तँ हमहीं नइ हमर बापो -दादा अपन जीवन देने छैथ। तैठाम हम केना कट-कुट करब।”

ओना, मुसहरूक बात सुनि मनमे भेल जे कट-कुटक माने पुछि लिऐ। मुदा शुभ-मुहूर्त्त बना, माने दहाएल धानक खेतीकेँ पुनर्जन्मक खियालसँ टेकटरक भाँजमे आएल छी। तँए अनेरे कट-कुट करैक अखन कोन जरूरी अछि, अपन काज अगुआ कऽ करैक अछि...।

बजलौं-

“मुसहरू! कहबी छै जे ‘गे मौगी तोहर अँगने केते’ बुझिते छहक जे दू घन्टा जँ तूँ हमरा टेकटर दऽ दइ छह , तँ खेतक जोतक– माने खेतक कदबा करैक प्रक्रिया– माने खेतीक एक प्रक्रियाक काज सम्पन्न भऽ जाएत। पछाइत-ले पछाइत बुझल जेतइ।”

अपन आमदनी देखि आकि हमर कहबी सुनि मुसहरू मने-मन खुशी होइत बाजल- “भाय साहैब, दू घन्टाक बदला चारियो घन्टा अहाँ-ले तैयार छी, मुदा समय निसचित नइ कहब जे कखन करब।”

मुसहरूक बात सुनि मनमे एते तँ बिसवास जगिये चुकल छल जे जइ काजे डेग उठेलौं ओइ काजक आशा बनि गेल, जँ ओ बारह बजे रातियेक पछाइत करए सेहो बड़बढ़ियाँ। आब कि बरदबला हरसँ कदबा हएत जे भूत देखि कऽ बरद भड़कत। आब तँ लोहाक टेकटर भेल, लोहा भीर भूत थोड़े औत जे गाड़ीक चक्का रोकत। बजलौं - “मुसहरू, बारह बजे रातिक पछाइत जे राति होइए ओ कालक राति भऽ जाइए, तइसँ ने ते डरै छह?”

हमरासँ तेज गतिक मुसहरूक कर्मभूमि छइ। बातकेँ बतंगर हमरा जकाँ भरि दिन करैबला मुसहरू नइ अछि। जानसँ भारी अपन कर्मभूमिक निर्माण कऽ नेने अछि। जइ पाछू अपन समैयक डोर बान्हि चलैए। ओना, बहुधंधी लोक मुसहरू अछिए, तँए गप-सप्प केने बिना काजक खाँचो नहियेँ बैसत, तइले समय सेहो रखनहि अछि। मुदा ओकरो, माने गप-सप्पक समयकेँ निरधारि ओ समरूप बनौने अछि। मुसहरू बाजल- “भाय साहैब, अहाँ काजसँ निचेन भऽ कऽ दोसर काज करू, माने खेतीक प्रक्रियाक ऐगला काज करू। रातियो तक अहाँक काज सम्पन्न कइये कऽ छोड़ब।”

विदा होइत-होइत मनमे उपैक गेल जे यएह मास दिनक समय छी, माने बाढ़ि एना तीस दिन भेल, भरि दिन लोक, हाथक काज बाधित भेने, ताश भँजैए आ कि अपन दुखनामा दोसरकेँ कहबो करैए आ सुनबो करिते अछि, मुदा वाह रे मुसहरू..! काजक संग अपन बोलियो (गपो-सप्प) केँ बान्हि समेटने चलि रहल अछि। तँए मुसहरूक बात मिसियो भरि कठाइन आकि अमताइन नइ लागल। कनी-मनी मीठगरे लागल। मन मीठगर भेने मीठगर विचारो उपकल।

विचार ई उपकल जे जैठाम फोरलेन, सिक्सलेन रोड अछि तैठाम तँ अनेरे जाइ-अबैक रस्ता रहने कोनो संकट नहियेँ अछि मुदा जैठाम एकपेरिया रस्ता अछि आ दुनू दिससँ जँ राही औत तखन केकर बाट के देत। माने के बगैल जाएत आ केकरा रेलबे स्टेशनक गाडी जकाँ सिगनल भेटत?

मुदा लगले अपने मन औगुता गेल जे अनेरे बान्ह-छान्हक विचारमे, अखुनका काजक ताक छोड़ि, दुनियाँक चौराहापर वौआएब नीक नहि, अखन अपन जे जीवनक ताक अछि ओ ई अछि जे जखन खेतक कदबाक बिसवास बनि गेल तखन किए ने रोपैनकेँ[29] आगू बढ़बैत रोपनिहारोक बन्दोवस करैमे लगि जाइ...। अनभुआर जकाँ तँ जीवन नइ अछि जे आमक पीपही रोपिते पाकल आमक सुआद लिअ लगब। अखन जइ रोपनियाकेँ कहि देबै जे तीन दिन लगातार काज अछि, काल्हिसँ अहाँ रोपैन कऽ दिअ। भलेँ हमर काज दूर किए ने रहए मुदा ओकरा मनमे (रोपनिहारक श्रमिकक मनमे) एते तँ आशाक आश लगिये जाएत किने जे एहेन दुरकाल समयमे तीन दिन जीबैक जोगार भेट गेल। गुन-धुनमे आगू बढ़ैत गेलौं...।

लग्गा चारियेक करीब जखन आगू बढ़लौं कि पैछला बात पुन: कुदि कऽ मनक आगूमे आबि गेल। आइब ई गेल जे एकबटिया बाटमे जँ दुनू दिससँ बटोही अबैत रहत आ जँ दुनू अनभुआर रहत , गौंआँ-घरूआमे परिचित लोक अपन भैंसुर-भावोक चश्मा लगा लेत मुदा अनभुआर-ले प्रश्न तँ अछिए। भलेँ अहाँ-ले अपरिचित हुअए मुदा तँए अपन समाज ऐपर विचार नइ केलैन सेहो नकारल नहियेँ जा सकैए। भलेँ अहाँ एकरा बैसारीक विचारे किए ने मानिऐ, मुदा विचारकर्ता तँ विचार केनहि छैथ। समैयक मोड़मे पड़ि भलेँ ओ विचारो मोड़ा किए ने गेल हुअए मुदा मोड़ाइत-मोड़ाइत टुटल तँ नहियेँ अछि...।

वापस घरपर अबिते मनमे मुसहरूक परिवार नाचि उठल। पाँच

साए परिवारक अपन गाम किसुनपुर, पनरह-सोलह जाइतिक बस्ती अछि। मुसहरू जइ परिवारसँ अबैत अछि ओइ जाइतिक अन्न-पानि, समाजक किछु जातिसँ कटल छलैहे। जइ जाइतिक बीच मुसहरू अपनाकेँ बुझैए वा मानैए ओइ जातिक पाँच परिवार बस्तीमे। पाँचमे तीन एक्के परिवारसँ भेने एक्के बात-विचार, चालि-ढालिक लोक, बाँकी दू परिवारमे मुसहरू आ दोसर मुसहरूओ परिवारसँ पछुआएल। माने खेत-पथारक रूपेँ, तँए गाम-घरमे भौरी-बट्टा करैत जीवन-जापन करै छल, मुदा पुत्र विहीन परिवार भेने परिवारक अन्त भऽ गेल।

मुसहरूक पिता- जीतन मिडिल पास केलाक पछाइत अमानत सेहो सीखने। जीतनक परिवार तीन-चारि बीघा जमीनक। दोसर तीनू परिवार दस बीघा जमीनसँ ऊपरबला। तैसंग समंगरो। एकठाम घर रहितो जीतन ओइ तीनू परिवारसँ जेतबे सटल तेतबे हटलो। सटल ऐ मानेमे जे पाबैन-तिहार, काज-उदममे खेनाइ-पीनाइक संग जरन-मरणमे सटल रहबे कएल मुदा आर्थिक स्तरपर हटल रहल। अमानत पढ़ला पछातियो जीतनक अमीनगिरी नइ चलल। तेकर कारण योग्यताक कमी नहि, मुदा मुँहसच्च एहेन जे जोरसँ बाजि नहि पबै छल। कुदै-फानै-तोड़ै तान सहए ने राखए दुनियाँक मान। से जीतन नइ छल तँए गाम-समाजमे अमीन भऽ अमानतसँ हाथ धोइ लेलक। मुदा माइयक मुख्तियारी परिवारमे, अमीन बेटाकेँ माए केना हर जोतैत आकि रौदमे कोदारि पाड़ैत देखत। आखिर माइयोकेँ तँ अपन माश्चर्यक ममत्व केना नइ रहत।

जीतन अमीन जखन टुटल घरकेँ तोड़ि दोसर घर बान्हए लगल तखन अपन घराड़ीक सीमा-सरहद सेहो मिलबए लगल कि अपन धराड़ीक सीमा कनी घुसैक कऽ आगू बढ़ि गेल। आगू बढ़िते जीतन माएकेँ कहलक- "माए, अपन घराड़ी अढ़ाइ धुर कम अछि।"

अमीन बेटा, जमीनक मुद्दा, माए जीतनकेँ कहलक- "बौआ, चुपचाप–माने परोछमे–सीमा घुसकाएब नीक नइ हेतह तँए जेकरा दिस

गेलह अछि, तेकरा बजा कऽ सोझहामे नापि कऽ देखा दहक।”

जीतन सएह विचार सरूपलाल लग जा कहलक-

“हौ सरूप, तोरा बाड़ी दिस (माने घराड़ीमे) अढ़ाइ धुर हमर जमीन जाइए, से चलि कऽ नापी देखि जमीन छोड़ि दएह।”

समाजमे सभ दिनसँ अहिना होइते आबि रहल अछि। जे धनीक लोकक घर लग गरीब लोकक घराड़ी धीरे-धीरे मेटाइत-मेटाइत मेटाइये जाइए।

सरूपलाल जीतनक बात सुनि बाजल- “बुड़ि कहींके..! ई बड़ घराड़ीबला छैथ आ हम बिनु घराड़ीबला छी, जे हिनका जमीनमे हम घर बन्हने छिऐन।”

मुँहसच जीतन मिड़मिड़ा कऽ बाजल-

“सरूप, हम कहाँ कहै छिअ जे तोरा घराड़ी नइ छह।”

तैबीच सरूपक दोसरो-तेसरो समांग पहुँच गेल। समांगकेँ देखिते जेना सरूपकेँ सनकी उठि गेल। जत्र-कुत्र जीतनकेँ गरियाबए लगल।

मुँहदुबर जीतन ससैर कऽ पाछू दिस, माने अपना घर दिस बढ़ए लगल। जीतनक माइयो, स्त्रियो आ पाँच बर्खक बेटा मुसहरू सेहो डेढ़ियेपर ठाढ़ सभ किछु देखि रहल छल। जीतनकेँ पाछू ससैरते सरूपक छोट भाए झटैक कऽ आगू बढ़ि जीतनकेँ थापरे-थापर मारए लगल। जे जीतनक माइयो, स्त्रियो आ बेटो देखि रहल छल मुदा अपनाकेँ नि:सहाय बुझि कियो ने किछु बाजल आ ने किछु कइये सकल। जीतनक वृद्ध माए, एहेन-एहेन अनेको घटना जीवनमे अनकर-अनकर देखनहि छेली तहिना पत्नी सेहो केता देखने, मुदा मुसहरूक जीवनक पहिल घटना छल। बाल मन मुसहरूक तँए घटनाक की प्रभाव मुसहरूपर पड़ल, से तँ मुसहरूए जानए मुदा भरिसक जीवनमे बिसरल नहि।

बेटाक माइरिक सोगसँ दमयन्ती[30] रोगा गेली। छबे मासक

पछाइत ओछाइन पकैड़ लेली, जे दू साल बीतैत-बीतैत मरि गेली। एक तँ अहुना जीतन बच्चेसँ खिदखिदा शरीरक छल मुदा माएकेँ ओछाइन पकड़ने परिवारक काजमे आरो दबा कऽ पीचाए लगल। मुदा तैयो हूबा करैत पत्नीकेँ संगी बना परिवारक गाड़ीकेँ खिंचैत रहल। पाँच-छह बर्खक पछाइत जीतन अपनो मरि गेल।

संजोग बनल मुसहरू सेहो एगारह बर्खक भऽ गेल आ गामक स्कूल–लोअर प्राइमरी–सँ टपल। मुसहरूक माए सोझमतिया, मध्यम श्रेणीक परिवारक महिलाक जे स्थिति अछि, तेहने देवसुन्नैर। माने मुसहरूक माए। मुदा जहिना बेटाक कान्हपर भार पड़ने माए सान्त्वनाक बात बजैत जे 'बौआ बाप ने मरि गेलखुन मुदा हाथी सन माए अखन तोरा सोझहामे ठाढ़ छह, तूँ कोनो चिन्ता नइ करह...। भलेँ जिनगीक थपेड़मे थापर खा किए ने मुँह फेर बजैत जे बौआ, हम किछु छी तँ स्त्रीगणे ने भेलौं आ तूँ किछु छह ते पुरुखे ने भेलह।

बारहम बर्ख पुरैत-पुरैत मुसहरू परिवारक सभ काजकेँ अख्िाइस अजमा लेलक जे परिवारकेँ सम्हारि चलि सकै छी। साल भरि मन मारि एकाग्र भऽ मुसहरू हर जोतब, कोदारि पाड़ब, रोपैन, कमठौन इत्यादि गिरहस्तीक सभ काज करए लगल। काजक सूत्र एहेन बना लेलक जे जहिना अपने तहिना पत्नी आ तहिना माइयोकेँ संग केने सूत्रवद्ध भऽ सभकियो चलए-चलबए लगल। सालक मेहनत फल अपन रंग परिवारमे देखौलक। सबहक मनमे जीबैक सोलहन्नी आशा जगि गेल। समुद्र मथि तीनू अमृत पीब लेलक।

मुसहरूक मन सेहो आगू दिस तड़पल। एकटा काज अपना सिरे आरो बढ़ा लेलक। टायरगाड़ी कीन लेलक। ओइपर अपने बहलमानी करए लगल। नगद नारायणक आवाहन परिवारमे सेहो भेल। साल बीतैत-बीतैत, दमकल-बोरिंग लऽ लेलक। खेतीक रंग सेहो बदललै आ बोरिंगक लाटमे जेते खेत पड़ै छल, तइ सभ खेतक पटौनीक आमदनी

सेहो बढ़ल।

लम्बाइमे मुसहरू तीन-पौने-तीन हाथक हएत। मुदा तेते सक्कत देह छै जे साढ़े तीन हाथक कोन गप जे चारियो हाथक आदमीक संग अरि कऽ ठाढ़ भऽ जाइए। अखन तक जे मुसहरूक विचारमे धनक पाछू दौड़ब रहल ओहो दौड़ब आगू बढ़ल, आ तैसंग मनमे ईहो जगलै जे धनवाने भेने नइ होइ छै, गुणवानो हुअ पड़ै छइ। तइसँ विचारमे मोड़ सेहो एलइ। तैबीच बेटा मैट्रिक प्रथम श्रेणीसँ सेहो पास केलकै। बेटाक रिजल्ट सुनि मुसहरू असिरवाद दैत बाजल-

"बौआ, मेहनत कर! तोरा हम डॉक्टरी पढ़ैक खर्च देबौ। भलेँ हमर देहक चाम किए ने बिक जाए।"

वएह मुसहरू साल भरि पहिने टेकटर कीनने छल। बारह बजे रातिमे मुसहरू आबि हमर सभ खेत जोति देलक।

❑ *शब्द संख्या : 1770, तिथि : 18 अगस्त 2019*

तीन बुड़िवान

आइ दसम दिन भगताही गामकेँ बाढ़िमे डुमना भऽ गेल। गाम डुमैक माने गामक उत्पादनक साधन, माने खेत-पथार। गाममे नव-नव सड़क बनने घराड़ीक सेखियो बढ़ल अछि आ सुरक्षित सेहो भेल अछि जइसँ घर-अँगना सबहक बँचल रहल मुदा गामक खेतो-पथार आ पोखैरो-झाँखैड़ समुद्र जकाँ एकबट्ट भेल अखनो झलैकिये रहल अछि।

बीचक जे दस दिन बीतल ओ भगताही गामक लोककेँ अनकर बीतल समय देखए, माने दुख-दर्द देखए–मे बीतल। तँए अपन दुख तर पड़ि गेल आ अनकर दुख ऊपर चढ़ि गेल, जइसँ अनके दुखे कनैमे दसदिन बीत गेल। अपन दुखकेँ ओइ आगू–माने आनक दुख-दर्दक आगू–गौण बुझि मनसँ भगौने रहल।

कहब जे भगताही गामबला बड़ उदार अछि जे अनका-ले कानत आ अपना-ले कनबे ने करत..?

मुदा से बात नहि अछि बात ई अछि जे जखन बाढ़िक आगमन भेल आ गामे-गाम सभ डुमए लगल, तही झोंकमे भगताही गाम सेहो डुमि गेल, तँए अपना-ले किए कानत आकि अनके-ले किए कानत। सभकेँ बुझले छै जे सभतरहेँ जखन गाम डुमले अछि तखन यएह ने भेल जे कनी पानिक तरमे सेहो पड़ि गेल। अदौसँ लोक कहैए जे बाढ़िक चढ़ंत अढ़ाइये दिनक होइए, तेसरा दिनसँ पानि टुटए लगै छै जइसँ टुटैत-टुटैत धरतीपर पहुँच जाइए, तइले लोक कनबे किए करत। तोहूमे आब कि

राजा-रजबारक जुग रहल जे लोकक चुल्हिमे पजार नइ पड़त आकि नेपोलियनक जुग रहल जे गामक-गाम उजड़त, आब तँ दू रुपैये गहुम आ तीन रुपैये चाउर भेटै छइ। पाँचे दिन बाढ़िक औरदा छै, तइले कानत किए...।

भगताही गाम से नइ छी। दस दिनसँ जे भगताही गामक लोक कानि रहल अछि ओकर अपन सम्बन्धक कारण अछि। ओ कारण अछि जे नरूआर लग कमलाक छहर टुटल। तहिना सुनिते-सुनैत नरूआरसँ पाछाँ गोपलखा लग सेहो टुटि गेल आ पुबरिया छहर रखबारी लग टुटि गेल।

छहरक पजरवाहिक गाम नरूआर बाँसक छीप एते पानि धड़ाम-दे गाममे खसल, जइसँ गामक खेत-पथारक कोन बात जे घरक छजनी तक डुमि गेल। गाम-घर शहर-बाजार तँ छी नहि, जे दस मंजिला-बीस मंजिला मकानक बस्ती रहत। गाममे तँ बिरले दू मंजिला घर अछि नहि तँ एक मंजिला मकान वा टटघर-भीतघर अछि। ओना, इलाकाक भीतघरकेँ उपटौलक 1987क बाढ़ि, मुदा फुसघरक संख्या अखनो मेटाएल नहि अछि। जँ कियो एक अलंग माने रहैले पजेबाक घर बनेबो केलैन अछि तँ माल-जालक घर आ जरना-काठीक घर अकसरहाँ फुसियेक अछि।

भोर होइत-होइत सौंसे गामक, माने भगताही गामक लोकक कानमे पहुँच गेल जे 'नरूआर डुमि गेल!' कमलाक छहर टुटि गेल। नरूआरक अधिकांश लोक सम्पर्क-पता विहीन भऽ गेला।

'छहर टुटि गेल, गाम डुमि गेल' एक्के-दुइये सौंसे गामक कानमे पहुँचते पारिवारिक सम्बन्ध रहने, पारिवारिक सम्बन्धक माने भेल कथा-कुटुमैतीक संग सभैती-जवारी भोज-भातक सम्बन्ध सेहो अछिए। कोनो परिवारमे ऐ गामक बेटी तँ कोनो परिवारमे ओइ गामक बेटीक सासुर अछिए। एहने सम्बन्ध सभ गामक अछिए। सम्बन्धित पताक सभ सूत्र

बन्न भऽ गेल छल। मात्र एन-एच-सँ गाड़ी चलि रहल छेलइ। छहर एन.एच.सँ दच्छिन थोड़ेक हटिकऽ टुटल छल।

सम्बन्ध सूत्र नइ बनने गामक स्त्रीगणक बीच झौहैर (कानबक) उठल। से उठल सौंसे गाम। सभ जातिक बस्ती जहिना नरूआरो आ नरूआरक बाढ़िसँ प्रभावित इलाको अछि तहिना भगताही सेहो अछिए। सभ जातिक सम्बन्ध बनल अछिए। केते लोक कानत। एक-एक गोरे दस-दस, बीस-बीस गोरेले तइयो कानिये रहल छल। से कानब स्त्रीगणेक बीच नइ रहल, पुरुख-पात्रक बीच सेहो पहुँच गेल छल। सम्बन्धक विच्छोह सबहक मनमे छेलैन्हे। सबहक अपन-अपन सम्बन्ध रहने सभ अपन-अपन सम्बन्धसँ जुड़ल आवाजमे कानए लगल।

1960-61 इस्वी मनमे एकाएक आबि नचए लगल। जनता कौलेज खुजि गेल छल जेकर पढ़ाइ केजरीवाल हाइ स्कूलक उत्तरबरिया चारि कोठरीमे चलि रहल छल। केजरीवाल हाइ स्कूलमे नीक-नीक शिक्षक छला, नीक माने पढ़बैयोमे आ योग्यतोमे, जइसँ अखुनका मधुबनी जिला आ ओइ समैयक मधुबनी सब्डिवीजनमे मधुबनी शहरक दूटा स्कूल 'वाटशन आ सुरी हाइ स्कूल' छोड़ि पूबारि पार माने मधुबनीसँ पूरब, ओना गनल-गुथल हाइ स्कूल छल, मुदा जे छल तइमे झंझारपुरक केजरीवाल हाइ स्कूलक पढ़ाइ नीक मानल जाइ छल। पूवारि पारक हाइ स्कूलमे झंझारपुरसँ पूब, तमुरिया, मधेपुर आ डेओढ़क हाइ स्कूल सेहो छेलैहे। बाँकी स्कूल (हाइ स्कूल) पछाइत खुजल। कमला धार झंझारपुरसँ सटले पच्छिम बहैए। सभ साल भलैं नहि मुदा किछु-किछु सालक अन्तरालमे बाढ़ि आबियो रहल छल आ अखनो अबिते अछि। कमला धारक पछबारि पारक गाम सबहक विद्यार्थी केजरीवाल हाइ स्कूलमे पढ़ै छला जइसँ अपन दर्जनो संगियो छला आ दर्जनो चिन्हारक संग सम्बन्धित सेहो छथिए।

पछबरिया छहरक टुटब सुनि अपनो मन दहैल उठल। मन बाजल-

“बाप रे..! केते गामक सुरत बिगैड़ जाएत, जान-मालक संग धन-सम्पैतिक बर्बादीक सीमा नइ रहत, गाम छोड़ि केते लोक बाहर चलि जाएत..! मुदा उपाइये की, कइये की सकै छी..!”

मनमे नरूआर अबिते पचीसोसँ ऊपर चिन्हार चेहरा सिनेमाक रील जकाँ एका-एकी नजैरिक सोझमे आबए लगला। की भेल हेतैन हुनका सबहक परिवारमे..! ओना, अखन तक कोनो निसचित जानकारी नहि भेल छल, किए तँ गाम-गामक रस्ता बन्न भऽ गेल छल। इलाका जेना बुझि पड़ि रहल छल जे सौंसे धारे बनि उत्तरसँ दच्छिन दिस पानि बहि रहल अछि...।

एका-एकी संगी सभपर सँ नजैर बढ़ैत राजेन्द्र बाबूक–प्रो. राजेन्द्र झाक–परिवारमे पहुँचल। राजेन्द्र बाबू जनता कौलेजमे हिन्दीक प्राध्यापक, ओना स्वर्गवास भऽ गेला, अपने कौलेजक छात्र रहि चुकल छी तँए दुनूक बीच गुरु-शिष्यक सम्बन्ध अछिए। ओना, राजेन्द्र बाबूक जेठ बेटा हाइ स्कूलक संगी सेहो छैथ। तँए परिवारमे दू पीढ़ीक सम्बन्ध अछिए। नमहर परिवार राजेन्द्र बाबूक छैन्हे, ओइ परिवारक की भेल अछि, अखन तक किछु ने बुझि पेब रहल छी।

गोपलखा लग टुटने गोपलखासँ दच्छिनो आ पच्छिमो गाम सबहक चेहरा बाढ़ि बिगाड़िये देलक अछि। मेंहथक[31] दशा ओहन बनि गेल अछि जे गोपाल झा ‘गोपेश’क घर-अँगना, पोखैर-गाछी एकबट्ट भेल अछि...।

जेना-जेना दिन बीतए लगल तेना-तेना लोकक कानब आ नोरक संग दुखो-बेथा कमए लगल। जहिना गाममे अखन तक सभ बुझै छल जे हमर सर-कुटुम मेटा गेला तहिना एका-एकी भाँज लगने माने जानकारी भेने धीरे-धीरे गामक लोकक मनमे आशा जगए लगल जइसँ समाजक विचारमे संक्रमण हुअ लगल। मुदा जहिना कुटुम-परिवार दिससँ आशा जगए लगल तहिना अपन गाम आ अपन परिवारक छैत-बिछैत भेल

स्थिति सेहो मनमे घर करए लगल जइसँ मनक पीड़ामे कमी तँ नइ आएल, कारण जेते आन-आन गामक कमल तेते अपन गामक बढ़ि गेल। मुदा पीड़ाक रूप बदलल जरूर अछि।

पीड़ाक रूप बदलने पीड़ित सबहक विचार गोलबन्द हुअ लागल। गोलबन्द होइक दोसरो कारण भेल, दोसर कारण भेल जे आन-आन केते गामक बाढ़ि सटैक गेल छल आ केते गाम अखनो डुमले अछि, ओही डुमा गाममे भगताही गाम सेहो अछि। बान्ह-सड़क भेने गाम तेना घेरा गेल जे पाइनिक निकास होइते ने अछि, जइसँ जहिना बाढ़िक समय गाम झलकै छल तहिना अखनो अछिए। तैबीच सरकारी सहायताक चर्चा जोर पकैड़ लेलक। जइमे छीना-झपटी सेहो जोर पकैड़ समस्याकेँ बढ़बैये लगल।

बैसारी लोक, बैसारी ऐ मानेमे जे किसानी जिनगी जीबैबला गाम, खेत-पथार डुमने काजे टुटि गेल तइसँ बैसारी, एक्के-दुइये अपन गामक बाढ़िक पानि दिस विचार उठौलक। फाँसीपर चढ़ल लोक जहिना 'हँ'केँ 'नइ' आ 'नइ'केँ 'हँ' कहैए, तेना भगताही गामक लोककेँ नहि भेल। ओना, बाढ़िक फाँसी तँ नहि मुदा फँसरी नइ लगल अछि, सेहो केना नइ कहल जाएत से तँ लगले अछि, तँए अपन-अपन लगल फँसरी दिस सबहक नजैर जाएब सोभाविके अछि, मुदा से गेल सबहक नजैरमे।

बिनु कहनौं सौंसे गामक लोक बैसैत-बैसैत एकठाम बैस गेला। समस्या सबहक सोझहेमे गबाही दइ छेलैन जे घर-अँगना छोड़ि बाड़ी-झाड़ीसँ लऽ कऽ बाध धरि पानिसँ एकबट्ट भेल अखनो अछिए। संजोग भेल जे कहैले सौंसे गामक लोक छला मुदा सौंसे गामक माने एतबेटा नहि होइए जे घरे-घर सभ परिवारक छला। मुद्दाक (समस्या) हिसाबसँ सेहो समाजक निर्माण होइए आ जे ओइ मुद्दासँ प्रभावित होइए ओइ बीच एक समाजक निर्माण सेहो होइए। मुदा अखन तँ बाढ़िक मुद्दा अछि

तँए सबहक भेबे कएल।

संजोग भेल जे बैसारमे सभ पहुँचल छला आ अपने पछुआएल छेलौं। मुदा नव पीढ़ीकेँ झोंक चढ़ल छल , एकटा नवजवान दौड़ल आबि कहलक-

“काकाजी, अहाँकेँ बजाहैट होइए , चलियौ।”

ऊपर-निच्चाँ बजौनिहारकेँ हियासलौं तँ बुझि पड़ल जे थानाक होमगार्डक सिपाही जकाँ खलिया बन्दूक पीठपर लटकौ ने अछि। तँए किछु बाजि नहि पेब रहल छेलौं। समाजक लोक बैसल अछि , बाढ़िक मुद्दा अछि, जइसँ सभ आक्रान्त छीहे।

विदा होइत-होइत ओइ जुबककेँ कहलिऐ-

“बौआ, तूँ नवतुरिया छह तँए कहि दइ छिअ। जेते दूर धरि विचार सोझ रहत तेतेकाल बैसारमे रहबह, आ जखने विचारमे टेंढ़-बौगली हुअ लगतह तखने उठिकऽ चलि एबह।”

मुदा वाह रे नवपीढ़ी, जुबक बाजल-

“से नइ हुअ देब..!”

नवजुबकक बात सुनि मन तँ सोल्होअना बिसवाससँ तँ नहि भरल मुदा बिसवासक जनम मनमे नइ भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। से तँ भेबे कएल।

बैसार लग पहुँचते हिया कऽ देखलौं तँ बुझि पड़ल जे बैसारमे ओहने लोक सभ अछि जे धुरफन्दा खेलसँ कात रहैए। ओना, गाममे सरकारी खराँतक कुकुर-कटौज शुरू भऽ गेल छल जइमे अधिकांश चालू-पुरजा लोक सभ लगल रहए तँए ओ सभ बैसारमे नहियेँ छल।

बैसारक रूप-रंग देखि मनमे एते बिसवास तँ जगिये चुकल छल जे नव पीढ़ीक लोकक संख्या बेसी अछि तँए जरूरत अछि समयानुकूल

विचारकेँ प्रकट करब। मुदा अनभुआर-अनाड़ी जुबक, जँ आगू भऽ कऽ बाजब- जे ओकरा सबहक मनमे अखन प्रवेश नइ केने अछि तखन तँ अनेरे ने सभ हूँहकारी भरत। मुदा हूँहकारीक परिणामो सोल्होअना नीके हएत सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। किए तँ समाजक संहारकर्ता जे अछि ओ अनेरे ने हल्ला करत जे 'फल्लाँ धिया-पुताकेँ सिखा-पढ़ा कऽ गाममे अगराही लगबैए..!'

विचारि कऽ देखी तँ दुनू दिस नीको अछि आ दुनू दिस अधलो तँ अछिए। फेर हुअए जे समाजक बीचक बैसार छी तखन समाजक सूरत जे अपना नजैरिये देखि रहल छी, ओ जँ नइ राखी तँ हमरा सन-सन लोकक खगते की गाममे अछि। जेहने रहने तेहने बिनु रहने, बात बरबैरे भेल। अपन दायित्व पूरा करैक खियालसँ बजलौं -

"भने सभ एकठाम भऽ समाजक कल्याणक विचार करए बैसलौं अछि। राधेश्याम, गौरीकान्त, सिंहेसर, मनमोहन इत्यादि नवजुबक ने छैथ, कौलेज धरिक ज्ञान तँ हिनके सभकेँ ने छैन। तँए नव ढंगे नवसिरासँ समस्याक विचार हुअए।"

मुँहक बात हमर अन्तो ने भेल छल कि बिच्चेमे मनमोहन बाजि उठल-

"अपना गामक पानि घेरैमे सोल्होअना नक्शा बनौनिहार इंजीनियरक बुड़िपना छी..!"

राधेश्याम सेहो हूँहकारी दैत हामी भरि देलक। एक्के-दुइये साँझ-भोरक नढ़ियाक समूह जकाँ सौंसे बैसार हुअ लगल। सबहक रूखि देखिऐ तँ बुझि पड़ए जे एकमुहरी विचार बनि रहल अछि, मुदा इंजीनियरक काजक की बुड़िपना छै से खुजबे ने कएल। नजैरपर बात चढ़बैमे अपनो मनमे शंका हुअए जे कहीं रक्का -टोकी ने शुरू भऽ जाए...। असथिरसँ बजलौं-

"मनमोहन, तोहर विचार एकतरहक छह। मुदा दस मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। आरो गोरेक की विचार छैन सेहो सभ ने बजता।"

भूगोल पढ़ैत एकटा बचहने जुबक बाजल-

"इंजीनियर गणित पढ़ि कऽ बनै छैथ, मुदा जे समस्या अछि ओ भूगोलक छी। गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदानमे अपना सभ छी। जेकर ढलान उत्तरसँ दच्छिन मुहेँ अछि। मैदानक उत्तर भागमे पहाड़क समूह अछि, जइमे पाथरो छै, माटियो छै आ पानियोँ छइ। ओ पहाड़सँ निकैल मैदान पार करैत बंगालक खाड़ीमे मिलैए।"

जुबकक विचार मनमे जँचल। होइतो अहिना छै जे अनभुआर कोनो वस्तु सोझहामे एने नीक-अधला अनेको विचार लोकक मुहसँ निकलए लगैए। रंग-रंगक लोक रंग-रंगक विचार...। अन्तो-अन्त राधेश्याम बाजल-

"देखिते छी जे गामक पूबमे कोसी नहैरकेँ चौरमे खसा देलक, जे पानि ऊपर जेबे ने करै छै, ओहो पानि आबि कऽ गामकेँ हेला दइए। आइ जँ पाइनिक ढलानक हिसाबसँ नहरे आकि सड़के बनैत तँ एना नइ होइत। सोल्होअना बुड़िपनी इंजीनियरक छी।"

इंजीनियर घोषित होइत-होइत सड़क बनौनिहारो आ गामक जबावदेही लेनिहारोक चर्च उठि गेल।

एक गोरे बाजल-

"इंजीनियर की कोनो बैस कऽ सड़क बनौलक, ओ तँ गामेक ठीकेदार बनौलक। ओकरा ऑखि नइ छेलै जे गाममे केना -केना पाइनिक आगमन अछि आ केना-केना निकास अछि।"

तैपर बिच्चेमे एक गोरे बाजल-

"ठीकेदारे कि करवनो सड़क लग रहैए, भरि दिन गाड़ीपर घुमल

घुरैए। लेबर सबहक काज छी।"

लेबरक नाओं सुनिते दोसर गोरे उतारा दैत बाजल - "लेबरो कि लेबर छी जे आगि-पानि बुझत। ओ तँ निमूधन छी, जेना कहि जोति देबइ तेना बहैत रहत।"

बैसारक विचारकेँ बहकैत देखि राधेश्याम बाजल-

"बीतलाहा काज आ बीतलाहा बातपर जेते घंघौज करब तेते पियौज जकाँ छोलिके भेटत जे गुद्दा केतौ ने भेटत। जरूरत अछि आइक परिवेशमे ओकर समाधान करब।"

तइ बिच्चेमे एक गोरे बाजल-

"ठीकेदारकेँ एतबो ने नेत-धरम रहल जे पाइनिक निकास बना गामक नीक करैत।"

राधेश्याम बाजल-

"ई बुड़िपना तँ ठीकेदारक भेबे कएल।"

तइ बिच्चेमे एक गोरे बाजल-

"गामक जे मुखिया आ वार्ड मेम्बर अछि से कथी-ले। किए ने बुझलक?"

❑ *शब्द संख्या : 1901, तिथि : 21 अगस्त 2019*

एकाधिकारी जाति

बाढ़ि एला पछाइत सुन्दरपुर गामक सुरखी एते बदसुरत भऽ गेल जे भुतलग्गू लोक जकाँ देहमे खून बुझिये ने पेब रहल छल...। मन पाछू दिस उनैट तकलक तँ अदौसँ अबैत गाम-घर आ ओइमे रहनिहार लोककेँ एहेन-एहेन बिपैत केता बेर आएल हएत। केतबो मनुखक आकि आने-आन जीव-जन्तुक महाकाल आएल तैयो तँ आइयो अछिए आ आगुओ रहबे करत...।

मन कहलक जँ बाढ़िमे डुमि कऽ मरि गेल रहितौं तँ एते तँ मरैकाल जरूरे बुझि नेने रहितौं जे ई दुनियाँ ठकहरबा अछि, जिनगी भरि खटा लेलक आ मरै बेरमे, सनेसो रूपमे किछु ने देलक..! मुदा से तँ भेल नहि, भलेँ अधमरू किए ने भेल होइ मुदा रहलौं तँ जीविते। ई जीवितपन केना जिन्दा रहत तइले तँ किछु करैये पड़त।

अखन तक जे मन उचैट कऽ दुनियाँसँ कात भेल संयासी बनैक विचार आबि रहल छल तेकरा त्यागि मनमे रोपि लेलौं जे नइ! दुनियाँ तँ जहिना सभ दिन जीव-जन्तुसँ भरल रहल अछि तहिना ने आगुओ रहत, तहीमे तँ सबहक ने अपन-अपन अधिकारो छै आ कर्तव्यो तँ छइहे। हम कि कोनो नोकरीदार लोक छी जे आदेशानुसार काज करब, अपन जीवनक संग परिवारो आ समाजोक जीवन अछिए...।

मनमे जेना जीबैक जीब[32] जागल। लगले दरबज्जापर सँ उठि ऑगन गेलौं आ पत्नीकेँ कहलयै न- "बजारक कोन-कोन काज अछि, से

एकटा पुरजापर लिखा दिअ।"

ओना, आइ धरि एना कहियो ने पत्नीकेँ पुछने छेलिऐन, तँए कनी अचरजमे पत्नी पड़िये गेल छेली। मुदा लगले कि मन फुरलैन कि नहि, आकि फुरलैन जे बाढ़िक दुआरे एना कहलैन , से वएह जनती। ओना, आजुक जे नोकरिहाराक बेवहारमे बदलाव आएल अछि जे जँ बाजार जेबाकाल पत्नीकेँ पुछबैन जे बाजारक की खगता अछि, तँ ओ सोझे मुहेँ बजती जे 'सभ कथुक खगता तँ अछिए..!' भलेँ घरमे ओहन-ओहन वस्तु किए ने नष्ट भेल जाइत हुअए। मुदा ओहनोकेँ खगताक सूचीमे जोड़बे करती। भलेँ घरमे हजार जोड़ साड़ी आ हजार जोड़ जूत्ता-चप्पल किए ने हुअए...। ओना, नोकरिहारोक जीवनक बीच केतेको रंगक खाढ़ी सभ अछिए।

सुशीलाक मनमे से सभ किछु ने उठलैन। बीस दिनक बाढ़ि सुशीलाक करेजकेँ डोला देने छैन। जइसँ दिन भोगबकेँ बिसैर दिन काटब बुझाए लगली अछि...। सुहरदे मुहेँ सुशीला बजली-

"अखन जेहेन बेर पड़ल अछि तेहने ने बुधियो आ बेवहारो बना कऽ चलब नीक हएत, नहि तँ पौल जाएब किने।"

अपना जनैत पत्नी अपन पल्ला झाड़ि लेली, मुदा अपने जखन खेबा-पीबाक वौस दिस देखी तँ अपन इज्जत मेटपन दिस बढ़ैत देखि पड़ए। माने ई जे बाजारमे जइ दोकानपर जाएब आ डेढ़-साए-दू-साएमे अँचार आ चटनी कीनै छेलौं तैठाम जँ बनि याँ कहत जे ओइसँ नीक ब्राण्ड विदेशी कम्पनी आएल अछि, से तँ अहीं सभ ने पसीन करबै। तखन की उत्तर देबइ..?

मुदा लगले मनमे आबि गेल जे सभदिना जे खाइ-पीबैक खर्चक वस्तु अछि तेतबे ने एहेन समयमे जरूरी भेल आकि एक बिपैत भगवान देलैन आ ओहूसँ नमहर बिपैत अपने आराइध ली..!

चुपचाप आँगनसँ निकैल दरबज्जापर आबि कहात् जिनगीकेँ कटैत हिसाब जोड़ि मनमे बैसेलौं जे वस्तुओकेँ कटौती करब आ कीमतोमे कटौती करबैक अछि, तखने एहेन समयसँ अपनाकेँ बँचा सकै छी...।

करीब आठ बजे भिनसुरका समय, साइकिलमे झोड़ा टाँगि बाजार विदा भेलौं।

सुन्दरपुर आ सघनपुरा अगले-बगलक गाम छी। सुन्दरपुरसँ आगू सघनपुरा गाम अछि। अपन गामक सीमापर पहुँचबे केलौं कि रामखेलावनकेँ पाछूसँ खूब रेसमे साइकिलसँ अबैत देखलौं।

सड़कक कातेमे आमक गाछ अछि, ओही गाछक निच्चाँमे ठाढ़ भऽ रामखेलावनक रस्ता देखए लगलौं। दसे लग्गा पाछू राम खेलावन छल, साइकिलसँ अबैमे केते देरिये लगैत, आएल। मुँहक दुनू ठोर कारी भेल, जेना फुफरी उड़ैत होइ तहिना रामखेलावनक चेहराक रूप देखलिऐ..!

मनमे भेल जे जखन दुनू गोरे साइकिलसँ छी तखन किए ने रस्तो काटब आ गपो-सप्प करैत चली। मुदा लगले फेर भेल जे साइकिलक जरकीनमे केते बात सुनबो करब आ केते बात नहियेँ सुनब।

साइकिलसँ उतैर गाछक निच्चाँमे बैसलौं। तमाकुलक बहाना बनबैत बजलौं-

“रामखेलावन, जखन बजार विदा भइये गेल छी तखन पहुँचबे करब किने। गामपर काजे कोन अछि जे औगताइये रहत।”

अपन मनक बेथाक कथा कहैले कि दिनक दुरदिनपन कहैले रामखेलावन मानि गेल आकि की कहैले मानलक से तँ ओ जानए, मुदा हमर बात सुनिते मानि जरूर गेल। लगमे आबिये गेल छल, ओहो साइकिलसँ उतैर आगूमे साइकिल लगा लगमे बैसल।

रामखेलावनकेँ लगमे बैसते, तैबीच अपनो तमाकुल-चुन निकालि

तरहत्थीपर औंठासँ दू-तीन मर्दन दऽ देने छेलिऐ। जइसँ थोड़-थाड़ निशाँएल हवो नाकमे लगिये गेल छल तँए मन कनी-मनी फुहराम हुअ लगल छल। ओना, मनमे विचार घुरियाइये रहल छल जे पहिने आन दोसर गप नहि बाजि रामखेलावनकेँ पुछिऐ जे ‘रामखेलावन, मुँहक सुरखी किए एना बेदरंग भेल छह!’ मुदा मनमे ईहो हुअए जे तेज गतिसँ साइकिल चला कऽ आएल अछि, जँ कहीं कहि देलक जे हमर मुँहक सुरखी बेदरंग देखै छी आ अपन ऐनामे नइ देखलौं अछि ..! तखन तँ अनेरे कहा-कही हुअ लगत। से नहि तँ जहिना भूमिपर घर बनौनिहार पहिने भूमिक भूमिका बन्हैए आ पछाइत घर ठाढ़ करैए, तहिना अपनो अपने लगसँ भूमिबन्धन करैत बजलौं -

“रामखेलावन! बुझह तँ अन्तिमे भेँट छी, आब नइ जीब।”

ओना, अपना जनैत ठिकिया कऽ, ठिकियाकऽ माने भेल लक्ष्य बनाकऽ, निशान साधिकऽ, नइ बाजल छेलौं, बाजल अही उद्देश्यसँ छेलौं जे जखने अपन दुखक बात आगू भऽ कऽ बाजब तँ पाछूसँ रामखेलावनो अपन जिनगीक दशाक दिशाक दशा सेहो बाजत जइसँ जे बुझए चाहै छी, तेकर पता चलि जाएत। मुदा ई नहि बुझि पेब सकल छेलौं जे अखन रामखेलावन चारू पायासँ हारल-मारल अधमरू भेल, मुँहचुरु अछि, जइसँ मनमे दुनियाँक आन कोनो राग-विराग जीवित नहि रहि गेल हेतै, मात्र अपन अन्तिम क्षणक क्षिनाएल शेष जिनगीक सीमापर पहुँच गेल अछि तँए मनमे विचारक मात्र एतबे जगह शेष छइ।

तमाकुल बनब सेहो तैयारे जकाँ होइपर छल मुदा विचार कोनो उठल नहि, तँए मनमे कनी खुदबुदी छेलाए-हे। मिचरा-मिचरा कऽ तरहत्थीपर तमाकुलमे रगर दइये रहल छेलौं जे क हुना रामखेलावनक मुहसँ अपन जिनगीक क्रिया सोझहामे आबए..!

रामखेलावन बाजल- “भाय साहैब! गामे-समाजक मुँह देखि जीब

रहल छी, नइ तँ अपन साँस तँ कनी दिन टिकबो करैत जे घरवालीक साँस कहिया ने टुटि गेल रहितैन।”

अपना जनैत रामखेलावन अपन सभ बात बाजि गेल मुदा घाट परहक घटल कोनो विचार स्पष्ट नहियेँ भेल। ओना, मनमे एते ठना गेबे कएल जे हाट-बाजार कि केतौ पड़ा जाएत, अखन नइ जाएब, बेरेमे जाएब। मुदा एक जिनगीक वृतान्त तँ एक संसारक निर्माण करैए..! ओकरा ने पहिने जानब अछि। बजलौं-

“बौआ, की कहबह! ऊपर चढ़ि-चढ़ि देखा तँ घर-घरक एक्के लेखा..! जहिना तूँ बजलह जे समाजेक मुँह देखि जीवित छी तहिना ने तोरे सबहक मुँह देखि हमहूँ जीवित छी।”

रामखेलावनक जन्म ओइ जातिमे भेल छल जे बरेबकेँ बाड़ी-फुलवारी बना माली जकाँ दिन-राति ओइमे लगल रहैए। संस्कारसँ भरल-पुरल लड़का रामखेलावन मैट्रिक पास अछि। अपन जाइतिक एकाधिकार पूजी–जाइतिक हिसाबसँ विभाजित उद्यम–केँ रामखेलावन परेख चुकल अछि। बाजारक जीवित रूखि देखि मने-मन लक्ष्य बेध चुकल छल जे अपन बपौतीक इतिहासकेँ पुनर्जीवित करब। मुदा वाह रे समाज, मैट्रिक पास रामखेलावनक क्रिया, जिनगीक कर्मकेँ देखि यत्र-कुत्र बजैत- ‘पढ़े फारसी बेचे तेल, देखू भाइ कर्मक खेल।’

अपन जाइतिक समाजमे पहिल मैट्रिक पास रामखेलावनकेँ गाम-समाजक धिकारैत बोली बरदास नइ भेलइ। गामसँ भगैक विचार मनमे जगि गेलइ। बुझल छेलैहिये जे गामसँ बाहर जँ कियो अधलो-सँ-अधला वृत्ति अपना पाइ कमाइ छैथ तँ ओ विदेशीए कमाइ ने भेल। एहेन मानसिकता समाजक बनियेँ गेल अछि। घरसँ भगैक दू रस्ता अछि, पहिल परिवारक विचारसँ आ दोसर परिवारक बिनु विचारे।

जखन परिवारक विचार रामखेलावनक मनमे उठलै तखन माता-

पिताक विचारपर मन गेलइ। मन जाइते विचार उपकलै जे बाबू तँ नहियोँ किछु बजता- माने 'हँ-हूँ'; किए तँ गाममे हमरा सन-सन पढ़ल-लिखल सभकेँ बाहरक कमाइक आशा देखबे करै छैथ, मुदा माए तँ सुनिते पेटकान लाधिये देत जे जखन सुति-उठि बेटाक मुस्कुराइत मुँह नइ देखब तखन दुनियाँमे हमरा-ले रहिये कि गेल जइ देखैले अनेरे धरतीकेँ अजवाड़ने रहब।

किछु करैत रामखेलावनकेँ किछु बनियेँ ने पेब रहल छल। बनबो केना करैत, एक दिस नव मनुख–माने बिनु पढ़ल-लिखलसँ पढ़ल-लिखल मनुख–बनि समाजमे रामखेलावन ठाढ़ भेल अछि तँ दोसर दिस कर्महीन मनुख बनैक संभावना सेहो बनियेँ रहल छेलइ..! जँ बंशगत पेशासँ जुड़ि गाममे रहै छी तँ हँसियापर रहए पड़त- माने हँसीक पात्र बनि जीबए पड़त। जँ बाहर जाइ छी तँ परिवारो आ समाजोक ओ शक्ति निकैल रहल अछि जइसँ परिवार-समाज शक्तिशाली बनत।

एकाएक रामखेलावनक मनमे तेसर विचार जागि उठलै। ओ उठलै जे ने माइये-बाबू केतौ पड़ाएल जाइ छैथ आ ने गामे-समाज, किए ने किछु दिन निकैल दुनियाँकेँ देखिऐ.. !

रामखेलावनक मन जेना सक्कत बनए लगलै जे गामसँ चलि जाएब। ऐठाम गामसँ जाइक दोसरो माने अछि जे समाज जइ स्तरक बनि गेल अछि ओइ स्तरसँ आगू उठि समाजक जीवनकेँ परिष्कृत रूपमे आगू करैक विचार।

राता-राती घरसँ भगैक विचार रामखेलावन करए लगल। जँ कियो बुझि जेता तँ माए-बाबूकेँ कहबे करथिन, जइसँ बिच्चेमे बाधा उपस्थित भऽ जाएत। मुदा घरसँ कोन मुहेँ निकलब ईहो तँ प्रश्न अछिए। चारू दिस चारि रंगक दुनियाँ अछि। जखन केतौ दिन होइ छै तखन केतौ रातियो तँ होइते छइ..!

कोनो गर रामखेलावनक मनमे बनियेँ ने रहल छल। जहिना आफत-असमानी एने माए-बाप लोककेँ मोन पड़ै छै आ भगवानोक नाम बिसैर जाइए तहिना रामखेलावनोकेँ भेल। भेल ई जे अपना सबहक बाप-पुरुखा कमाइले ढाका-बंगाल तक जाइ छला। जे पूभर अछि। केते गोरे कहबो करै छैथ जे हमर बेटा 'पूभर' कमाइले गेल अछि। पूभरक माने भेल- नेपालक पुबरिया भाग, बंगालक ढाका, जे बंगलादेशक राजधानी छी, तैसंग कामरूप कामाख्या तक जाइ छला।

पुबरिया पार मोन पड़िते रामखेलावनक मनमे सिलीगोड़ीक अस्पताल आबि गेलइ। ओतए तक तँ देखले अछि, मौसीक संग अस्पताल गेल रही। सिलीगोड़ीक ओहो चौमैत तँ देखले अछि जैठामसँ बस सिक्किम, भूटान, दार्जिलिंग, आसाम, कलकत्ता इत्यादि सभठामक चलैए...। चारि बजे भोरमे निर्मलीक गाड़ी अछि। तीन बजे पहिल पहरक तेसर घड़ीमे, गाम छोड़ि निकैल जाएब। आठ बजे तक सुतनिहार छीहे, खोजो हएत तँ नअ बजेक बादे ने। ताबे तँ हम अपन सीमा कि जे देशोक सीमा टपि नेपालक सीमामे पहुँच राजबिराज-ककरभिट्टाक बसमे बैसल रहब।

सिलीगोड़ी पहुँचलापर रामखेलावन खेलक। एते सस्ता, अपना घर लग, जे देहातसँ सटल बाजार मधुबनी अछि, तेतो नहि अछि जेते सिलीगोड़ीमे रामखेलावनकेँ बुझि पड़लै। खाइतेकाल दोकानदारसँ रामखेलावन नोकरी-चाकरीक विषयमे बाजल- "भाय साहैब! नोकरी करए एलौं हेन से केतौ ठौर... ।"

सड़कपर रहनिहार दोकानदारक मनमे छेलैहिये जे जँ गिरहस्तीकाजक अनुभव हेतै तँ किसान ऐठाम दिसक रस्ता धड़ा देबइ..!

दोकानदार बाजल- "बौआ, कोन-कोन काज करैक लूरि छह?"

अखन तक गाम-घरमे एहेन परिवेश बनले अछि जे जाधैर बच्चा

पढ़ैए ताधैर माता-पिता अपन घर-गिस्हस्तीसँ अलग रखैक चेष्टा करै छैथ। मुदा ओहीमे परिवारक हिसाबसँ विचार सेहो चलैए। पानक खेतीपर आश्रित परिवार जे बिनु केनहु अनेक रंगक काज देखियो कऽ जहिना नजैरपर चढ़ि जाइए तहिना नजैरपर चढ़बैत रामखेलावन बाजल-

“पानक खेतीक सभ लूरि अछि।”

ओना, किनुआ सर्टिफिकेटबला जकाँ रामखेलावन नहियेँ छल। एते मनमे आबिये गेल छेलै जे जहिना बोलियो-वानि आ पानियोँ कनी-मनी हटलपर बदैल जाइए तहिना काजो करैक ढंग बदैलते छइ। जँ केतौ काज करैमे उनटा-फेर हएत तँ कहबै जे हमरा सबहक गाममे अहिना होइ छइ। ऐठाम तँ अहीठामक बेवहार ने चलत तँए अहॉंक लूरि सीख लेब अछि।

दोकानदार जलपाइगोड़ीक रस्ता रामखेलावनकेँ धड़ा देलक।

जलपाइगोड़ीमे पानक खेती देखि रामखेलावनक मनमे जगि गेल जे, भने घरसँ पड़ेलौं। ऐठाम कमा क ऽ अपन कमाएल पूजियो बना लेब आ विकसित लूरि सेहो सीख लेब।

दू सालक लगनक मन रामखेलावनकेँ एक नव इंसान रूपमे देखलक। मने-मन जिनगीकेँ अजमा, जिनगीकेँ अजमबैक माने भेल-काजोक हिसाबसँ आ लागत-खरचोक हिसाबसँ...। रामखेलावन गामेमे जीविकोपार्जनक रस्ता देखए लगल।

दू सालक पछाइत रामखेलावन गाम आबि एक बीघा पानक खेती नव तकनीकसँ केलक। पहिल साल बीत चुकल छेलै जइसँ किछु-किछु आमदनी सेहो भइये गेलइ। दोसर साल सम्पन्न खेती, सम्पन्न खेतीक माने भेल पानक पातक नीक फड़ी देखि रामखेलावनक मन मानि चुकल छल जे अनेरे लोक दुनियाँ जा-जा वौआइ-ढहनाइए। जँ नीक लगन, नीक लगनक माने भेल समयकेँ परेख बिसवासक संग कोनो काजकेँ समरपित

ढंगसँ करैमे डेग बढ़ा हाथ लगाएब। मुदा भेल अपन लगनक मुहूर्त। प्रकृति प्रदत्तक प्रभाव अपन मुहूर्तसँ प्रवल अछि।

बरेबक सभ उपाय केलाक पछातियो रामखेलावनक सभ किछु नष्ट भऽ गेल। जैठाम जिनगीक कर्मशील जीवन प्रकृति प्रकोपसँ ढंस भऽ जाइ छै तैठामक जिनगी, अपन बनल-बनाएल सभ किछु नष्ट भेल देखैए।

रामखेलावन बाजल- "भाय साहैब, एक तँ ओहिना मनुखक जिनगीक नमरक तरमे पड़ल छी, तैपर जेतबोपर जिनगीकेँ अनने छेलौं सेहो एक हिसाबे मेटा गेल।"

रामखेलावनकेँ दुनियाँक (बाहरक) हवा किछु लगिये गेल छल तँए बजै-भुकैक लूरि थोड़-थाड़ भइये गेल छेलइ। रामखेलावनक बात अधा-छिधा बुझबो केलौं आ अधा -छिधा नहियोँ बुझलौं। ओना, अपन मनक भरास निकैलते रामखेलावनक मन रनैक कऽ चनैकिये गेल छल जइसँ मुँहक रूखिमे सेहो कलितपनसँ हरितपन-ललितपन आबिये रहल छल। बजलौं-

"से की रामखेलावन?"

रामखेलावनक मनमे जेना अपन अरजित जीवन उतैड़ गेल होइ तहिना बाजल-

"भाय साहैब, बजारक काजे जाइ छेलौं, आब अखन नइ जाएब। बेरुपहर बुझल जेतइ।"

रामखेलावनक विचारमे अपनो मनक सोंगर लगबैत बजलौं -

"धीरे-धीरे रौदो बढ़बे करत। तहूमे बाढ़ि परहक रौद छी, बेसी तीख हेबे करत। भने तोंहू बेरुके विचार केलह, हमहूँ सएह करब।"

विचारक सह पेबिते रामखेलावन अपन दुखक मोटरी खोलि बाजल- "भाय साहैब, गामसँ जखन जलपाइगोड़ी पहुँच अपन बदलल

जिनगीकेँ निरमाएब शुरू केलौं, तैठामसँ कहै छी।”

बजलौं-

“सुनह! जखन पत्नीकेँ कहि बजार विदा भेल छी तखन जँ दुपहरियामे पहुँचब तँ दोखी बनब। मुदा कनी -मनी जे बिलम्मो हएत तँ कहबैन जे पाइयक जोगारमे समय लगि गेल, बेरुपहर जाएब।”

हमर बात रामखेलावन जेना सोल्होअना बुझि गेल हुअए तहिना बाजल-

“भाय साहैब, तेकर चिन्ता माने समैयक चिन्ता मिसियो भरि नहि करू। एकदम मुड़कट्टीमे कहि दइ छी।”

बजलौं-

“भूमिका बान्हब छोड़ि मूल बात खाली बाजह।”

रामखेलावन बाजल-

“भाय साहैब, नेपालक रस्तासँ जखन जलपाइगोड़ी पहुँचलौं, तैबीचमे नेपाल गेबो केलौं आ निकलबो केलौं , तखन जहिना अपन बाप-दादाकेँ पानक चास छेलैन तहिना पानक चासमे काज करब शुरू केलौं।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“रामखेलावन, लोक तँ काजोकेँ छोट-पैघ बुझैए..!”

रामखेलावनक मन जेना फरिच भऽ गेल होइ तहिना मुस्कियाइत बाजल-

“समाजमे भगवान बुझैबला डॉक्टर तँ लोकक लघी-बिरतीक संग पीजो-पाज आ परो-पैखानाकेँ हाथसँ उठा नाकसँ सूँघि जीबैक जोगार करै छैथ, हम-अहाँ कोन खेतक सीम-भँट्टा छी।”

हँसी लगि गेल। बजलौं-

"बिसरजन दिस बढ़ह..!"

रामखेलावन बाजल-

"ठीक्कापर बरेबक काज शुरू केलौं। दू सालक कमाइसँ बीघा भरि गहींरगर खेतकेँ भरि पानक खेती केलौं। अपनो सालो भरिक काज सृजित भऽ गेल आ ओते आमदो होइत जइसँ परिवार चलैत। मुदा बाढ़िमे सभटा दहा गेल..!"

❑ *शब्द संख्या : 2198, तिथि : 24 अगस्त 2019*

अपन करखन्ना

नअ अगस्तसँ पनरह अगस्तक बीच जहिना देशमे आजादीक उत्साहक उत्सव धुमधामसँ मनौल गेल तहिना अपनो गाम, गामे धरमपुरमे सेहो मनौल गेल। केतेको कार्यक्रम (राजनीतिक) गाममे भेल। ओना, जेते कार्यक्रम धरमपुरमे भेल तेते चौबगली गाममे नहियेँ भेल, मुदा तँए ईहो नहियेँ कहल जा सकैए जे धरमपुरकेँ अंगरेजक चाङ्गरसँ त्राण भेटल आ आन-आन गामकेँ नहि भेटल। सभकेँ भेटल, सौंसे देशकेँ भेटल।

धरमपुरमे विशेष उत्साहसँ उत्सव ऐ दुआरे मनौल गेल जे देशक आजादी अनैमे धरमपुरबलाक विशेष योगदान रहल। विशेष योगदान ई रहल जे देशक आजादीक आन्दोलन 1939 सँ 1942 इस्वीक बीच जे आन्दोलन तूफानी दौड़मे चलल तइमे धरमपुरबलाक योगदान परोपट्टाक सभ गामसँ बेसी रहल। जहिना धरमपुरबला जी-जानसँ देशक आजादीक बीड़ा-पान गाँधीजीक संग 'नमक आन्दोलन'सँ उठौलक तहिना देशक आजादीक अन्तो-अन्त बनौने रहल। केतेको लोक (आन्दोलनी) जहल गेला, केतेको आन्दोलनी मारि खेलैन, आगि तँ सौंसे गामे लगौल गेल जइमे सबहक घर जरबे केलैन, तँए कि धरमपुरबला पाछू हटल? नहि। जहिना देशक आजादीक बीज मनमे रोपलक तहिना ओकरा मनमे जोगौने, केतबो प्रतिकूल समय किए ने एलैन मुदा 15 अगस्त 1947 इस्वीकेँ तिरंगा झण्डा सौंसे गाम फहरेबे केलैन । तहियेसँ 9 अगस्तसँ 15

अगस्तक बीच आजादीक उत्सव साले-साल मनौलो जाइत आएल अछि आ अहूबेर मनौल गेल।

देश आजाद भेने लोकक मनक आजादी सभकेँ भेटबे केलैन। मनक आजादी भेटने अनेको रंगक विचार जिनगी जीबैक सेहो सबहक मनमे उठबे केलैन। जइसँ अनेको रंगक विचारक जिनगीक गाम धरमपुर बनियेँ गेल अछि।

ओना, विचारक दौड़मे अनेको रंगसँ जिनगी जीबैक कला मनमे जगलैन मुदा समाजक निरमित ढाँचा जे ठाढ़ अछि तइमे केतौ-केतौ विघ्न-बाधा कम बाधिक केने अछि मुदा केतौ-केतौ एहेन बाधित अछि जे जहिना अन्हार रातिमे हाथक-हाथ नइ सुझैए तहिना सेहो अछिए। खाएर जे अछि; सभ-ले सबहक बीच अछि।

मोटा-मोटी तीन रंगक विचारक ढाँचाक निर्माणक गाम धरमपुरबलाक मनमे जगलैन। जइसँ समाज निर्माणक तीन दिशा वा रस्ता उठि कऽ गाममे ठाढ़ भेल। जेकर फला-फल अखनो भेटिये रहल अछि। देखिते छी जे जहिना कियो ओहन सेनानी बनि अपन सभ किछु मातृभूमिकेँ समर्पित केलैन तहिना अखनो धरि निमाहि रहला अछि। जखन स्वतंत्रता सेनानीकेँ पेंशन रूपमे किछु मानदेय भेटलैन तँ ओ नइ लेलैन। अपन मातृभूमिक सेवा बरकरार रखलैन। कियो पेंशन लेबो केलैन, हुनको संग अनेको विषम परिस्थिति पैदा लेलकैन, तँए ओ वाध्य भऽ गेला। मुदा सभसँ लाजिमी तँ ओ अछि जे आजादीक आन्दोलनमे शासनक (अंगरेजक) संग मातृभूमिक रक्षककेँ भक्ष्य बना भक्षण केलैन ओ स्वतंत्रताक ऐगला दस्ताक सेनानी अपनाकेँ मानियोँ रहला अछि आ कहबो तँ करिते छैथ।

तीन विचारधारामे एक विचारधारा स्वावलंबी जीवनक अछि। स्वावलंबी जीवन बना जीबैक विचार सबहक मनमे एहेन धारणा बनि

गेल छैन जे अपन जिनगी अपन हाथ-मुट्ठीमे रखि चलने जीवन शान्तपूर्ण चलैए। जइसँ समाजक विचारमे स्वपनक विचार जगिते अछि। जाधैर समाजमे स्वपनक विचार प्रवल नहि हएत ताधैर प्रवल समाज बनि केना सकैए। ओना, विचार करब एक बात भेल आ बेवहारमे आनि चलब दोसर तँ सेहो भेबे कएल। गप-सप्पक क्रममे एकबट्ट कए किए ने बाजि ली मुदा वैचारिक आ बेवहारिकक जे इतिहास अछि ओकरो तँ नकारि नहियेँ सकै छी।

पनरह अगस्तक तेसरा दिन धरिमे जे गामक आन्दोलनी माहौल छल, धीरे-धीरे शान्तिमे विलीन होइत-होइत आइ चारिम दिन सोल्होअना विलीन भऽ गेल। साढ़े-पाँच-पौने-छह बजे करीब परो-पैखाना आ टहलैयोक खियालसँ दच्छिन मुहेँ विदा भेलौं। गामक विचित्र चित्र बाढ़िक झमारसँ टुटल देखि मन तड़ैप गेल। यएह आजादीक फल पचहत्तैर बर्ख बीतला पछातियो भेट रहल अछि..! टोलसँ निकैल बाधक सीमामे पहुँच गेल छेलौं। ओना, बाध दिसक माने बाध जाइबला रस्ता अखनो पानिक दुआरे बन्ने अछि, मुदा उत्तरसँ दच्छिन मुहेँक जे पक्की सड़क अछि ओ बँचल अछि। तेहीपर दच्छिन मुहेँ जा रहल छेलौं कि दस लग्गा आगू बढ़लापर तनुकलालकेँ दच्छिनसँ अबैत देखलौं। देखिते मन हलैस गेल।

मन हलसैक कारण भेल जे एहनो दुरकाल समयमे तनुकलाल जीवित ठाढ़ तँ अछिए। चेहरासँ तनुकलालकेँ चिन्ह गेल छेलौं मुदा मुँहक रूखि नहि देखि पेने छेलौं। अपनो आगू बढ़ैत गेलौं आ अपना रस्ते तनुकलाल सेहो बढ़ैत आएल जइसँ दूरीक हिसाबसँ अदहे समयमे दुनू गोरे आमने-सामने जखन भेलौं तखन टुटल मनक विदकल जिनगीसँ त्रस्त भेल तनुकलालक चेहरा देखिते अपनो मन तेते तृषित भऽ गेल जे अनेरे मुहसँ निकैल गेल- "तनुक, मन बड़ टुटल देखै छिअ... ।"

जराएल-पथराएल तनुकलाल सिहराएल मने सिहरैत बाजल-

“काका, भोरमे गामसँ चलि जाएब, सएह भाड़ा-भुड़ी-ले पाइयक ओरियानमे मरमपुर गेल छेलौं।”

तनुकलालक बात सुनिते मन झनैक गेल। झनैकते मन झनझना उठल जे बाप रे तनुकलाल सन जीबठगर लोक जखन हारि मानि गामसँ पड़ाइपर राजी भऽ गेल तखन गाममे रहि के सकैए। जखन गाममे रहनिहारेक अभाव भऽ जाएत तखन गामक भाव के बुझत..!

विचारसँ तनुकलाल अपन विचारक लोक। अपन विचारक लोकक माने भेल जे जहिना अप्पन विचारो, काजो आ जिनगियो अछि तहिना तनुकलालक सेहो अछि। एकठाम बैस घन्टा-घन्टा भरि अपन खेती-पथारीक गपसँ लऽ कऽ परिवार-समाज धरिक गप-सप्प करिते छी। कम ऑट-पेटक परिवारक तनुकलाल। मात्र सत्तरह-अट्ठारह कट्ठा जमीन। सेहो जमीन ने नेपलिया लग्गाक नापक आ ने अलपुरिया लग्गाक नापक। पचही परगनाक नाप, जे साढ़े छअए हाथक होइए। पैंतीस-छत्तीस बर्खक उमेर तनुकलालक। एतबे उमेरमे तनुकलाल माता-पिताक जिनगी पार लगबैत अपन पाँचटा बाल-बच्चाक संग सात गोरेक परिवार अखनो चलाइये रहल अछि। बजलौं -

“तनुकलाल, आइ जँ तोरेटा बाढ़िक उजाड़ि लगौलकह आ आन-आनकेँ बसहि केलक, सेहो बात तँ नहियेँ अछि, तखन तँ गाममे सभसँ गहनमरू तूँ छहे जे..!”

हमर बात तनुकलालक करेजकेँ जेना डोला देलक। करेज डोलिते एक दिस बाढ़िमे डुमल गाम तनुकलाल देखए लगल तँ दोसर पाशापर अपनाकेँ विचलित बैसल देखि बाजल-

“काका, बरसातक मौसमक आगमन अबैत देखि अपन सोल्होअना–शारीरिक-आर्थिक–दुनू शक्ति लगा चुकल छेलौं। ओना,

खेतीक बढ़वारि देखि मन तुष्टसँ सन्तुष्ट सेहो भइये गेल छल, मुदा भेल जअमे बाढ़िक तेहेन पाथर खसल जे चकनाचूर कऽ देलक।"

तनुकलालक बात सुनि ओते रोमांचित नइ भेलौं , जेहेन बात छल, किएक तँ जहियासँ बाढ़ि आएल तहियासँ सौनक घनघोर घटाक घनघोर बर्खाक बून जकाँ समस्यो आ समाधानो ठाढ़ होइक[33] विचार बरसिये रहल छल जइसँ कानमे भथान जकाँ भइये गेल छल। बजलौं -

"तनुकलाल, तूँ अपने समझदारक समझदारी रखै छह तँए तोरा हम की कहबह। हँ, तखन एते जाबे जामवन्त जकाँ–माने जहिना हनुमान अपन शक्ति बिसैर जाइ छला आ जामवन्त मोन पाड़ै छेलैन–मोन पाड़ि देबह ताबे अपन शक्तिक संचरण थोड़े हेतह।"

हमर बात सुनि जहिना त्रेता जुगक बानर-भालू कोनो नव विचार वा नव कला सुनै-देखैले राम दरबारमे दुनू कानो आ आँखियो ठाढ़ करै छल तहिना तनुकलाल सेहो आँखि-कान ठाढ़ करैत बाजल-

"काका, की कहब मन टुटि-टुटि कऽ, माने अपन ठाढ़ जीवनकेँ खसैत देखि-देखि तेना टुकड़ी भऽ भऽ झड़ि रहल अछि जे गाममे एक्को क्षण विलमब जेना काटि रहल अछि।"

तनुकलालक विचार सुनि अपनो मन मानि गेल जे तनुकलाल तेहेन अस्त्रसँ आक्रान्त भऽ गेल अछि जे कोनो सस-बस नहि चलि रहल छइ। तँए जरूरी अछि जे किए ने तनुकलालकेँ गामसँ पड़ाइक जड़ि-मूल पकैड़-पकैड़ जड़ियबैत ओकरा पुन: नव जिनगीक दिशा देखबैत ठाढ़ करी। बजलौं-

"जहियासँ बाढ़ि आएल तहियासँ दुनू बापूतक भेँट -घाँट नहियेँ अछि। हमरा तँ अपने होइ छल जे समाजक मुँह देखब कि नहि। हमरेटा किए, गामक सबहक यएह लीला अछि।"

होइतो अहिना छै जे परिवारमे जँ एकटा रोगी रहल तखन ने

दोसर-तेसरक–परिवारक आन-आन–आशा करत मुदा जखन परिवारमे सभ रोगसँ ग्रसित भऽ जाइए तखन हिसाबसँ एक-दोसराक सेवा सेहो करिते अछि। तहिना जेना तनुकलालक मनमे बुझि पड़ल। बजलौं-

"तनुकलाल, तूँ गामक शान छिअ। दस-दस, बीस-बीस बीघा जमीनबला सभ गाम छोड़ि-छोड़ि दिल्ली-मुम्बइकेँ के कहए जे आनो-आन देश पेटक खातिर पड़ा रहल अछि, तैठाम जँ तूँ बीघासँ निच्चाँ भूमिबला भूपति बनि अपन परिवार ठाढ़ केने छह, एकरा तूँ की बुझै छहक।"

'की बुझै छहक' आकि अपनाकेँ 'भूपति' बुझि से निठाही तँ तनुकलाल जानए, मुदा कानक संग आँखियो जरूर उठौलक। दुनू हाथसँ दुनू आँखि मिड़ैत तनुकलाल बाजल -

"काका, जिनगीक सभ किछु खेतीक पाशापर रखि देने छेलौं, जेकर फल सेहो नीक बुझि पड़ि रहल छल। मुदा अन्ना-गाँहिंस, अन्ना गाँहिंसक माने भेल जे अपना ऐठाम अगस्तसँ बाढ़िक आगमन होइए जे ऐबेर जुलाइयेमे आबि गेल। तँए असावधानीमे आक्रमण–भेने किछु विचित्र स्थिति तँ भइये जाइए, तेहने स्थितिमे फँसि गेल छी।"

तनुकलाल मनमे कर्मोत्साहक शक्ति भरैत बजलौं-

"एकटा बात कहऽ ते तनुक! तोरा सन सहठूल बाल-बच्चा गाममे केते गोरेक अछि। यएह छी माए-बापक, बेटा-बेटीक प्रति सेवा।"

बिनु विचारल विचार व्यक्त करैत तनुकलाल बाजल-

"काका, अहाँ पिता-दाखिल छी तँए अहाँसँ लाथ की करब। जेठ बेटी अछि, ओ सोल्होअना माइयक सीक-लिखक अछि। पढ़ैयोमे तेते तेज अछि जे, खर्चे ने जुमा सकबै, ने ते समाजकेँ ओ देखा दइत।"

बजैत-बजैत तनुकलालक मन जेना बर्खाक पछाइत बुनछेक तँ होइए मुदा वादलक रूखिसँ बर्खाक सम्भावना बनले रहैए तहिना बुझि

पड़ल। जइसँ मनक उदिग्नता सेहो कमैत देखि रहल छेलौं। ईहो भऽ सकैए जे तनुकलालक मनकेँ समाज-परिवारक सिनेह सेहो खिंचैत र हल होइ। बजलौं-

"तनुक, आखिर अपना सभ किछु छिऐ ते पुरुखे ने छिऐ, जखन अपने सभ कोनो आफत-असमानीसँ घबड़ा जेबै, तखन परिवारेक आकि समाजेक स्त्रियोगण आ बालो-बोध केना जीवित रहि सकैए।"

ओना, हमर विचार सुनि तनुकलालक सौंसे देह सिहैर रू इर्यॉ-रूइर्यॉ भुलैक उठलै, मुदा जिनगीक आगूक कटान देखि मन थीरे ने भऽ पाबि रहल छेलइ। तनुकलाल बाजल-

"काका, अखन जे हाथ-मुट्ठीमे छल ओ सभ किछु दॉवपर, खेतीमे ऐ आशासँ लगा देने छेलिऐ जे ऐगला छह मास निचेन रहितौं , से हेरा गेल।"

तनुकलालक विचार सुनि मनमे भेल जे भरिसक तनुकलाल जिनगीक हार-जीतक पाशापर अपनाकेँ हारल सन बुझि पेब रहल अछि। बजलौं-

"तनुक! महाभारतक कथा बिसैर गेलहक जे पाँचो पाण्डव अपन सझिया स्त्री तककेँ पाशापर हारि गेल छला, तैठाम तँ तूँ ओइसँ बहुत नीक छह। भेल तँ छह मासक सम्पैत-पूजी हेराएल, मुदा अपन शक्ति[34] तँ जीवित अछि, तखन हारि मानब[35] उचित हएत।"

हमर बात तनुकलालकेँ रबरबा कऽ आकि कबकबा कऽ नहि धेलक, तखन धेलक की? तँ धेलक रगरगा कऽ जिनगीकेँ बुझब। एते तँ सभ जनिते छी जे जहियासँ धरतीपर मनुखक अवतरण भेल तहियासँ कोनो-ने-कोनो रूपमे हमरो पुरुखा आबि रहल छैथ। भलेँ हजारो भुमकम, हजारो हवा-विहाड़ि, पानि-पाथर किए ने बरिसल हो, तखन आइक सीमापर तँ हमहीं ने छिऐ , तँए हमरो ने ई बात बुझैक, सिखैक,

जीबैक चलैकक भार कन्हापर अछिए...। बजलौं-

“तनुक, कोन एहेन भारी बिपैत कपारपर खसि पड़लह जे एना विचारे चकनाचूर भऽ रहल छह?”

विचारवान तनुकलाल बाजल-

“काका, देखिते छिऐ जे दुनियाँक हवा केहेन बहि रहल अछि जे लोक धनियो पातक चटनी आ अमरोक अँचार बजारेसँ कीनिकऽ आनि खाइए, तैठाम अधासँ बेसी (गामक) लोककेँ अपन मेहनतक तीमन-तरकारी खुअबै छी, ऐसँ बेसी हमरा बुते हेबे की करतै। दस कट्ठा बरसाती बैगनक[36] खेती केने छेलौं।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“वाह..!”

‘वाह’ सुनिते तनुकलालक देहमे जेना नव शक्तिक संचरण भेल हो तहिना बाजल-

“दस कट्ठा बैगने जँ बाढ़िमे दहा गेल तँ दहा गेल, तइ डरे गाम छोड़ि देब।”

बजलौं-

“यएह ने भेल पुरुखक पुरुखपना, एकरे ने उपार्जित करैत रक्षा करैत जीबैक अछि।”

तनुकलाल बाजल-

“दूटा तेहेन आमक गाछ सुखि गेल जे ओकरे बेच कऽ छअ मास गुजरो कऽ लेब आ पूजी सेहो बना लेब।”

❑ *शब्द संख्या : 1704, तिथि : 28 अगस्त 2019*

कथा लेखन क्रम 2017-2019

506. स्मृति शेष- शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017

507. मनकेँ फुसलबै छी- शब्द संख्या : 1023, तिथि : 10 जनवरी 2017

508. चहकल विचार- शब्द संख्या : 4173, तिथि : 20 जनवरी 2017

509. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या : 2312, तिथि : 25 जनवरी 2017

510. बीरांगना : 2- शब्द संख्या : 1992, 29 जनवरी 2017

511. पकिया चेला- शब्द संख्या : 1976, तिथि : 06 फरवरी 2017

512. कान फुटल कप- शब्द संख्या : 1595, तिथि : 09 फरवरी 2017

513. वर्थ डे- शब्द संख्या : 2535, तिथि : 16 फरवरी 2017

514. जानक मोल- शब्द संख्या : 2782, तिथि : 23 फरवरी 2017

515. गामक कटान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 01 मार्च 2017

516. कर्ज- शब्द संख्या : 3252, तिथि : 07 मार्च 2017

517. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 11 मार्च 2017

518. अपन गारि अपन दुआरि - शब्द संख्या : 2546, तिथि : 17 मार्च 2017

519. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017

520. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 31 मार्च 2017

521. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या : 2619, तिथि : 7 अप्रैल 2017

522. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या : 2100, तिथि : 11 अप्रैल 2017

523. जारैनक दुख मेटा गेल - शब्द संख्या : 2465, तिथि : 17 अप्रैल 2017

524. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या : 3775, तिथि : 26 अप्रैल 2017

525. हरवाहि- शब्द संख्या : 2784, तिथि : मजदूर दिवस (01 मई) 2017

526. क्रान्तियोग- शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017

527. उचितवक्ता- शब्द संख्या : 3461, तिथि : 19 मई 2017

528. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या : 3607, तिथि : 24 मई 2017

529. विघटन- शब्द संख्या : 3419, तिथि : 31 मई 2017

530. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या : 3456, तिथि : 06 जून 2017

531. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 11 जून 2017

532. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 23 जून 2017

533. मर्माहत- शब्द संख्या : 2509, तिथि : 29 जून 2017

534. गुणहीन- शब्द संख्या : 3138, तिथि : 6 जुलाई 2017

535. समझौता- शब्द संख्या : 2280, तिथि : 13 जुलाई 2017

536. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या : 2696, तिथि : 19 जुलाई 2017

537. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाई 2017

538. नमहर फेरा- शब्द संख्या : 2902, तिथि : 29 जुलाई 2017

539. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 02 अगस्त 2017

540. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या : 2279, तिथि : 06 अगस्त 2017

541. बेटपन- शब्द संख्या : 3054, तिथि : 11 अगस्त 2017

542. छातीक हार- शब्द संख्या : 2291, तिथि : 16 अगस्त 2017

543. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या : 2986, तिथि : 22 अगस्त 2017

544. पैंतीस साल पछुआ गेलौं - शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017

545. पुरान साड़ी- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 2453, तिथि : 24 अक्टुबर 2017

546. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टुबर 2017

547. ऐँठ साड़ी- शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017

548. किछु ने फुरैए- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 12 नवम्बर 2017

549. महिरम- शब्द संख्या : 1984, तिथि : 20 नवम्बर 2017

550. बेर परहक भदवा- शब्द संख्या : 2726, तिथि : 29 नवम्बर 2017

551. सड़क-कातक खेत- शब्द संख्या : 2722, तिथि : 10 दिसम्बर 2017

552. दोहरी हाक- शब्द संख्या : 2700, तिथि : 21 दिसम्बर 2017

553. पाइक इज्जत- शब्द संख्या : 1999, तिथि : 05 जनवरी 2018

554. सेहन्ता- शब्द संख्या : 2014, तिथि : 11 जनवरी 2018

555. राक्षसक झड़- शब्द संख्या : 1649, तिथि : 15 जनवरी 2018

556. बेरपर- शब्द संख्या : 2585, तिथि : 19 जनवरी 2018

557. केकरा-ले केलौं- शब्द संख्या : 2649, तिथि : 23 जनवरी 2018

558. स्वाभिमानी जिनगी- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 28 जनवरी 2018

559. बाबाक बाग-बगिया- शब्द संख्या : 3089, तिथि : 3 फरवरी 2018

560. अब-तब- शब्द संख्या : 2076, तिथि : 7 फरवरी 2018

561. अगिलह- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 11 फरवरी 2018

562. कुकुरपन- शब्द संख्या : 2229, तिथि : 28 फरवरी 2018

563. हेराएल जिनगी- शब्द संख्या : 3107, तिथि : 5 मार्च 2018

564. आशापर पानि फेर गेल- शब्द संख्या : 2447, तिथि : 9 मार्च 2018

565. देखल दिन- शब्द संख्या : 2592, तिथि : 27 मार्च 2018

566. इज्जत उतैर गेल- शब्द संख्या : 1905, तिथि : 30 मार्च 2018

567. संकट- शब्द संख्या : 2595, तिथि : 4 अप्रैल 2018

568. एकतीस मार्च- शब्द संख्या : 2814, तिथि : 10 अप्रैल 2018

569. गेल माघ उनतीस दिन बॉकी- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 15 अप्रैल 2018

570. बापक चलैत- शब्द संख्या : 2606, तिथि : 20 अप्रैल 2018

571. बेटाक चलैत- शब्द संख्या : 2889, तिथि : 25 अप्रैल 2018

572. प्रवल इच्छा- शब्द संख्या : 2301, तिथि : 30 अप्रैल 2018

573. ठका गेलौं - शब्द संख्या : 2052, तिथि : 18 जून 2018

574. हारि-जीत- शब्द संख्या : 3190, तिथि : 24 जून 2018

575. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या : 1095, तिथि : 27 जून 2018

576. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या : 1608, तिथि : 01 जुलाई 2018

577. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या : 2014, तिथि : 5 जुलाई 2018

578. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या : 1584, तिथि : 9 जुलाई 2018

579. केकरो कियो ने- शब्द संख्या : 718, तिथि : 11 जुलाई 2018

580. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या : 1420, तिथि : 13 जुलाई 2018

581. उदय-प्रलय- शब्द संख्या : 1574, तिथि : 15 जुलाई 2018

582. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या : 1458, तिथि : 19 जुलाई 2018

583. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या : 1471, तिथि : 21 जुलाई 2018

584. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या : 2576, तिथि : 31 जुलाई 2018

585. करतब- शब्द संख्या : 2132, तिथि : 04 अगस्त 2018

586. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या : 924, तिथि : 19 सितम्बर 2018

587. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या : 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

588. चटवाह : शब्द संख्या- 2134, तिथि : 4 अक्टुबर 2018

589. भगैतिया- शब्द संख्या : 2177, तिथि : 8 अक्टुबर 2018

590. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या : 2196, तिथि : 12 अक्टुबर 2018

591. यादास्त- शब्द संख्या : 1870, तिथि : 15 अक्टुबर 2018

592. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 19 अक्टुबर 2018

593. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या : 1922, तिथि : 23 अक्टुबर 2018

594. दिवालीक दीप- शब्द संख्या : 2422, तिथि : 29 अक्टुबर 2018

595. हारि केना मानब- शब्द संख्या : 2054, तिथि : 02 नवम्बर 2018

596. अप्पन गाम- शब्द संख्या : 1940, तिथि : 06 नवम्बर 2018

597. परिछन- शब्द संख्या : 2661, तिथि : 11 नवम्बर 2018

598. झूठ सपना- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 15 नवम्बर 2018

599. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या : 2530, तिथि : 19 नवम्बर 2018

600. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या : 2381, तिथि : 24 नवम्बर 2018

601. पुस्तकालय- शब्द संख्या : 2333, तिथि : 29 नवम्बर 2018

602. विचारभेद- शब्द संख्या : 2553, तिथि : 04 दिसम्बर 2018

603. एकरवा बानर- शब्द संख्या : 2793, तिथि : 09 दिसम्बर 2018

604. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या : 2759, तिथि : 14 दिसम्बर 2018

605. रंगमे भंग- शब्द संख्या : 2237, तिथि : 20 दिसम्बर 2018

606. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या : 2590, तिथि : 17 जनवरी 2019

607. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

608 मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या : 3473, तिथि : 03 फरवरी 2019

609. फुइसिक रगगड़- शब्द संख्या : 2225, तिथि : 07 फरवरी 2019

610. उखमज- शब्द संख्या : 3964, तिथि : 16 फरवरी 2019

611. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या : 2286, तिथि : 19 फरवरी 2019

612. अगुताइ भेल : शब्द संख्या : 1054, तिथि : 22 फरवरी 2019

613. थैंक्यू पापा : शब्द संख्या : 965, तिथि : 24 फरवरी 2019

614. किसुनपुराक हाट : शब्द संख्या : 995, तिथि : 25 फरवरी 2019

615. धनखेतीक बैगन : शब्द संख्या : 1051, तिथि : 28 फरवरी 2019

616. चितवनक शिकार : शब्द संख्या : 1071, तिथि : 02 मार्च 2019

617. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं : शब्द संख्या : 1086 , तिथि : 04 मार्च 2019

618. धुआ साड़ी : शब्द संख्या : 1132, तिथि : 06 मार्च 2019

619. राजरोग : शब्द संख्या : 1274, तिथि : 10 मार्च 2019

620. संकल्प : शब्द संख्या : 1520, तिथि : 12 मार्च 2019

621. एकटा नमहर दुख मेटा गेल : शब्द संख्या : 1349 , तिथि : 15 मार्च 2019

622. काजक मोल : शब्द संख्या : 1090, तिथि : 16 मार्च 2019

623. एतए बसव कठिन अछि : शब्द संख्या : 1010, तिथि : 19 मार्च 2019

624. स्वनिर्मित जिनगी : शब्द संख्या : 1091, तिथि : 22 मार्च 2019

625. कपटलालक मृत्यु : शब्द संख्या : 987, तिथि : 25 मार्च 2019

626. गामक ढहल समाज : शब्द संख्या : 966, तिथि : 27 मार्च 2019

627. लजगर लोक : शब्द संख्या : 1003, तिथि : 29 मार्च 2019

628. खरिहाँन उपैट गेल : शब्द संख्या : 1218, तिथि : 02 अप्रैल 2019

629. पगलपन : शब्द संख्या : 1113, तिथि : 04 अप्रैल 2019

630. छलाननक सराध : शब्द संख्या : 996, तिथि : 06 अप्रैल 2019

631. छाती बज्जर केलौं : शब्द संख्या : 1402 , तिथि : 08 अप्रैल 2019

632. नाँहकमे दोख : शब्द संख्या : 1463, तिथि : 16 अप्रैल 2019

633. सग्गा पिऔज : शब्द संख्या : 1530, तिथि : 20 अप्रैल 2019

634. गाछसँ नमहर फड़ : शब्द संख्या : 1003, तिथि : 22 अप्रैल 2019

635. जिनगीमे जान आएल : शब्द संख्या : 1198, तिथि : 25 अप्रैल 2019

636. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै : श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

637. चौरस खेतक चौरस उपज : शब्द संख्या : 998, तिथि : 29 अप्रैल 2019

638. सिकिया नेता : शब्द संख्या : 1023, तिथि : मजदूर दि वस, 2019

639. मुँह खुजिते नाक कटि गेल : शब्द संख्या : 1475, तिथि : 04 मई 2019

640. जेकरे भर तेकरे डर : शब्द संख्या : 1214, तिथि : 06 मई 2019

641. ललियाएल चेहरा करियाएल मन : शब्द संख्या : 1194, तिथि : 09 मई 2019

642. पुरुखक भर : शब्द संख्या : 1109, तिथि : 12 मई 2019

643. भकमोड़मे पड़ि गेलौं : शब्द संख्या : 1411 , तिथि : 15 मई 2019

644. अपन इमान मरि गेल : शब्द संख्या : 1071, तिथि : 17 मई 2019

645. गामक रूप बदैल देब : शब्द संख्या : 1004, तिथि : 19 मई 2019

646. कुभेला : शब्द संख्या : 992, तिथि : 21 मई 2019

647. देखौंस : शब्द संख्या : 945 , तिथि : 23 मई 2019

648. समयसँ पहिने चेत किसान : शब्द संख्या : 1326, तिथि : 25 मई 2019

649. काजक मेहपन : शब्द संख्या : 947, तिथि : 27 मई 2019

650. पनरह किलोक कदीमा : शब्द संख्या : 941, तिथि : 29 मई 2019

651. फेर नढ़रो बेल तर जेती : शब्द संख्या : 1553, तिथि : 01 जून 2019

652. काजक धुनि : शब्द संख्या : 1065, तिथि : 03 जून 2019

653 सोरहामे सुर्रा लगि गेल : शब्द संख्या : 1618, तिथि : 06 जून 2019

654. अगराही : शब्द संख्या : 944, तिथि : 08 जून 2019

655. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा : श.सं.: 1556, तिथि : 11 जून 2019

656. भौक- शब्द संख्या : 1403, तिथि : 14 जून 2019

657. मनतरक पावर- शब्द संख्या : 1598, तिथि : 17 जून 2019

658. हाल-चाल- शब्द संख्या : 1519, तिथि : 20 जून 2019

659. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या : 1525, तिथि : 23 जून 2019

660. के मानत?- शब्द संख्या : 1721, तिथि : 29 जून 2019

661. दियादीक फेड़- शब्द संख्या : 1412, तिथि : 03 जुलाई 2019

662. वाह रे आदत- शब्द संख्या : 1455, तिथि : 06 जुलाई 2019

663. कटबी सुइद- शब्द संख्या : 1435, तिथि : 09 जुलाई 2019

664. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या : 1948, तिथि : 13 जुलाई 2019

665. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या : 1539, तिथि : 16 जुलाई 2019

666. कलेश- शब्द संख्या : 1509, तिथि : 20 जुलाई 2019

667. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या : 2338, तिथि : 24 जुलाई 2019

668. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या : 2046, तिथि : 28 जुलाई 2019

669. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या : 1856, तिथि : 31 जुलाई 2019

670. भेँट-घाँट- शब्द संख्या : 1884, तिथि : 03 अगस्त 2019

671. कोसा- शब्द संख्या : 1999, तिथि : 07 अगस्त 2019

672. दहेजक गाए- शब्द संख्या : 2076, तिथि : 15 अगस्त 2019

673. चलती- शब्द संख्या : 1770, तिथि : 18 अगस्त 2019

674. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या : 1901, तिथि : 21 अगस्त 2019

675. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या : 2198, तिथि : 24 अगस्त 2019

676. अपन करखन्ना- शब्द संख्या : 1704, तिथि : 28 अगस्त 2019

677. लड़कपन- शब्द संख्या : 2150, तिथि : 03 अक्टुबर 2019

678. कुदृष्टि- शब्द संख्या : 2435, तिथि : 08 अक्टुबर 2019

679. हकार- शब्द संख्या : 2012, तिथि : 16 अक्टुबर 2019

680. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या : 2286, तिथि : 25 अक्टुबर 2019

681. दोहरी दहार- शब्द संख्या : 2154, तिथि : 02 नवम्बर 2019

682. पसेनाक मोल- शब्द संख्या : 1748, तिथि : 06 नवम्बर 2019

683. बुढ़ापा- शब्द संख्या : 2122, तिथि : 10 नवम्बर 2019

684. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या : 2092, तिथि : 14 नवम्बर 2019

685. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या : 2416, तिथि : 18 नवम्बर 2019

686. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 22 नवम्बर 2019

687. काजक रोप- शब्द संख्या : 2679, तिथि : 21 दिसम्बर 2019

688. खटसमाद- शब्द संख्या : 2909, तिथि : 27 दिसम्बर 2019

[1] प्रमुखता
[2] क्लास चलब
[3] गहुमन साँप
[4] भुसीबला घर
[5] एकहरी
[6] उनैर कऽ बहब
[7] थड़
[8] सृष्टि
[9] निकास
[10] दरबज्जाक आगूक जगह
[11] अगते, शुरूहेमे
[12] धानक बीआ
[13] नमीक
[14] बाढ़िक पानि
[15] लकड़ीक बनल
[16] उपयोगे
[17] सोल्होअना भार, अपना ऊपर
[18] खेत-पथार
[19] पानिसँ क्षति होइबला
[20] चौबगलीक सभ गाम
[21] भौगोलिक दृष्टिसँ
[22] संग-संग खिचैत
[23] घरक काज
[24] घरमे रहनिहारक
[25] जुलूसमे गेनिहारक
[26] जड़मे भूसी छल
[27] प्रश्ने
[28] गाम-समाजक लोक
[29] धान रोपैक प्रक्रियाकेँ
[30] जीतनक माए
[31] मेंहथ गामक
[32] विजेता
[33] जन्म लइक
[34] श्रम शक्ति
[35] जिनगीसँ हारि मानब
[36] बरसाती बैगनक कम्पोजित, जे बरसातसँ जाड़ धरि फड़ैए